CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वाराणसीय आनन्दभाष्यकार जगद्गुरु श्री रामानन्दाचार्यपीठाचार्य

जगद्गुरु श्री रामानन्दाचार्य-रामप्रपन्नाचार्य

योगीन्द्र प्रवर्तित विश्राम द्वारकास्थ श्री [illegible]मठ संचालित।

ज.गु. श्री रामानन्दाचार्य-पीठ

सचित्र धार्मिक मासिक

कार्यालय 卐 आचार्यपीठ श्री कोशलेन्द्रमठ सरखेजरोड
पो० पालडी अहमदाबाद ३८०००७
दूरभाष- [illegible]
संरक्षक 卐 शेठ श्री अमरजी कुरजी मजिठिया
सम्पादक 卐 जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्यजी
सहसम्पादक 卐 पं. श्री शरच्चन्द्र शास्त्री
व्यवस्थापक 卐 म. म. स्वामी रामावतारदासजी [illegible]
प्रकाशक 卐 स्वामी सुन्दररामाचार्यजी

[illegible] यात

[illegible] तान दीपिकायुतम [illegible] समित्पाणिः
श्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठ तस्मै [illegible] सम्यक् प्रशान्त

श्रीजानकीजी के प्रीत [illegible] ल्प [illegible] को नमस्कार कर वेद संमत श्रीराममन्त्र का व्याख्यान में (श्रीरामतापनीयोपनिषद् में आत्विक हरिदासीयभाष्यकार हरिदास) करता हूं ॥१॥ लोक में प्रशान्त यानी अत्यन्त निगृहीत चित्त और वेद के [illegible] ब्राह्मण हैं उनको सर्वेश्वर परब्रह्म [illegible] के लिये इस श्रीराममन्त्रार्थ का प्रदर्शन किया [illegible]

卐 ब्रह्मतत्त्वज्ञानाय मू. को.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

५ वीं पुण्य स्मृति

यः श्रीरामपदारविन्दयुगलं ध्याता महाशास्त्रवित्
योगीन्द्रश्च पयः फलाशनपरस्त्यागीपरिव्राजकः ।
छात्राणां परिपालको गुणनिधिः पीठस्य संस्थापकः
स श्रीदर्शनकेशरी विजयते रामप्रपन्नः सुधीः ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

श्रीरामपरब्रह्मणे नमः

षडक्षर श्रीराममहामन्त्रभाष्यम्

[श्रीरामतापनीयोपनिषद्भाष्यान्तर्गतश्रीरामषडक्षर
मन्त्रार्थप्रदर्शनपरकभाष्यम्]

मङ्गलश्लोकौ

श्रीरामाख्यं परंब्रह्म नत्वा श्रीजानकीधवम् ।
रामममन्त्रस्य व्याख्यानं करोमि श्रुतिसंमतम् ॥१॥
ये सन्ति ब्राह्मणा लोके प्रशान्ता वेदपारगाः ।
तेषां ब्रह्मावबोधाय मन्त्रार्थोऽयं प्रदर्श्यते ॥२॥

प्रस्थानत्रयानन्दभाष्यकाराय नमोनमः
आनन्दभाष्यसिंहासनासीन
जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्यश्रीरामेश्वरानन्दाचार्य
प्रणीतातिसंक्षिप्रदीपिका

सीतारामसमारम्भां रामानन्दार्यमध्यमाम्
रामप्रपन्नगुर्वन्तां वन्दे गुरुपरम्पराम्

'परीक्ष्य लोकान् कर्मचितान् ब्राह्मणो नि[illegible]यात् नास्त्यकृतेन तद्विज्ञानार्थं स गुरुमेवाभिगच्छेत् समित्पाणिः श्रोत्रियं ब्रह्मनिष्ठं तस्मै स विद्वानुपसन्नाय सम्यक् प्रशान्त[illegible]

श्रीजानकीजी के पति श्रीरामरूप परब्रह्म को नमस्कार कर वेद संमत श्रीराममन्त्र का व्याख्यान में (श्रीरामतापनीयोपनि[illegible]द् [illegible] आस्तिक हरिदासीयभाष्यकार हरिदास) करता हूं [illegible]॥ [illegible]क में प्रशान्त यानी अत्यन्त निगृहीत चित्त [illegible] के [illegible]रग [illegible] ब्राह्मण हैं उनको सर्वेश्वर परब्रह्म [illegible] के लिये इस श्रीराममन्त्रार्थ का प्रदर्शन किया [illegible]

[illegible] ब्रह्मतत्त्वज्ञानाय मू. को.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

चित्ताय शमान्विताय येनाक्षरं पुरुषं वेद सत्यं प्रोवाच तां तत्त्वतो ब्रह्मविद्याम्' इति श्रुतिः ।

अस्या अर्थः—

'परीक्ष्य'–प्रत्यक्षानुमानागमैरनित्यतया परीक्ष्य-ज्ञात्वा सर्वतो याथात्म्येनावधार्य लोकान्–संसारगतिभूतान् अव्यक्ताद्यान् स्थावरान्तान् कर्मचितान्–धर्माधर्मनिर्मितान् ब्राह्मणः–ब्रह्मबुभुत्सुः निर्वेदम्–वैराग्यम् आयात्–गच्छेत् कुर्यादित्यर्थः । कथम् ? इह संसारे नास्ति कश्चिदपि अकृतः पदार्थः सर्व एव हि लोकाः कर्मचिताः–कर्मकृतत्वाच्चानित्याः न नित्यं कश्चिदस्तीत्यभिप्रायः, किं कृतेन कर्मणा । यद् बहुलेन अनर्थसाधनेन ! इत्येवं निर्विण्णः,

इस श्रुति का अर्थ है कि—

'परीक्ष्य' प्रत्यक्षज्ञान अनुमान और आगमों से अव्यक्त से लेकर स्थावरपर्यन्त लोकों को यानी संसारगतिभूतों को अनित्य अस्थाई रूप से अच्छी तरह निश्चित कर कर्मचित यानी धर्म और अधर्म से रचित युक्त इस संसार को अनुभव कर तत्त्व ज्ञानेच्छु ब्राह्मण इन कर्मों से वैराग्य युक्त हो कर कैसे ! इस संसार में कोई पदार्थ नित्य नहीं है, तब बहुत अनर्थ कारी कर्म से क्या ? इसप्रकार विरक्त हो कर ब्राह्मण अकृत यानी नित्य अक्षर अक्षर पुरुष श्रीराम तत्त्व जो है उसको विशेष रूप से जानने के लिये गुरु यानी शमदमादि सम्पन्न आचार्य के पास वह विरक्त ब्राह्मण जावे, शास्त्रज्ञ भी हो तो भी खाली हाथ से ब्रह्मज्ञान को अन्वेषण नहीं करें, किन्तु समित्पाणि लकडी के

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अकृतम्–नित्यमभयं यदक्षरं पुरुषम् तद्विज्ञानार्थम्–विशेषेणाधिगमार्थम् सः–निर्विण्णो ब्राह्मणो गुरुम्–आचार्यम् शमदमादिसम्पन्नम्, अभिगच्छेत् शास्त्रज्ञोऽपि स्वातन्त्र्येण ब्रह्मज्ञानान्वेषणां न कुर्यादित्यर्थः। समित्पाणिः–गृहीत समिद्भारहस्तः ❀ श्रोत्रियम्–अध्ययनश्रुतार्थसंपन्नम, ब्रह्मनिष्ठम् सर्वान् कर्मादीन् हित्वा केवले ब्रह्मणि श्रीरामेनिष्ठा यस्य स ब्रह्मनिष्ठः। अथवा निर्वेदम्–वैराग्यम् आयात् गच्छेत, कथम्! नास्त्यकृतो मोक्षः कृतेत कर्मणा, अहं तु मोक्षलक्षणनित्यफलार्थी, तस्मात् किं कर्मणाऽनित्यफलेनेति विरक्तः सन् तद्विज्ञानार्थम्–तस्य मोक्षपदार्थस्य ब्रह्मणोऽक्षरस्य विशेषेण ज्ञानार्थम् स निर्विण्णो ब्राह्मणोगुरुमेवाभिगच्छेत् 'रिक्तहस्तस्तु नोपेयाद् राजानं देवतां गुरुमि'–त्यादिना रिक्तहस्तगमनस्य

गांठले चुनने वाले हाथ वाला हो यानी समिधालेकर श्रोत्रीय यानी अध्ययन श्रुतार्थ सम्पन्न और ब्रह्मनिष्ठ यानी सब शास्त्रीय कर्मादि युक्त होकर केवल ब्रह्म में निष्ठा रखने वाले गुरु के पास जावे।

अथवा निर्वेद अर्थात् वैराग्य प्राप्त करे। कैसे?–कृत से यानी क्षयशील अस्थाईकर्म से अकृत अर्थात स्थाई सायुज्य मुक्ति की प्राप्ति नहीं होती है। मैं तो मोक्षरूप नित्य फलेच्छु हूं, अतः अनित्य फल वाले कर्म से क्या? इसप्रकार से विरक्त होकर उस नित्य मोक्षपदार्थ अविनाशि ब्रह्म के ज्ञानार्थ वह विरक्त ब्राह्मण यथोक्त लक्षण गुरु के पास गमन करे। खाली हाथ से राजा देव और गुरु के पास नहीं जावे, इत्यादि वचन से राजादि के पास रिक्तहस्त का गमन निषिद्ध होने से 'समित्पाणि' यह कहा। कैसे गुरु? तो श्रोत्रिय और ब्रह्मनिष्ठ हो, प्रकृत मन्त्र में

❀ समिद्भारगृहीतहस्त इति मू. को.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

निषिद्धत्वात् 'समित्पाणिरि'-त्युक्तम्, किं लक्षणं गुरुम् ? श्रोत्रियं ब्रह्मनिष्ठं च, तत्र श्रोत्रियमित्यनेनाध्ययनहीनस्य गुरुत्वं वार्यते, ब्रह्मनिष्ठमित्यनेन श्रोत्रियस्यापि कर्मिणो गुरुत्वं वार्यते, कर्मनिन्दया ततो विरक्तस्य ब्रह्मविद्याधिकारोक्तेः, तमेवं गुरुं विधिवदुपपन्नः प्रसाद्य पृच्छेत् अक्षरं पुरुषं सत्यं स विद्वान् गुरुः तस्मै-उपसन्नाय-उपगताय सम्यक्-यथाशास्त्रम्, प्रशान्तचित्ताय-उपरतरागादिदोषाय शमान्विताय बाह्येद्रियोपरमेण युक्ताय, सर्वतो विरक्तायेत्यर्थः, येन-(यथा) विज्ञानेन यथा परया विद्यया अक्षरम्-अविनाशिनं सत्यम् पुरुषं वेद-विजानाति ताम् ब्रह्मविद्याम् अक्षर-

श्रोत्रिय विशेषण होने से वेदाध्ययन रहित का गुरुत्व निषिद्ध होता है। ब्रह्मनिष्ठ इससे श्रोत्रिय को भी जस्थाई साकांक्ष कर्मवान् हो तो उसका गुरुत्व निषिद्ध किया जाता है कर्म की निन्दा से उस कर्म से विरक्त को ब्रह्मविद्याऽधिकार का वचन होने से सायुज्य मुक्ति के अभिलाशी को ऐसे गुरु के पास विधिपूर्वक जा कर गुरु को प्रसन्न कर अक्षर सत्य पुरुष के विषय में पूछे वे विद्वान् गुरु के पास में जाए (शिष्य को) प्रशान्तचित्त यानी रागादि दोष रहित समान्वित यानी अन्तरिन्द्रिय के उपरमण से युक्त अर्थात् सब से विरक्त शिष्य को जिस विज्ञानमय पर विद्या से अविनाशी सत्य जाने वह ब्रह्मविद्या, अक्षर विद्या ही ब्रह्मविद्या है उसे यथावत कहे, इस अर्थ की यह श्रुति है। 'श्रोत्रियं ब्रह्मनिष्ठम्' श्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठ गुरु को परब्रह्म विद्यावान् कहती है और उन गुरु के शिष्य को भी अभिन्न के समान कहती है। 'ब्रह्मविद् ब्रह्मैव भवति' ब्रह्म को जानने वाला ब्रह्म

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विद्यैव ब्रह्मविद्या तां तत्त्वतो यथावत्, प्रोवाच–प्रब्रूयादित्यर्थिकेयं श्रुतिरित्यर्थः । श्रोत्रियं ब्रह्मनिष्ठमितीयं श्रुतिः श्रोत्रियं ब्रह्मनिष्ठं गुरुं परब्रह्मविद्यावन्तं वदति तच्छिष्यञ्च नान्यम् 'ब्रह्मविद् ब्रह्मैव भवतीति । 'यदा सर्वे प्रमुच्यन्ते कामा येऽस्य हृदिस्थिताः । अथ मर्त्योऽमृतो भवत्यत्र ब्रह्म समश्नुते' इत्येवमाद्याः श्रुतयः ब्रह्मविदः सर्वकामरहितस्य ब्रह्मप्राप्तिं वदन्ति । नचावेदज्ञस्य ब्रह्मज्ञानं भवतीति 'नावेद विन्मनुते तं बृहन्तम्' इत्येषा वदति । न ब्रह्मज्ञानं विना मुक्तिर्भवतीति 'ऋते ज्ञानान्न मुक्तिः' इत्येषा श्रुतिर्वदति । न ब्रह्मापरोक्षज्ञानं विना सर्वसंशयसर्वकामनाराहित्यपूर्वकं ब्रह्मप्राप्तिर्भवतीति । 'भिद्यते हृदयग्रन्थिश्छिद्यन्ते सर्वसंशयाः ।

के समान ही हो जाता है, श्रीतुलसीदासजी ने भी कहा है कि 'जानत तुमही तुमहि होइजाई' 'जब जिज्ञासु के हृदय में रहने वाले जो काम है वे नष्ट हो जाते हैं, उसके बाद मनुष्य अमृत यानी अमर हो जाता है. इस अवस्था में ब्रह्मको प्राप्त करता है, इत्यादि श्रुतियां ब्रह्मवित् को अर्थात साधक को सब कामनाओं से रहित होने पर ब्रह्म प्राप्ति कहती हैं । वेदज्ञान रहित को ब्रह्मज्ञान नहीं होता है' यह 'ना वेदविन्मनुते तं बृहन्तम्' अवेदवित् उस व्यापक को नहीं जानता है' यह श्रुति कहती है, ब्रह्मज्ञान के विना मुक्ति नहीं होती है यह 'ऋते ज्ञानान्न मुक्तिः' ज्ञान के विना मुक्ति नहीं होती है, यह श्रुति कहती है, ब्रह्म ज्ञान के विना इसका अर्थ है कि–ब्रह्म का अपरोक्षज्ञान के विना । सब संशय और सब कामनाओं से रहित पना पहले हो जाने पर ब्रह्म प्राप्ति होती है ऐसा अर्थ है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

क्षीयन्ते चास्य कर्माणि तस्मिन् दृष्टे परावरे ॥ यदा सर्वे प्रमुच्यन्ते कामा' इत्येवमाद्याः श्रुतयो वदन्ति । तस्माद् वेदार्थविचारेण स्वस्वरूपादि परोक्षज्ञानिनो ब्रह्मनिष्ठया तदपरोक्षज्ञानेन सर्वसंशयसर्वकामनाराहित्यपूर्वकं ब्रह्मप्राप्तिर्भवतीति सर्वश्रुतिनां तात्पर्योऽवगम्यते ॥३॥

तत्र यथा श्रोत्रियस्य वेदार्थविचारजातस्वरूपपरस्वरूप ज्ञानकारितया ब्रह्मनिष्ठया सर्वकामनाराहित्यपूर्वकजाततद-परोक्षज्ञानेन श्रोत्रियब्रह्मनिष्ठस्य ब्रह्मप्राप्तिर्भवति, यथा च प्रशान्तचित्तस्य तच्छिष्यस्य तदुपदिष्ट स्वस्वरूप परस्वरूप-ज्ञानात्मक ब्रह्मविद्याकारित ब्रह्मनिष्ठया सर्ववासना विनाश

उसका हृदय ग्रन्थि भिन्न हो जाता है और सब संशय दूर हो जाते हैं एवं उसके सब कर्म क्षीण हो जाते हैं, जब पर से भी पर तत्त्व श्रीराम का ज्ञान हो जाता है। 'जब इसके सब काम दूर हो जाते' इत्यादि श्रुतियां कहती हैं। अतः वेदार्थ के विचार से स्वस्वरूपादि परोक्ष ज्ञानी को ब्रह्मनिष्ठा द्वारा ब्रह्मके अपरोक्षज्ञान से सब संशय और सब कामनाएं दूर हो जाने पर श्रीरामरूप ब्रह्मकी प्राप्ति होती है यह सब श्रुतियों का तात्पर्य पूर्वापर अनुसन्धान से जाना जाता है ॥३॥

प्रकृत में जैसे श्रोत्रिय को वेदों के अर्थ के विचार से उत्पन्न स्वस्वरूप परस्वरूप तत्त्व के ज्ञान से उत्पादित ब्रह्मनिष्ठा द्वारा सर्वकामना रहितत्व पुरस्सर उत्पन्न ब्रह्म के अपरोक्षज्ञान से श्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठ को ब्रह्म की प्राप्ति होती है, और जैसे प्रशान्त चित्त वाले श्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठ के शिष्य को उनसे उपदिष्ट (बताई हुई) स्वस्वरूप परस्वरूप तत्त्वरूप ज्ञान लक्षण ब्रह्म विद्या से

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri Funding: MIDF

पूर्वक जाततदपरोक्षज्ञानेन ब्रह्मप्राप्तिर्भवति, तथैव षडक्षरतारकमन्त्रार्थविचारजात स्वस्वरूपपरस्वरूपज्ञानकारितया ब्रह्मनिष्ठया सर्वकामनाविनाशपूर्वकजाततदपरोक्षज्ञानेन मन्त्रार्थ विचारतत्परस्यापि श्रीरामाख्य ब्रह्मप्राप्तिर्निष्पद्यते, इत्यतो मन्त्रार्थविचारतत्परैर्भवितव्यं मुमुक्षुभिर्वेदार्थविचारासमर्थैः ४।

ननु 'नावेदविन्मनुते तं बृहन्तमि' ति श्रुतिर्वेदार्थ ज्ञानरहितस्य ब्रह्मज्ञानाभावं वदति, तद्विरोधेन मन्त्रार्थविचार परस्य न ब्रह्मज्ञानं समुत्पद्यतेऽतो न तस्य ब्रह्मप्राप्तिरुप पद्यते, इति चेदुच्यते—अत्र वेदार्थविचारजातं स्वस्वरूपादिज्ञानं ब्रह्मप्राप्तेर्मूलमुक्तम्, सर्वेषां वेदानां तु कारणमोंकार इति 'ओमित्येतदक्षरं सर्वमि' त्येवमाद्याः श्रुतयो वदन्ति।

उत्पादित ब्रह्मनिष्ठा द्वारा सर्ववासना विनाश पुरस्सर उत्पन्न ब्रह्म के अपरोक्ष ज्ञान से ब्रह्म की प्राप्ति होती है, वैसे ही श्रीरामजी के षडक्षर तारक मन्त्र के अर्थ के विचार से उत्पन्न स्वस्वरूप परस्वरूप तत्त्वरूप ज्ञान से उत्पादित ब्रह्मनिष्ठा द्वारा सर्वकामना विनाश पुरस्सर उत्पन्न ब्रह्म के अपरोक्ष ज्ञान से षडक्षर मन्त्रराज के अर्थ के विचार में तत्पर को भी श्रीरामरूप ब्रह्म की प्राप्ति सिद्ध होती है, इस कारण से वेदार्थ विचार में असमर्थ मुमुक्षुओं को श्रीरामजी के षडक्षर मन्त्र के अर्थ के विचार में तत्पर होना चाहिये ॥४॥

यहां जिज्ञासा होती है कि—'वेदों को नहीं जानने वाला व्यापक उस ब्रह्म को नहीं जानता है' इस अर्थ की श्रुति वेदार्थ ज्ञान रहित को ब्रह्म ज्ञान का अभाव कहती है, इस वचन के विरोध से श्रीराम षडक्षर मन्त्र के विचार में तत्पर को ब्रह्मज्ञान

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ततश्च सर्ववेदकारणस्य प्रणवस्यार्थविज्ञानेन तत्कार्यभूतानां सर्वेषां वेदानामर्थो विज्ञातो भवति, इति कारणविज्ञानकृत कार्यविज्ञानवादिनीभिः 'यथा सौम्यैकेन मृत्पिण्डविज्ञानेन सर्वमृन्मयं विज्ञातं भवती' त्येवमादिभिः श्रुतिभिरवगम्यते, तस्यापि प्रणवस्य कारणं तारकं षडक्षरं भवतीति 'इत्योमिती' ति श्रुतिर्वदति, तथाहि—श्रीतापनीयोपनिषदि 'किं तारकं ? किं तरती'-ति भारद्वाजेन पृष्टो याज्ञवल्क्य आह-'तारकं दीर्घानलं विन्दुपूर्वकम्, पुनः 'दीर्घानलं माय नमः' इति षडक्षर तारकस्य स्वरूपमुक्त्वा पुनस्तस्य 'ब्रह्मात्मकाः सच्चिदा-

उत्पन्न नहीं होता है, इस कारण से उसको ब्रह्म प्राप्ति सिद्ध नहीं होती है, यह यदि कहा जाता है तो, इसका समाधान कहते हैं यहाँ वेदार्थ के विचार से उत्पन्न स्वस्वरूपादि का ज्ञान ब्रह्मकी प्राप्ति का मूल कारण कहा गया है, सब वेदों का कारण ओंकार है, यह 'ओमित्येतदक्षरं सर्वम्' 'ओम' यह अक्षर ही सब कुछ है, इत्यादि श्रुतियां कहती हैं, तब सब वेदों के कारण प्रणव के अर्थ के विज्ञान से उसके कार्यभूत सब वेदों का अर्थ विज्ञात होता है, यह कारण विज्ञान से उत्पादित कार्य विज्ञान की प्रतिपादिनी 'हे सौम्य जैसे एक मृत्पिण्ड के विज्ञान द्वारा सब मृन्मय विज्ञात होता है' इस अर्थ की 'यथा सौम्यैकेन मृत्पिण्ड विज्ञानेन सर्वमृन्मयं विज्ञातं भवति' इत्यादि श्रुतियों से ज्ञात होता है। उस प्रणव का भी कारण श्रीरामजी का तारक षडक्षर मन्त्र है, यह 'यह षडक्षर ओं रूप से परिणत है' इस अर्थ की 'इत्योमिति' यह श्रुति कहती है। ऐसा ही श्रीरामतापनीयोपनिषत् मे है कि 'तारक क्या है ? क्या तरता है ? इसप्रकार श्रीभरद्वाजजी से पूछे गये श्रीयाज्ञवल्क्यजी ने कहा कि—तारक विन्दु पूर्वक दीर्घ अनल यानी अग्नि अर्थात् 'रां' फिर दीर्घ अनल अर्थात् 'रा'

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

नन्दाख्या इत्युपासितव्यम्' इति, ब्रह्मात्मकत्वेनोपासनं विहितम् 'ब्रह्मात्मका' इत्यनेन ।

अत्रापि ननु कथं जडानां तारकाक्षराणां सच्चिदानन्दब्रह्मात्मकत्वमुपपद्यते ! इत्याशङ्कयाह – 'सच्चिदानन्दाख्या' इति । नेमे षडक्षरवर्णा जडस्वरूपाः किन्तु सच्चिदानन्दाख्याः–सच्चिदानन्दसंज्ञकाः–सच्चिदानन्दपदवाच्याः सच्चिदानन्दस्वरूपा इत्यर्थः । 'स्वभूज्योतिर्मयोऽनन्त रूपित्वेनैव भासते । जीवत्वेनेदमो यस्य सृष्टिस्थितिलयस्य च ॥ कारणत्वेन चिच्छक्त्या रजः सत्त्वतमोगुणैः ।' इति

उससे युक्त 'माय नमः' सब मिलकर 'रां रामाय नमः' यह षडक्षर तारक का स्वरूप कह कर फिर उसका 'ब्रह्मात्मक सच्चिदानन्दाख्य छ वर्ण हैं,–इस हेतु से उपासन के योग्य है' यह 'ब्रह्मात्मक छ वर्ण है, इससे ब्रह्मरूपपना से उपासन विहित हुआ ।

यहाँ भी जिज्ञासा होती है कि–जड़ तारक श्रीराम मन्त्र के अक्षरों का सच्चिदानन्दरूपपना कैसे सिद्ध हो सकता है ? ऐसी शंका कर कहा है कि–'सच्चिदानन्दाख्याः' ये छ अक्षर षडक्षर मन्त्र के वर्ण जडरूप नहीं है, किन्तु सच्चिदानन्दाख्य, यानी सच्चिदानन्द संज्ञक हैं, अर्थात सच्चिदानन्द इस पद के वाच्य यानी अर्थ हैं । स्वयं प्रगट होने वाला अनन्तरूपी पना से ही भासमान होता है और जीव पना से ज्योतिर्मय भासता है और जिसका ॐ यह कार्य है. वह चिच्छक्ति के यानी प्रकृति के रजोगुण सत्त्वगुण और तमोगुणों से क्रम से जगत् के सृष्टि–स्थिति तथा लय के कारणपना से भासता है' इस श्रीरामपूर्वतापनीय श्रुति से सिद्ध है कि तारक श्रीराम महामन्त्र के अक्षर समुदाय जड नहीं सत् चित एवं आनन्दात्मक हैं । इसप्रकार तारक स्वरूप का कह कर वाद में उससे प्रणव की उत्पत्ति श्रीयाज्ञवल्क्य ने

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पूर्वतापनीयश्रुतेश्च। एवं तारकस्वरूपमुक्त्वाऽनन्तरं तस्मात् प्रणवोत्पत्तिमाह–'इत्योमिति' तदर्थस्तु–इत्युक्तप्रकारकं षडक्षरं तारकमोमित्योंकारो भवति-ॐ रूपमापद्यते नह्येतस्मादोंकारोऽन्यः, ॐ कारादेतदन्यदित्यर्थः ॥५॥

ननु कथं त्रिवर्णात्मकस्य प्रणवस्य षड्वर्णात्मककार्यत्वमुपपद्यते ? इत्याशङ्क्योंकारस्य षड्वर्णात्मकत्वमुक्तवान् अकारः प्रथमाक्षरो भवति, उकारोद्वितीयाक्षरो भवति, मकारस्तृतीयाक्षरो भवति, अर्धमात्रा चतुर्थाक्षरो भवति, विन्दुः पञ्चमाक्षरो भवति, नादः षष्ठाक्षरो भवति, तारकत्वात् तारको भवति, तदेवं सर्ववेदकारण प्रणवकारणस्य षडक्षर तारकस्यार्थस्य विज्ञानेन प्रणवतत्कार्यभूतसर्ववेदार्थविज्ञानोपपत्त्या मन्त्रार्थज्ञानवतः सर्ववेदवित्त्वनिष्पत्तेर्न 'नावेद-

कही कि–'इत्योमिति' उसका अर्थ तो इस कहे हुए प्रणव का उत्पादक षडक्षर तारक ही ॐ ऐसा ॐ कार होता है अर्थात् ॐ रूप प्राप्त करता है, इस तारक से भिन्न ॐ कार नहीं है किन्तु ॐ कार से यह तारक कारणपना से भिन्न है ॥५॥

यहां पर भी जिज्ञासा होती है कि तीन वर्ण वाले प्रणव को छ वर्ण वाले षडक्षर रूप तारक मन्त्र का कार्यत्व कैसे सिद्ध हो सकता है ? ऐसी शंका कर ॐ कार को षड्वर्णात्मक कहा है जैसे अकार प्रथम वर्ण है, उकार दूसरा वर्ण है, मकार तीसरा वर्ण है, अर्ध मात्रा चौथा वर्ण है, विन्दु पांचवां वर्ण है, नाद षष्ठ वर्ण है, तारकपना से तारक है. वह इसप्रकार से सब वेदों के कारण के कारण श्रीरामषडक्षर तारक मन्त्र के वर्णों के विज्ञान से प्रणव और उसके कार्यभूत सब वेदों के अर्थ के विज्ञान की सिद्धि से मन्त्रार्थ ज्ञान वाले को सब वेदों के अर्थ

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विन्मनुते तं बृहन्तमि'-ति श्रुतेर्विरोधो मन्त्रार्थज्ञानवतो ब्रह्मज्ञानवत्वे उपपद्यते ॥६॥

किञ्च-

'यथैव वटबीजस्थः प्राकृतश्च महाद्रुमः ।
तथैव रामबीजस्थं जगदेतच्चराचरम् ॥
रेफारूढाः मूर्तयः स्युः शक्तयस्तिस्र एव च ।' इति ।
रकाराज्जायते ब्रह्मारकाराज्जायते हरिः ।
रकाराज्जायते शम्भूरकारात् सर्वशक्तयः ॥
बीजे यथास्थितोवृक्षः शाखापल्लवसंयुतः ।
तथैव सर्ववेदा हि रकारे सुव्यवस्थिताः ॥
आदावन्ते तथा मध्ये रकारे सुप्रतिष्ठितम् ।
विश्वं चराचरं सर्वमवकाशेन नित्यशः ॥
यथा करण्डे रत्नानि गुप्तान्यज्ञैर्नदृश्यते ।
तद्वन्मन्त्राश्च वेदाश्च रकारे सुव्यवस्थिताः ॥

के ज्ञातृत्व की सिद्धि होने से मन्त्रार्थ ज्ञानी को ब्रह्मज्ञानवत्त्व की सिद्धि हो जाने से 'नावेदविन्मनुते तं बृहन्तम' अवेदज्ञ उस व्यापक ब्रह्म को नहीं जानता है' इस श्रुति से विरोध सिद्ध नहीं होता है ।६। और भी 'जैसे की वह बीज में रहने वाला यह प्राकृत वडवड का वृक्ष सूक्ष्मरूप से रहता है, वैसे ही श्रीराम बीज में यह चराचर जगत् सूक्ष्म रूप से रहता है, और रेफ में तीन मूर्तियां एवं तीन शक्तियां आरूढ रहती हैं, इसप्रकार रकार के महत्व का वर्णन है और रकार से ब्रह्मा विष्णु और शम्भु उत्पन्न हैं. और सब शक्तियां भी उत्पन्न होती हैं । जसे बीज में शाखा पल्लवों से संयुत वृक्ष सूक्ष्म रूप से रहता है,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

रकारमैश्वर्यबीजं मकारस्तेन संयुतः ।
अवधारणयोगेन रामो यस्मान्मनुः स्मृतः ॥
सर्ववेदाश्रयत्वाच्च सर्वलोकस्य कारणात् ।
ईश्वरप्रतिपाद्यत्वादखण्ड ब्रह्मवाचकः ॥

इत्येवमादि पुलहसंहितादि वचनेभ्यश्च सर्वेवेदसर्वमन्त्र सर्वलोकाश्रयत्वेन सर्वकारणस्याखण्डब्रह्मवाचकस्य तारक-मन्त्रादिमक्षरस्य रकारस्यार्थविज्ञानेन तत्कार्यभूतसर्ववेदार्थ विज्ञानोपपत्त्याऽपि तारकार्थविदः सर्ववेदार्थवित्वोपपत्तेर्ब्रह्म-ज्ञानित्व निष्पत्तेर्नोक्तश्रुतिविरोध उपपद्यते ॥७॥

वैसे ही रकार में सब वेद सूक्ष्मरूप से निश्चय रूप से रहते हैं, आदि अन्त और मध्यों के विभाग से रकार में ही सब चराचर जगत् सावकाश सर्वदा हमेशा सुप्रतिष्ठित है । जैसे डब्बे में गुप्त रखा रत्न समूह अज्ञजन नहीं देखता है, वैसे रकार में सब मन्त्र और सब वेद सुव्यवस्थित हैं तो भी अज्ञानी मानव नहीं देखता है ।

रकार ऐश्वर्य का बीज है, उससे संयुत मिला हुआ मकार है, जिससे निश्चय रूपसे संमिलित होने के कारण 'राम' मन्त्र कहा गया है । वह सब वेदों के आधार होने से सब लोकों के हेतुत्व से ईश्वर रूप प्रतिपाद्य वाला पन से अखण्ड ब्रह्म-वाचक है । इत्यादि पुलहसंहितादिओं के वचनों से भी सब वेद सब मन्त्र सब लोकों के आश्रय होने से सर्वकारण अखण्ड ब्रह्मवाचक तारक मन्त्र के पहले अक्षर रकार के अर्थ के विज्ञान से उसके कार्यभूत सब वेदों के अर्थ के विज्ञान की सिद्धि होने से तारक मन्त्र के अर्थ के ज्ञाता को सर्ववेदार्थ ज्ञातृत्व की सिद्धि होने से ब्रह्मज्ञानित्व की सिद्धि कही गई है अतः 'नावेदविन्मनुते तं बृहन्तम्' इस श्रुति से विरोध नहीं सिद्ध होता है ॥७॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

किञ्च 'सर्वेवेदा यत्पदमामनन्ति, तद्विष्णोः परमं पदमि,-त्येषा श्रुतिः 'वेदैश्च सर्वैरहमेव वेद्य' इति स्मृतिश्चैकस्यैव परस्य ब्रह्मणः सर्ववेदवेद्यत्वं वदति, अतो यः प्राप्यस्य ब्रह्मणः सच्चिदानन्दस्वरूपं तत्प्राप्त्युपायं च तद्विरोधिस्वरूपं वेद स सर्ववेदार्थवित्वेन वक्तव्य इत्येवं सर्ववेदवेद्यः परब्रह्मतारकादिमाक्षरस्यार्थोऽस्ति, रकारस्तु तद्वाचकः 'रेफारूढा मूर्तयः स्युः शक्तयस्तिस्र एवचे'-ति श्रुत्युक्तस्य रेफस्य ब्रह्मविष्णवाद्याश्रयत्वेन परब्रह्मवाचकत्वोपपत्तेः पुनः 'रकाराज्जायते ब्रह्मति ब्रह्मविष्णवाद्युत्पत्तिस्थितिलयस्थानस्य रेफस्य परब्रह्मस्वरूपत्वतद्वाचकत्वोपपत्तेश्च

और भी देखें 'सब वेद जिस पद को कहते हैं, वह विष्णु का परम पद है' ऐसी श्रुति है, और सब वेदों से मैं ही वेद्य हूं, यह स्मृति भी एक ही परब्रह्म का सब वेदों से वेद्यत्व कहतां है, इससे जो जन प्राप्य परब्रह्म श्रीराम का सच्चिदानन्द स्वरूप उसके प्राप्ति का उपाय तथा उसका विरोधि स्वरूप को भी जानता है, वह सब वेदों के अर्थों का ज्ञातापन से कहने का योग्य है. इसप्रकार सब वेदों से वेद्य परब्रह्म तारक के पहला अक्षर का अर्थ है, रकार उसका वाचक है रेफ में आरूढ ब्रह्मा विष्णु तथा रुद्र ये मूर्तियां और तीन शक्तियां निश्चय रूपसे हैं इस श्रुति से कहे हुए रेफ में ब्रह्म विष्णवादियों के आश्रयत्व से परब्रह्म के वाचकत्व की सिद्धि होने से फिर 'रकार से ब्रह्मा हुए, इससे ब्रह्मा विष्णु तथा शिव की उत्पत्ति स्थिति तथा लय स्थान रेफ के परब्रह्मस्वरूपत्व परब्रह्मवाचकत्व की सिद्धि से भी और सब वेदों के आश्रयत्व से भी सब लोकों के कारणत्व से तथा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

'सर्व्ववेदाश्रयत्वाच्च सर्व्वलोकस्य कारणात् । ईश्वरप्रतिपाद्यत्वादखण्डब्रह्मवाचकः ।' इति स्फुटं रेफस्याखण्डब्रह्मवाचकत्वोक्तेश्च तस्मादशेषवेदवेद्य ब्रह्मणो रेफवाच्यत्वेन रेफवेदेन वेद्यत्वनिष्पत्तेर्यो रेफार्थवित् सोऽपिसर्व्ववेदार्थविद् भवतीति कृत्वा यो रेफविवरणभूतवह्निबीजतद्विवरणभूतषडक्षरस्यार्थं जानाति, स सर्व्ववेदार्थविद् भवतीति किं वक्तव्यम् ।

किञ्च सर्ववेदवेद्यस्य परब्रह्मणः स्वरूपं यो वेद तस्य शब्द ब्रह्मविच्छब्देन वक्तव्यत्वात् तारकमन्त्रस्य स्ववाच्य परब्रह्मस्वरूप तच्छेषत्वात्मक जीवस्वरूप तत्प्राप्त्युपायस्वरूप तत्फलस्वरूप तद्विरोधिस्वरूप बोधकत्वात् षडक्षरमन्त्रार्थ ज्ञानेन सर्ववेदसारार्थो ज्ञातो भवति । अतः षडक्षरनिरूपणपरा याः श्रीरामतापनीयश्रुतयः 'ब्रह्मादीनां वाचकोऽयं

ईश्वर प्रतिपाद्यत्व से अखण्ड ब्रह्मवाचक रेफ है इससे स्पष्टतया रेफ के अखण्ड ब्रह्मवाचकत्व की उक्ति होने से भी इस हेतु से तथा सब वेदों से वेद्य ब्रह्म के रेफ वाच्यत्व के कथन से रेफ के ज्ञान से ज्ञेयत्व की सिद्धि होती है अतः जो रेफ के अर्थों का ज्ञाता है, वह भी सब वेदों के अर्थों का ज्ञाता होता है, इसप्रकार समझ कर जो जन रेफ विवरणभूत वह्निबीज उसके विवरणभूत षडक्षर का अर्थ जानता है, वह सब वेदों का अर्थ का ज्ञाता होता है, यह भी कोई कहने की बात है क्या ?

और सब वेदों से वेद्य परब्रह्म का स्वरूप जो जन जानता है, उसके ब्रह्मवित् शब्द से कहा जाता है अतः तारक मन्त्र के स्ववाच्य परब्रह्म स्वरूप उसके शेषात्मक जीवस्वरूप उसकी प्राप्ति के उपाय स्वरूप उसके फलस्वरूप उसके विरोधि स्वरूप के बोधक

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

क्रियाकर्मेज्यकर्तृणामि'–त्याद्यास्तासां व्याख्याकरणेन षडक्षर मन्त्रार्थः स्फुटीक्रियते। 'ब्रह्मादीनामि' त्यारभ्य 'रेफारूढा मूर्तय' इत्यादि श्रुतयस्तासामर्थः–रेफः परब्रह्मवाचकः प्रथमाकारो ब्रह्मवाचकः, द्वितीयाकारो विष्णुवाचकः, 'अनन्तोऽनन्यासनः सेन्दुर्नासामेकाक्षरोऽवतु' इत्यत्राकारस्य विष्णुवाचकत्वस्मरणात्, 'मकारः' शिववाचकः 'मः शिवश्चन्द्मा वेधा' इतिकोशात्। तदेवं मन्त्रस्य ब्रह्मादिवाचकत्वं स्फुटमाह श्रुतिः–'ब्रह्मादीनां वाचकोऽयं मन्त्रोऽन्वर्थादि संज्ञकः। जप्तव्यो मन्त्रिणा नैनं विना देवः प्रसीदति' इति। अनुगताः सर्वेऽर्था ब्रह्मविष्णवादयो यस्यां साऽन्वर्था रामेत्याद्यासंज्ञा साऽस्ति यस्मिन् मन्त्रे सोऽन्वर्थादिसंज्ञको

होने से षडक्षर मन्त्र के अर्थ का ज्ञान हो जाने से सब वेदों का सारार्थ ज्ञात हो जाता है, इस हेतु से षडक्षर निरूपण परक जो श्रीरामतापनीय श्रुतिर्या–'ब्रह्मादीनां वाचकोऽयं क्रियाकर्मेज्यकर्तृणाम्' इत्यादि हैं, उन श्रुतियों की व्याख्या करने से षडक्षर मन्त्रराज का अर्थ स्पष्ट किया जाता हैं कि–'ब्रह्मादीनाम' यहाँ से लेकर 'रेफारूढा मूर्तयः' यहां तक जो श्रुतिया हैं. उनका अर्थ है कि रेफ परब्रह्मवाचक यानी मन्त्र का पहला 'र' अक्षर ब्रह्मवाचक हैं द्वितीय आकर विष्णु वाचक है क्योंकि 'अनन्तोऽऽन्यासनः सेन्दुर्नासामेकाक्षरोऽवतु' इस श्लोक में, आकार के द्वारा विष्णुजाता का स्मरण किया हैं ऐसा स्मरण होने से 'मकार शिववाचकः' मः शिवश्चन्द्रमावेधाः' इस कोश से मकार शिववाची है, इसप्रकार मन्त्र का ब्रह्मादिवाचकत्व श्रुति स्पष्ट कहती है कि–'ब्रह्मादीनां वाचकोऽयं मन्त्रोऽन्वर्थादिसंज्ञकः' जप्तव्यो मन्त्रिणानैनं विनादेवः प्रसीदति'' ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मन्त्रो जप्तव्य इत्यपूर्वविधिः। विपक्षे बाधकदर्शनेनावश्य जप्तव्यत्वं ज्ञापयति 'नैनं विनेति एवम्—मन्त्रजपम्, विना देवः श्रीरामः न प्रसीदति—नात्मानं दर्शयति, एवं मन्त्रो जप्तव्य इति मन्त्रार्थानुसन्धानपूर्वकं मन्त्रजपस्य कर्तव्यत्वान्मन्त्रार्थ माह—'क्रियाकर्मे'—त्यादिना "क्रियाकर्मेज्यकर्तृणामर्थं मन्त्रो वदत्यथ। मननात् त्राणनान्मन्त्रः सर्व वाच्यस्य वाचकः" तत्र क्रिया ममात्मा मच्छरीरित्वेनैहिकामुष्मिक—मद्योगक्षेम-कारी राम एव स्वप्राप्तेरुपायभूतो मे नान्य इत्याकारो बुद्धेर्व्यवसायरूपो व्यापारः कर्म—इज्यपदसान्निध्यात् तत्कै-ङ्कर्यलक्षणं चतुर्थी-बोध्यम्, मन्त्रजपरूपं च 'जप्तव्यो मन्त्रिणे' ति मन्त्रजपस्याप्युक्तत्वात्, इज्यः—पूज्यः कैङ्कर्येण मन्त्रजपेन

यह मन्त्र अन्वर्थादि संज्ञक ब्रह्मादियों का वाचक है अतः साधकों को सायुज्य मुक्ति हेतु जपने का योग्य है, इस मन्त्र के जपके विना सर्वदेव आराध्य श्रीरामजी प्रसन्न नहीं होते हैं, अनुगत है ब्रह्मा विष्णु आदि रूप अर्थ जिसमें वह अन्वर्था 'राम' इत्यादि संज्ञा है, वह जिस मन्त्र में है वह अन्वर्थादि संज्ञक मन्त्र जप्तव्य है, यह अपूर्व विधि विपक्ष में यानी साध्याभाव-वान् पक्ष में बाधक के रूपमें देखने में आता है अतः अवश्य जप्तव्यत्व समझाता है 'नैनं विना' यह इस मन्त्र के जप के विना, देव यानी श्रीरामजी प्रसन्न नहीं होते हैं, अर्थात् आत्मा को नहीं दिखाते हैं, इसप्रकार 'मन्त्र जपना चाहिये' यह मन्त्रार्थ के अनुसन्धान पुरस्सर मन्त्र के जप के कर्तव्यत्व रूपसे मन्त्रार्थ कहता है 'क्रियाकर्मे' इत्यादि से।

'क्रियाकर्मेज्यकर्तृणामर्थं मन्त्रोवदत्यथ।
मननात् त्राणनान्मन्त्रः सर्ववाच्यस्य वाचकः' ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

च श्रीरामः 'क्षेत्रेऽस्मिन् योऽर्चयेद् भक्त्या मन्त्रेणानेन मां शिव' इति तापनीये स्वमन्त्रजपेन स्वार्चनाया उक्तेः 'स्तवैरर्चेन्नरः सदे' ति नामपाठात्मकैः स्तवैर्भगवदर्चनायाः स्मरणाच्च मन्त्रजपस्योपक्रमाच्च कर्ता–इज्यपदसान्निध्याच्च तत्कैंकर्यस्य कर्ता, मन्त्रजपोपक्रमाच्च मन्त्र जपकर्ता च कैंङ्कर्यकर्तृत्वेन तन्मन्त्रजपकर्तृत्वेन तदाराधकत्वाच्च तच्छेषभूतः 'ना किञ्चित् कुर्वंस्तच्छेषत्वमि'–ति न्यायात् तत्कैङ्कर्यकर्तु-

मन्त्र में स्थित क्रिया शब्द से मेरी आत्मा मेरे शरीरिरूप से इहलौकिक और पारलौकिक मेरे योग क्षेम को करने वाले श्रीरामजी ही हैं और अपनी प्राप्ति के साधनभूत भी श्रीरामजी ही हैं, दूसरे नहीं हैं. इसप्रकार के बुद्धि का व्यवसाय रूप व्यापार का ग्रहण होता है कर्म के इज्य पद के निकट होने से उनके कैङ्कर्य रूप कर्म चतुर्थी विभक्ति से ज्ञेय है, मन्त्र जप रूप भी कर्म 'जप्तव्यो मन्त्रिणा' इससे मन्त्र जप की भी उक्ति से समझना चाहिये ।

इज्य यानी पूज्य कैङ्कर्य से और मन्त्र के जप से भी श्री रामजी पूजनीय हैं, श्रीरामजी ने श्रीशिवजी से कहा है कि–'हे श्रीशिवजी ? इस क्षेत्र में भक्ति से उस मन्त्र से जो मेरी पूजा करेगा' यहाँ श्रीराम तापनीय में स्व मन्त्र के जप से अपनी पूजा की उक्ति से 'स्तवैरर्चेन्नरः सदा' इससे नामपाठ रूप स्तवों के द्वारा भगवान् की अर्चना की स्मृति से एवं मन्त्र जप के उपक्रम से भी कर्ता इज्य पद के सान्निध्य होने से मन्त्र जप-कर्ता को कैङ्कर्य कर्तृत्व रूप से उनके मन्त्र के जप कर्तृत्वपना से तथा उन के आराधकत्व रूप होने से भी सर्वेश श्रीराम का शेषभूत कर्ता समझना चाहिये ।

२

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

स्तन्मन्त्रजपकर्तुस्तच्छेपत्वोपपत्तेः । शेषत्वं नाम 'जगत्प्राणात्मने' इत्यग्रेतनश्रुतेः, जगदात्मत्वेन जगद्व्यापको रामस्तेन बहिरन्तर्व्याप्तस्य जीवस्य तदपृथक्त्वसिद्ध्या जीवस्वरूप-स्थिति-प्रवृत्त्योस्तदधीनतया तदत्यन्तपरत्वं तच्छेषत्वम् । एतेन जीवस्य श्रीरामानन्यशेषत्वमुपपन्नतरम्, कुतः ? श्रीरामव्यतिरिक्तजगद्व्यापकाभावेन जगतस्तदन्यव्याप्यत्वासिद्ध्या तदन्यपरतन्त्र स्वरूपत्वाभावेन तदन्यशेषत्वासिद्ध्या श्रीरामानन्यशेषत्वनिष्पत्तेः । तच्चेदं श्रीरामशेषत्वमेव जीवस्य स्वरूपम् ।

कुछ करने वाला जो है उसमें तच्छेपत्व धर्म रहता है' इस न्याय से उनके श्रीरामजी के कैङ्कर्य करने वाले में और उन श्रीरामजी के मन्त्र के जप करने वाले में तच्छेपत्व की सिद्धि होती है। शेषत्व तो वह प्रसिद्ध वस्तु है जो 'जगत्प्राणात्मने' इस आगे का श्रुति से, जगदात्मरूप से जगद् में व्यापक श्रीरामजी हैं, उनसे बाहर भीतर व्याप्तजीव को उनसे अभिन्नत्व की सिद्धि होने से जीवस्वरूप की स्थिति और प्रवृत्ति की श्रीरामजी की अधीनता के कारण उनका श्रीरामजी का अत्यन्त परता ही जीवों का शेषत्व है. इससे जीव को श्रीरामरूप में वृत्ति शेषिता निरूपित शेषत्व अच्छी तरह से सिद्ध हुआ । क्योंकि—श्रीरामजी से भिन्न जगद् व्यापक के अभाव होने से जगत् को श्रीरामजी से भिन्न निष्ठ व्यापकता निरूपित व्याप्यत्व की असिद्धि होने से तथा उनसे भिन्न के परतन्त्र स्वरूपत्व के अभाव से एवं उनसे भिन्न निष्ठ शेपिता निरूपित शेषत्व की असिद्धि से तथा श्रीरामरूपनिष्ठ शेपिता निरूपित शेषत्व की सिद्धि होने से तब वह शेषत्व श्रीरामशेषत्व ही जीव का स्वरूप सिद्ध हुआ ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यद्यपि ज्ञानानन्दगुणकं–ज्ञानानन्दात्मकमेव जीवस्य स्वरूपमित्युक्तं मन्त्रार्थकर्तृभिः । तथाऽपि ज्ञानानन्दगुणकं ज्ञानानन्दात्मकत्वमपि पुत्रादिवद् बहिर्मत्वा जीवस्य स्वरूपं भगवच्छेषात्मकमेवेति दृढीकृतमस्मत्पूर्वाचार्यैः । तत्र स्वरूप ज्ञानं नाम ज्ञानानन्दादिवृत्तिरूपम् पुत्रादिवद् ग्राह्यमिति मत्वा भगवदनन्याहशेषत्वमेव स्वरूपमिति, स्थितिः–स्वरूप याथात्म्यज्ञानं नाम भगवदनन्यार्हशेषत्व बहिर्वृत्तिरूपम् पुत्रादिवद् ग्राह्यमिति मत्वा भगवतः शेषत्वमेव स्वरूपमिति स्थितिरिति । गीतानन्दभाष्यकारेणापि तथैवोक्तम्, ।

ज्ञानी नाम 'इतस्त्वन्यां प्रकृतिं विद्धि मे पराम्' जीव भूतामि' त्यां नाऽभिहितभगवच्छेषतैकरसात्मभूतरूपवदिति नाल्पसंख्या संख्यातानां पुण्यजन्मनां फलमिदम् यन्मच्छे-

यद्यपि ज्ञानानन्द गुणक तथा ज्ञानानन्द स्वरूप ही जीव का स्वरूप है' यह मन्त्र के अर्थकर्ता कतिपय पूर्वाचार्य वर्गों ने कहा है. तो भी वास्तविक रहस्यज्ञ आचार्यों ने ज्ञानानन्द गुणक एवं ज्ञानानन्द स्वरूप को पुत्रादिक के समान बाहरी स्वरूप मानकर जीव का वास्तविक स्वरूप भगवान् का शेष रूप ही है ऐसा दृढ किया है हमारे अनेक आचार्यों ने । यहाँ स्वरूप ज्ञानसे ज्ञानानन्दादि-वृत्तिरूप बाह्य पुत्रादि को लेना चाहिये ऐसा मानकर भगवान् से अभिन्न योग्यनिष्ठ वृत्ति शेषिता निरूपित शेषत्व ही जीवका स्वरूप है ऐसा स्थिर होता है । यह स्थिति वह है जो जीव स्वरूप के यथार्थत्व का ज्ञान है वह भगवदनन्यार्ह शेषता से बहिर्वृत्तिरूप पुत्रादिवत् जानना चाहिये । ऐसा होने पर भगवान् का शेषत्व

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पतैकरसात्मयाथात्म्यज्ञानपूर्वकं मत्प्रपदनमिति च, यथार्थं हि तत्, यतो ज्ञानानन्दगुणकत्वे सति ज्ञानानन्दस्वरूपमिति लक्षणम् । आत्मपरमात्मोभयसाधारणं शेषत्वं तु जीवमात्रनिष्ठत्वेन जीवमात्रसाधारणम् । अतः शेषत्वमेव स्वरूपं जीवस्य, तथापि चेतनत्वे सति शेषत्वं जीवत्वमिति लक्षणे चेतनपदस्य निवेशः प्रकृतावतिव्याप्तिव्यावृत्त्यर्थः नतु जीवस्वरूपबोधनार्थः । तच्च शेषत्वमीदृशम्—यथा जलनिधौ पतितानां तूलकणानां जलेन बहिरन्तर्व्याप्तानां जलस्वरूपेणैव भानं भवति- नतु तूलस्वरूपेण, तथैव श्रीरामेण बहिरन्तर्व्याप्तानां

ही जीवका स्वरुप है इस बात को गीतानन्दभाष्य में भी वैसा ही निरूपण पाते हैं । ज्ञानी वह है जो 'इससे अन्य परा प्रकृति जीवरूप है. हे अर्जुन ? तुम उसे जानो । इत्यादि वचन से कहा हुआ भगवान् के शेषत्व में एक रस एकनिष्ठा हुये को जानने वाला है वह ज्ञानी है । थोडी संख्या से गिने जाने वाले पवित्र जन्मों का यह फल नहीं है जो कि–जो मेरी शेषता और अनन्यता या एकरसात्मा के यथार्थत्व से ज्ञान पुरस्सर मेरी शरणागति होती है । यथार्थ ही वह है । जिससे ज्ञानानन्दगुणवत्व विशिष्ट तथा ज्ञानानन्द स्वरूप. यह लक्षण बनता है यह जीवात्मा और परमात्मा. इन दोनों में घटता है. पर शेषत्व तो जीव ही में रहने से जीवमात्र का साधारण है. इस हेतु से जीव का स्वरूप शेषत्व ही है । तो भी चेतनत्व विशिष्ट शेषत्व जीव का लक्षण मानने में चेतन पद का निवेश प्रकृति में अति व्याप्ति दोष दूर करने के लिये है. न कि जीवस्वरूप को समझाने के लिये । तादृश शेषत्व इस

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

जीवानां स्वरूपेण भानाभावपूर्वकं श्रीरामस्वरूपेणैव यद् भानत्वं तदेव श्रीरामशेषत्वं जीवस्य स्वरूपमुच्यते । तत्र ज्ञानानन्दस्वरूपस्यापि बहिरन्तः श्रीरामव्याप्त्या श्रीराम-स्वरूपत्वेन भानत्वोपपत्त्या श्रीरामशेषत्वोपपत्तेः । एतेन जीवपरमात्मनोः शेषशेषिभावः सम्बन्ध उपपन्नतरः । सम्बन्धस्वरूपज्ञानमप्युक्तं श्रीवैष्णवाचार्यैः—सम्बन्धस्वरूप ज्ञानं नामचतुर्विधम्, १-सम्बन्धज्ञानम् २ सम्बन्धयाथात्म्य ज्ञानम्, ३—सम्बन्धस्वरूपज्ञानम् ४-सम्बन्धस्वरूपयाथात्म्य ज्ञानम् तत्र सम्बन्धज्ञानं नाम श्रियः पत्युर्निरुपाधिकशेषित्वम्

प्रकार का है. जैसे समुद्र में रुके टुकडे पडते हैं. तो जल से बाहर भीतर व्याप्त होकर जल स्वरूप ही प्रतीत होते हैं रुई रूप से नहीं वैसे ही श्रीराम ब्रह्म से बाहर भीतर व्याप्त जीव अपने रूप से नहीं प्रतीत होते किन्तु श्रीराम रूप से ही यह जो श्री रामरूप से जीव का भान होता है वही श्रीराम शेषत्व जीव का स्वरूप कहा जाता है । यहाँ ज्ञानानन्द स्वरूप का भी बाहर भीतर श्रीराम व्यापक की व्याप्ति से श्रीराम रूपता से भान ज्ञान की सिद्धि होने से श्रीरामशेषत्व की सिद्धि हो जाती है । इससे जीवात्मा और परमात्मा इन दोनों का परस्पर शेषशेषिभाव नाम का सम्बन्ध सिद्धतर होता है । सम्बन्ध स्वरूप ज्ञान चार प्रकार का प्रसिद्ध है. जो अपने पूर्वाचार्यों ने अनेक दिव्य प्रबन्धों में प्रतिपादन किया है । सम्बन्ध ज्ञान यानी संबन्ध का यथार्थ रूप से जानना । इसमें संबन्ध ज्ञान इस प्रकार प्रसिद्ध हैं कि—श्री पति श्रीरामजी का निरुपाधिक शेषित्व अपने को निरुपाधिक शेषत्व को जानकर उस स्थिति का अनुसन्धान करना सम्बन्ध का यथा-त्म ज्ञान—यह है जो श्रीपति श्रीरामजी का निरुपाधिक शरीरित्व.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

स्वस्थनिरूपाधिकशेपत्वं च सम्यग् ज्ञात्वा स्थितिः । सम्बन्धयाथात्म्यज्ञानं नाम श्रियः पत्युर्निरूपाधिकशरीरित्वं स्वस्य निरूपाधिकशरीरत्वं ज्ञात्वा स्थितिः । सम्बन्धस्वरूपज्ञानं नाम श्रियः पत्युर्निरूपाधिकधर्मित्वं स्वस्य निरूपाधिकधर्मत्वं सम्यग् ज्ञात्वा स्थितिः । सम्बन्धस्वरूपयाथात्म्यज्ञानं नाम धर्मिधर्मयोरैक्यं सम्यग् ज्ञात्वा स्थितिः । ऐक्यं नाम विशिष्टविशेषे सति स एव सन् स्वयं यथा न प्रकाशते तथाऽवस्थितिरिति 'क्रियाकर्मेज्यकर्तॄणामीदृशमर्थं मन्त्रोऽवदति । तस्येदृशस्यार्थस्य मननाद् ईदृशमन्त्रार्थमननपूर्वकं मन्त्रजपादित्यर्थः । मन्त्रजपमुपक्रम्य मन्त्रार्थस्योक्तत्वान्मन्त्रवाच्य श्रीरामकर्तृक यन्मन्त्रजपकर्तुस्त्राणनं—पालनं संसाराद्रक्षणं तस्मान्मन्त्र उच्यते, मन्तारं त्रायत इति मन्त्रः इति तन्निरुक्तेः । कथम्भूतो मन्त्रः—'सर्ववाच्यस्य वाचकः'

अपना निरुपाधिक शरीरत्व इन दोनों को जानकर मनन करते रहना । संबन्धरूप ज्ञान वह है कि जो श्रीपति का निरुपाधिक धर्मित्व अपना निरुपाधिक धर्मत्व इन दोनों को अच्छी तरह जानकर अनुभव करते रहना, संबन्ध स्वरूप का रूप का याथात्म्यज्ञान वह है जो धर्मिधर्मो को अच्छी तरह जानकर उसका अनुभव करते रहना, ऐक्य वह है जो विशिष्ट से विशेषित रहने पर भी अपनेशेषा श्रीरामजी से एकरूपता का या भिन्न रूपता का अनुभव करता हुआ खुद जिस प्रकार से प्रकाशित नहीं हो उस प्रकार से रहना । क्रिया कर्म इज्या और कर्ता का ऐसा अर्थ मन्त्र कहता है, तो प्रकृत में ऐसे अर्थ के मनन से यानी ऐसे मन्त्रार्थ के मनन पुरस्सर मन्त्र के जप से, ऐसा अर्थ है । मन्त्र

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सर्वशब्दवाच्यस्य श्रीरामस्य वाचकः अशेषचिदचिच्छरीरि सच्चिदानन्दश्रीरामस्वरूपसाक्षाद्वाचकत्वेन श्रीरामाख्यपर-ब्रह्ममुख्यवाचक इत्यर्थः ।

ननु 'सर्ववाच्यस्ये'-ति श्रुत्या सर्वेषां शब्दानां श्रीरामवाचकत्वोक्तेः श्रीराममन्त्रस्यापि सर्वशब्दान्तर्गतत्वेन तद्वाचकत्वोपपत्तेः पुनः केन विशेषेण सर्वेभ्यः शब्देभ्यः पृथक् कृत्य श्रीराममन्त्रस्य तद्वाचकत्व-मुक्तम् ! 'सर्ववाच्यस्य वाचक' इति श्रुत्या यं विशेषमाश्रित्य त्वयाऽपि तत्स्वरूपवाचकत्वेन तन्मुख्यवाचकत्वमुक्तमिति चेदुच्यते-यथा शरीरवाचकाः शब्दास्तच्छरीरिणि प्रत्यगात्मनि जीवे पर्यवस्य तद्वाचका भवन्ति अन्यथा शरीरं त्यक्त्वा पित्रादिलोकं गतानां जीवानां त्यक्तशरीरनाम्ना पिण्डोदकदानानुपपत्तेः । तथैव 'विश्वरूपस्य ते राम सर्वे शब्दा

जप के उपक्रम कर मन्त्रार्थ के कहने से मन्त्र वाच्य श्रीराम कर्तृक जो मन्त्रजपकर्ता का रक्षण यानी संसार से बचाना है इस हेतु से मन्त्र कहा जाता है, जो मनन करने वाले को रक्षित करता है वह मन्त्र है इस प्रकार का मन्त्र शब्द का निर्वचन है । कैसा मन्त्र है ? तो वह सब वाच्य का वाचक है, सर्व शब्द वाच्य श्रीरामजी का वाचक है ? सकल चिदचित् शरीर वाले सच्चिदानन्द श्रीराम स्वरूप के साक्षात् वाचक होने से श्रीराम रूप परब्रह्म का मुख्य वाचक है।

पुनः यहाँ जिज्ञासा होती है कि- 'सर्ववाच्यस्य' इस श्रुति से सब शब्दों की श्रीरामवाचकता की उक्ति से श्री राममन्त्र

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हि वाचकाः' इति स्मृतेश्च चिदचिद्वाचकाः सर्वे शब्दाश्चिदचिद्द्वारा चिदचिच्छरीरिणि श्रीरामे पर्यवस्य चिदचिदन्तर्यामिणः परेशश्रीरामस्य वाचका भवन्ति, नतु सच्चिदानन्द स्वरूपं वदन्ति, तथा श्रीविष्णुनारायणवासुदेवहयादयोऽपि ये भगवद्वाचकाः शब्दास्तेऽपि सर्वव्यापकत्वक्षीराब्धिनिवासित्व सर्वतत्त्वायनकरणत्व सर्वोपायत्वोपेयत्वसर्वभूतनिवासित्व भक्तदुःखहरत्व प्रकृतिजीवाधारत्वादिगुणकर्मद्वारैव तस्मिन् पर्यवस्य तस्य वाचका भवन्ति, नत्वपरिच्छिन्नचिदात्मकं तत्स्वरूपं वदन्ती त्येतत् सर्वं सम्यगुपपादितमस्माभिः श्रीरामतापनीयमधिभाष्ये तत्तु तत्रैव द्रष्टव्यम् ।

का भी सर्व शब्दान्तर्गत होने से उसकी भी वाचकता की सिद्धि हो जाने से फिर किस विशेष से सब शब्दों से भिन्न कर श्रीराम मन्त्र का तद्वाचकत्व कहा गया ? 'सर्ववाच्यस्य वाचकः' इस श्रुति से जिस विशेष को लेकर तुमने भी उनके स्वरूपवाचकपना से उनके मुख्यवाचक पना कहा ? यदि ऐसा कहें तो इसमें कहा जाता है कि—जैसे शरीर वाचक शब्द देवदत्तादि शरीरी प्रत्यागात्मजीव में पर्यवसित होकर उसके वाचक होते हैं, ऐसा नहीं मानने से शरीर छोडकर पित्रादियों के लोक में गये हुए जीवों को त्यक्त शरीर के नाम से पिण्ड और जलका दान उपपन्न नहीं होगा अतः शास्त्र विहीतपिण्ड दानादि व्यर्थ होगा । वैसे ही 'विश्वरूपस्य ते राम सर्वे शब्दा हि वाचकाः' हे श्रीरामजी विश्वरूप आपके सब शब्द वाचक हैं, इस स्मृति के प्रमाण से सब शब्द चिदचित के वाचक हैं तो वे शब्द चिदचित् शरीर के द्वारा चिदचित के शरीरी श्रीरामजी में पर्यवसित होकर चिदचित् के अन्तर्यामी श्रीरामजी के वाचक होते हैं, न कि सच्चिदानन्द स्वरूप के प्रतिपादक होते हैं, और

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

श्रीरामनाम तु सच्चिदानन्दं तत्स्वरूपं साक्षाद्वदतीत्याह श्रीरामतापनीया श्रुतिः—'रमन्ते योगिनोऽनन्ते सत्यानन्दे चिदात्मनि । इति रामपदेनासौ परब्रह्माभिधीयते' इत्येषा, षडक्षरस्य श्रीरामन्त्रस्यादिममक्षरं वह्निबीजं स्वप्रकाशज्योतिर्मय परब्रह्मस्वरूपभूतमस्ति सर्ववेदकारणभूतप्रणवकारणं चास्ति जगत्सृष्ट्यादेश्च कारणमस्तीत्याह द्वितीय श्रुतिः

'स्वभूर्ज्योतिर्मयोऽनन्त-रूपित्वेनैव भासते ।
जीवत्वेनेदमों यस्य सृष्टिस्थितिलयस्य च ।।
कारणत्वेन चिच्छक्त्या रजः सत्त्वतमोगुणैः ।"
इत्येषा । तथैवाह श्रीरामोपनिषच्छ्रुतिः—
'स्वप्रकाशः स्वयं ज्योतिः स्वानुभूत्यैकचिन्मयः ।
तदेवरामचन्द्रस्य मनोराद्याक्षरं स्मृतम् ।।

श्रीविष्णु श्रीनारायण श्रीवासुदेव श्रीहरि आदि जो भी भगवान् के वाचक हैं, वे भी सर्व व्यापकत्व क्षीरसमुद्रनिवासित्व सर्वतत्त्वायन के कारणत्व सर्वोपायत्व सर्व उपेयत्व सर्वभूत निवासित्व भक्त दुःख हरत्व प्रकृति—जीवाधारत्व आदि गुण कर्मों के द्वारा ही उनमें पर्यवसित होकर उनके वाचक होते हैं, न कि अपरिच्छिन्न चित्स्वरूप उनके स्वरूप का वाचक होते हैं, यह सब हमने अच्छी तरह श्रीरामतापनीय उपनिषद् के भाष्य में अच्छी तरह से उपपादन किया है, वह वहीं देखना चाहिये ।

'श्रीरामनाम तु' इत्यादि—श्रीरामनाम तो सच्चिदानन्द उनका श्रीरामजी स्वरूप है ऐसा साक्षात् कहता है' ऐसा श्रीरामतापनीय श्रुति कहती है—योगी लोग जिस अनन्त सत्यानन्द चिदात्मा में रमण करते हैं वह परब्रह्म श्रीरामपद से कहा जाता है । इस प्रकार

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

इत्येषा। मन्त्रस्य षडपिवर्णा 'ब्रह्मात्मकाः सच्चिदानन्दाख्या सन्तीत्याह श्रीरामतापनीया श्रुतिः 'ब्रह्मात्मकाः सच्चिदानन्दाख्या इत्युपासितव्यम्' इत्येषा· स एव मन्त्रः प्रणव स्वरूपो भवतीत्याह श्रतिः 'इत्योमिति' इत्येषा। इत्युक्तप्रकारकः षडक्षर ओमिति भवति ॐ काररूपमापद्यते इत्यर्थः। रेफोवह्निबीजं च रामनाम षडक्षर मन्त्र इतीमे सच्चिदानन्दब्रह्मस्वरूपं साक्षाद्वदन्ति ब्रह्मस्वरूपभूताश्च सन्तीति 'रेफा से षडक्षर श्रीराममन्त्र का पहला अक्षर अग्नि बीज (२) स्वप्रकाश ज्योतिर्मय परब्रह्मस्व रूप है. सब वेदों का कारण जो प्रणव है उसका भी कारण है और जगत के सृष्टि स्थिति प्रलयों का कारण भी है. यह दूसरी श्रुति कहती है–स्वभूर्ज्योतिर्मयः' इत्यादि खुद होने वाला प्रकाशमय अनन्तरूपित्व से ही प्रकाशमान होता है. जीवत्व से जिसका रूप ॐ यह है. फिर सृष्टि स्थिति और लयों के कारणत्व से चित् की शक्ति यानी प्रकृति के रजोगुण सत्त्वगुण और तमोगुणों से जगत् के सृष्टि पालन संहार के करने से भासमान है। इस प्रकार की श्रुति है वैसे ही श्रीरामोपनिषत श्रुति कहती है कि–'स्व प्रकाशः परंज्योतिः इत्यादि–स्वप्रकाश उत्कृष्ट ज्योति स्वानुभव एक चिन्मय जो ब्रह्म है. वही श्रीरामचन्द्रजी के षडक्षर मन्त्र का प्रथम अक्षर कहा गया है। इस श्रीरामषडक्षर मन्त्र के छ अक्षर ब्रह्म स्वरूप सच्चिदानन्द नाम के हैं. इससे यह उपासनीय है' ऐसी श्रुति है। वही श्री रामषडक्षर मन्त्र प्रणवस्वरूप है' यह भी श्रुति कहती है कि–'इत्योम इति' यह ॐ है. ऐसी श्रुति है। यह कहे हुए प्रकार वाला षडक्षर मन्त्र ॐ ऐसा होता है अर्थात् ॐकार रूप प्राप्त करता है। राम शब्द में स्थित रेफ वह्नि बीज रामनाम और षडक्षर मन्त्र ये तीनों को सच्चिदानन्द ब्रह्म का स्वरूप साक्षात्

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

रूढा मूर्तयः स्युः शक्तयस्तिस्र एव च' इति । 'स्वभूर्ज्योतिर्मयोऽनन्तरूपित्वेनैव भासते । जीवत्वेनेदमों यस्य सृष्टिस्थितिलयस्य च । कारणत्वेन चिच्छक्त्या रजः सत्त्वतमोगुणैः । इति च । 'रमन्ते योगिनोऽनन्ते सत्यानन्ते चिदात्मनि । इति रामपदेनासौ परब्रह्माभिधीयते' इति च 'ब्रह्मात्मका सच्चिदानन्दाख्या इत्युपासितव्यम्' इत्येवमादिभिः श्रुतिभिरवगम्यते । तेन यथा स्वरूपाश्रितेभ्यो व्यापकत्वादिगुणकर्मभ्यः कोटिगुणाधिकं भवति, अपरिच्छिन्नचिदात्मकं ब्रह्म स्वरूपं तथैव व्यापकत्वाद्यर्थकेभ्यस्तत्तद्गुणकर्मद्वारा भगवद्वा

रूप से कहते हैं, और ब्रह्म स्वरूपभूत भी है, 'रेफ के ऊपर आरुढ ब्रह्मा विष्णु एवं महेश तीन मूर्तियाँ हैं और तीन शक्तियाँ भी हैं' यह रेफ में ब्रह्मा विष्णु और शिव ये तीन मूर्तियां हैं, और सृष्टि स्थिति लयकारी तीन शक्तियाँ भी हैं । रेफ स्वभु ज्योतिर्मय और अनन्त रूपी पना से भासता है., जीवपना से जिसका रूप ॐ यह भासता है, चित् की शक्ति के रजः सत्त्व तमोगुणों से सृष्टि स्थिति और लयों के करने से पूर्णताया रेफ ही भासता है, योगी लोग जिस अनन्त सत्य एवं चित्स्व रूप ब्रह्म में रमण किया करते हैं इससे वह ब्रह्म 'राम' इसपद से कहा जाता है ब्रह्म स्वरूप चिदानन्दनामवाले छ अक्षर हैं इस कारण से उपासनीय है' इत्यादि श्रुतियों के द्वारा ज्ञात होता है, उससे जैसे अपने में रहने वाले व्यापकत्व आदि गुणकर्मो से कोटिगुणाधिक होता है—अपरिच्छिन्न चित्स्वरूप ब्रह्म का स्वरूप, वैसे व्यापकत्व आदि अर्थ वाले तत्तद्गुणकर्मो के द्वारा भगवद्वाचक विष्णु आदि नामों से सच्चिदानन्द और उनका स्वरूप का वाचक और सच्चिदानन्द स्वरूप भूत श्रीरामनाम के और षडक्षर श्रीरामतारक मन्त्र के कोटिगुणा-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

चकेभ्यो विष्णवादिनामभ्यः सच्चिदानन्दतत्स्वरूपवाचकस्य तत्त्वरूपभूतस्य च श्रीरामनाम्नः षडक्षर श्रीरामतारकमन्त्रस्य च कोटिगुणाधिक्योपपत्तेः स्वरूपतः फलतश्च श्रीविष्णवादिनामभ्यस्तन्मन्त्रेभ्यश्च श्रीराममन्त्रस्य श्रीरामनाम्नश्च कोटिगुणाधिक्यमुपपादितं व्यासादिभिः 'विष्णोरेकैकनामैव सर्ववेदाधिकं मतम् । तादृङ्नामसहस्रैस्तु रामनाम समं मतम् । जपतः सर्ववेदांश्च सर्वमन्त्रांश्च पार्वति ! । तस्मात् कोटिगुणं पुण्यं रामनाम्नैव लभ्यते' इति व्यासेनोक्तं पद्मपुराणे । अगस्त्येनापि–'सर्वेषु मन्त्रवर्गेषु श्रेष्ठं वैष्णवमुच्यते । गाणपत्येषु शैवेषु शाक्तसौरिष्वभीष्टदम् । वैष्णवेष्वपि मन्त्रेषु राममन्त्राः फलाधिकाः । गाणपत्यादि मन्त्रेषु कोटिकोटिगुणाधिकाः । मन्त्रस्तेष्वप्यनायास–फलदोऽयं षडक्षरः । शान्तः प्रसन्नो

धिक्य की सिद्धि होने से स्वरूप से और फल से भी श्रीविष्णु आदि नामों के और उनके मन्त्रों से श्रीरामनाम का और श्रीराम मन्त्र का कोटिगुणाधिक्य सिद्ध किया है व्यास आदि महर्षियों ने जैसा कि श्रीविष्णु का एक एक नाम ही सब वेदों से अधिक माना गया है । ऐसे हजारों नामों के तुल्य श्रीरामनाम कहा गया है' और श्रीशिवजी का वाक्य श्रीपार्वतीजी के प्रति है कि हे पार्वति ? सब वेदों को सब मन्त्रों को जपने वाले को जो पुण्य मिलता है. उससे कोटिगुणा पुण्य श्रीरामनाम ही से मिला करता है' ऐसा पद्मपुराण में श्रीव्यासजी ने कहा है । श्रीअगस्त्यजी ने भी कहा है–कि सब मन्त्र के समूह में वैष्णव मन्त्र श्रेष्ठ कहा जाता है, गणेश के शिवजी के शक्ति के और सूर्य के उपासकों में भी अभीष्ट दायक श्रीरामनाम है । वैष्णव मन्त्रों में

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वरदोह्यक्रोधो भक्तवत्सलः। अनेन सदृशो मन्त्रो जगत्स्वपि न विद्यते। इति सर्वमन्त्रेभ्योऽप्याधिक्यमुक्तम्। हारीतेनापि 'श्रीरामाय नमो ह्येतत् तारकं ब्रह्मनामकम्। नाम्नां विष्णोः सहस्राणां तुल्य एष महामनुः। अनन्ता भगवन्मन्त्रा नानेन तु समाः कृताः। श्रियोरमण सामर्थ्यात् सौन्दर्यगुणसागरात्' इत्येवमुक्तम्।

नन्वत्रानन्तानामपरिमितानामशेषाणामपि भगवन्मन्त्राणां श्रीराममन्त्रसमत्वनिषेधे तच्छ्रीरमणसामर्थ्यं तत्सौन्दर्य गुणसागरत्वं च हेतुरुक्तो हारीतेन तत्किमन्येषु श्रीविष्णुनारायणवासुदेवहरिकृष्णादिषु तादृशं श्रीरमणसामर्थ्यं सौन्दर्यं गुणसागरत्वं नास्ति? येन श्रीराममन्त्रसमत्वं तत्तन्मन्त्राणां निषेधितमिति चेदुच्यते-यथा श्रीरामस्य 'पूर्वाह्णे पौरकार्याणि

भी श्रीराममन्त्र अधिक फल दायक है। उन श्रीराममन्त्रो में भी यह षडक्षर मन्त्र विना प्रयास के फल देने वाला है। यह मन्त्र शान्त प्रसन्न वर दायक अक्रोध और भक्तवत्सल है। इस षडक्षर मन्त्र के समान मन्त्र त्रिभुवन में अन्य नहीं है। इस वचन से सब मन्त्रों से षडक्षर मन्त्र की अधिकता कही गई है हारीतने भी कहा है कि-'श्रीरामाय नमः' यह तारक ब्रह्मनाम है यह मन्त्र श्रीविष्णु के हजार नामों के समान विशेष फल देने वाला महा मन्त्र है। भगवान् के मन्त्र अनन्त हैं परन्तु श्रीरमण रामजी के सौन्दर्यगुण युक्त इस षडक्षर के तुल्य कोई नहीं हैं ऐसा कहा है सागरत्व रूप होने से यहाँ जिज्ञासा होती है कि-अनन्त यानी अपरिमित सब भगवान् के मन्त्रों का श्रीराम मन्त्र के समानत्व के निषेध में श्रीरामजी का श्रीरमणसामर्थ्य और सौन्दर्य

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कृत्वा सर्वाणि पूर्ववत् । शेषं दिवसभागार्द्धमन्तः पुरगतोऽनयत् ।। एवं तयोर्विहरतोः सीता-राघवयोश्चिरम् । दशवर्ष सहस्राणि व्यतीयुः सुमहात्मनोः ।। इत्येवं गृहवनाशोकवाटिकादिष्वहन्यहन्येकादशसहस्रवर्षपर्यन्तं श्रीजानकीरमयितृत्वं श्रूयते, न तथाऽन्येषां कुत्रापि श्रीरमयितृत्वं श्रूयते न चोपपद्यते, श्रीकृष्णस्य स्वल्पकालं राधादिगोपिरमयितृत्वं श्रूयते, न तु श्रीरुक्मिणीरमयितृत्वम् । अतः श्रीरमणसामर्थ्यं श्रीराम एवोपपद्यते, नत्वन्यत्र । किंच तत्तन्नामनिरुक्त्याऽपि श्रीरमयितृत्वं श्रीरामस्यैवोपपद्यते, नत्वन्यस्य । तथाहि-श्री रमते यत्र स श्रीरामः, अधिकरणे घञ् । श्रियं रमयतीति श्रीरामः 'रामो रमयतां वर' इतिश्रीमद्वाल्मीकिवचनेऽनुकूलेयं निरुक्तिः'इति । निरुक्तो रामशब्दः स्पष्टं श्रीरामस्य श्रीरमयितृत्वं बोधयति,

गुण सागरत्व हेतु हारीत ने कहा तो क्या दूसरे श्रीविष्णु श्रीनारायण श्रीवासुदेव श्रीहरि और श्रीकृष्णादियों में वैसा श्रीरमण सामर्थ्य और सौन्दर्य गुण सागरत्व नहीं है ? जिससे उनके उन २ मन्त्रों के श्री राममन्त्र समत्व निषेधित किया गया ? ऐसी यदि जिज्ञासा है तो इसका समाधान कहा जाता है-कि जैसे श्रीरामजी का 'पूर्वाह्न में सब कार्य कर पूर्ववत् शेष दिन का आधा भाग अन्तः पुर में प्राप्त होकर विताये । इस तरह विहार श्रीसीताजी करते हुए अच्छे के साथ महात्माओं के संगति करते हुये चिरकाल दश हजार वर्ष व्यतीत हुए । इस तरह अन्तः पुर-आवास-वन अशोक वाटिकादियों में प्रतिदिन विहार

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

न तु नारायणादिनाम्नां निरुक्त्या कस्यापि श्रीरमणत्व मुपपद्यते, तथाहि–श्रियः शोभमानाः, नाना अयनं यस्य श्रीनारायणः, शोभमानानि तत्त्वानि वाऽयनं यस्य स श्रीनारायणः। श्रियं वेवेष्टीति श्रीविष्णुः। श्रियां वसति, श्रियं वासयतीति वा श्रीवासुः, स चासौ देवश्च श्रीवासुदेवः। श्रियं हरतीति श्रीहरिः। श्रियं कर्षयतीति श्रीकृष्णः, इतीमा व्युत्पत्तयस्तु नोपपद्यन्ते। न च नारायणादीनां श्रीरमयितृत्वं बोधयन्ति। किन्तु देवपूजको ब्राह्मणो देवब्राह्मण इतिवत् श्रीसहितो नारायणः श्रीनारायणः,

करते हुए ग्यारह हजार वर्ष पर्यन्त श्रीजानकी रमयितृत्व सुना जाता है, वैसा दूसरों का वहीं भी श्रीरमयितृत्व सुना नहीं जाता है, श्रीकृष्णजी का तो कम समय तक ही श्रीराधादिगोपी रमयितृत्व सुना जाता है, परन्तु श्रीरुक्मिणी रमयितृत्व नहीं। इस हेतु से श्रीरमणसामर्थ्य श्रीरामजी में ही सिद्ध होता है किन्तु दूसरोंमें नहीं।

और भी देखो उन नामों को विरुक्ति से भी श्रीरमयितृत्व श्रीरामजी में ही सिद्ध होता है. न कि दूसरे में वैसा है जैसाकि–श्री जिस में रमण करती है. वह श्रीराम है. अधिकरण में यहाँ घञ् प्रत्यय हुआ है, श्रीको जो रमण कराता है वह श्रीराम है 'राम रमण कराने वालों में वर यानी श्रेष्ठ है' इस महर्षिवाल्मीकि जी के वचन से यह निरुक्ति अनुकूल है यानी सार्थक है, इस तरह निरुक्ति श्रीराम शब्द स्पष्ट रूप से श्रीरामजी का श्रीरमयितृत्व समझाता है, न कि नारायण आदि नामों की निरुक्ति से किसी का श्रीरमणत्व सिद्ध होता है, जैसे कि श्री यानी शोभमान नारा जल अयन है जिसकी वह श्रीनारायण है, अथवा तत्त्व जिसके अयन है वह श्रीनारायण हैं। श्री को जो व्याप्त करता है वह श्रीविष्णु है 'विष्लृ व्याप्तौ' श्री में जो वास करता

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

श्रीसहितो विष्णुः श्रीविष्णुः श्रीसहितो वासुदेवः श्रीवासुदेवः श्रीसहितो हरिः श्रीहरिः, श्रीविशिष्टः कृष्णः श्रीकृष्णः, एवं नामान्तरेष्वपि ज्ञेयम् । इदृशी व्युत्पत्तिरुपपद्यते । अनयाऽपि निरुक्त्या नारायणादीनां श्रीरमयितृत्वं नोपपद्यते, किन्तु श्रीविशिष्टत्वमेवेति न कथञ्चिद्भगवन्नामान्तरं स्ववाच्यस्य श्रीरमयितृत्वबोधने शक्तम्, सौन्दर्यगुणसागरत्वन्तु श्रीरामस्य 'सर्वं संहननं लक्ष्मीं सौकुमार्यं सुवेषताम् । ददृशुर्विस्मिताकारा रामस्य वनवासिनः । रूपौदार्यगुणैः पुंसां दृष्टिचित्तापहारकम्" इत्येवमादि श्रीमद्वाल्मीकिवचनात् 'पुरा

है वह वासुदेव है, । श्री का हरण जो करता है वह श्री हरि है । श्री को जो खिचता है वह श्रीकृष्ण है' ये सब व्युत्पत्तियाँ सिद्ध नहीं होती हैं, और नारायण आदिओं का श्रीरमयितृत्व नहीं समझाती है किन्तु देवपूजक ब्राह्मण देव ब्राह्मण यहाँ जैसे मध्यम पद लोपी समास होता है, वैसे श्रीसहित विष्णु श्रीविष्णु श्रीसहित वासुदेव श्रीवासुदेव, श्रीसहित हरि श्रीहरि, श्रीविशिष्ट कृष्ण श्रीकृष्ण ऐसे दूसरे नामों में समझना चाहिये, ऐसी व्युत्पत्ति सिद्ध होती है, इस निरुक्ति से भी नारायण आदियों का श्रीरमयितृत्व नहीं सिद्ध होता है किन्तु श्रीविशिष्टत्वं ही सिद्ध होता है, यह किसी प्रकार से भगवान् का दूसरा नाम स्ववाच्य का श्रीरमयितृत्व समझाने में समर्थ नहीं होता है । श्रीरामजी का सौन्दर्यगुणसागरत्व तो सर्वचित्ताकर्षक रूप शरीर का सुगठित स्वरूप तथा कान्ति और सौकुमार्य तथा सुन्दर वेष वालापन को ये सब श्रीरामजी के वनवासी ऋषियों ने बिस्मयपूर्वक देखे रूप की उदारता यानी महत्ता के गुणों से पुरुषों के दृष्टि—मनों का हरण करने वाले श्रीरामजी को देखे इत्यादि श्रीमद्वाल्मीकि वचन

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

महर्षयः सर्वे दण्डकारण्यवासिनः । दृष्ट्वा रामं हरिं तत्र भोक्तुमैच्छन् सुविग्रहम् ।' इति श्रीव्यासवचनादवगम्यते श्रीरामसौन्दर्याधिक्यं दण्डकारण्यमहर्षिगणमोहकत्वाद वगम्यते यथा न तथा तदन्यसौन्दर्यस्य पुंसां तत्रापि तपस्विनां मोहकत्वे कुत्रापि किञ्चित् प्रमाणमुपलभ्यते । सर्व-गुणसागरत्वं तु रामस्य 'स च सर्वगुणोपेतः कौसल्यानन्द वर्धन' इत्येवमादिभ्यः श्रीमद्रामायणवचनेभ्योऽवगम्यते, तस्माद्श्रीरामादन्यस्य श्रीरमयितृत्व-सौन्दर्यगुणसागरत्वाश्रव-णात्तदनुपपत्तेश्च तदन्यमन्त्राणां श्रीराममन्त्रसमत्वं प्रतिषेधितं

से 'पहले श्रीरामजी के वनवास काल में सब दण्डक वनवासी महर्षियों ने सुन्दर वेष वाले शरीर वाले हरि श्रीरामजी को देख कर स्पर्शरूप भोग करने की इच्छा की' इस व्यासजी के वचन से ज्ञात होता है कि–श्रीरामजी बहुत सुन्दर थे । श्रीरामजी के सौन्दर्यगुण का अधिकपना दण्डकारण्य के महर्षि समूह के मोहक पना से मालूम होता है, जैसे वैसे उनसे अन्य के सौन्दर्य को पुरुषों को वहाँ तपस्वियों के मोहकत्व में कहीं भी कुछ प्रमाण नहीं उपलब्ध होता है । श्रीरामजी का सौन्दर्यगुणसागरत्व तो कौसल्याजी के आनन्द बढाने वाले' वे श्रीरामजी सभी गुणों से युक्त हैं इत्यादि श्रीवाल्मीकिजी के वचनों से ज्ञात होता है इस कारण से श्रीरामभिन्न में श्रीरमयितृत्व और सौन्दर्यगुणसागरत्व के नहीं सुनने से उनकी असिद्धि से भी श्रीरामजी से भिन्न के मन्त्रों का श्रीराम मन्त्र तुल्यत्व हारीत ने प्रतिषेधित किया है । और पद्मपुराण में व्यासजी ने श्रीरामनाम के तत्स्वरूप षडक्षर मन्त्र के विष्णु आदि नामों से अनेक गुणाधिक्य की उक्ति से

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हारीतेन। तथा पद्मपुराणे व्यासेन रामनाम्नस्तदा ऽकस्य षडक्षरमन्त्रस्य च विष्ण्वादिनामभ्योऽनेकगुणाधिक्योक्त्या सर्ववेदसर्वमन्त्र जपफलाच्च श्रीरामनामजपफलस्य कोटिगुणाधिक्योक्त्या च श्रीराममन्त्राद् (मन्त्रेण) विष्ण्वादिमन्त्राणाम समत्वं बोधितं भवति 'विष्णोरेकैकनामैव सर्ववेदाधिकं मतम्। तादृङ्नामसहस्रैस्तु रामनामसमं मतम् ॥' जपतः सर्ववेदांश्च सर्वमन्त्रांश्च पार्वति १। तस्मात् कोटिगुणं पुण्यं रामनाम्नैव लभ्यते' ॥ अगस्त्येनापि श्रीरामन्त्रसमत्वं मन्त्रान्तराणां प्रतिषेधितम्–'शान्तः प्रसन्नोवरदोह्यक्रोधो

और सब वेद सब मन्त्रों के जप के फल से श्रीरामनाम के फल से कोटिगुणाधिक्य की उक्ति से श्री श्रीराममन्त्र को विष्णु आदि मन्त्रों का असमानत्व बोधित होता है, 'विष्णु का एक एक नाम सब वेदों से अधिक स्वीकृत हुआ है, वैसे विष्णु के हजारों नाम से श्रीरामनाम तुल्य माना गया है' शिवजी ने पार्वतीजी के प्रति कहा कि–हे श्रीपार्वतीजी ! 'सब वेदों को और सब मन्त्रों को जपने वाले को जो फल होता है, उससे कोटि-गुणा अधिक पुण्य श्रीरामनाम से ही प्राप्त होता है' अगस्त्य जी ने श्री श्रीराम मन्त्र से अन्य मन्त्रों का श्रीराम मन्त्र समानत्व का प्रतिषेधित किया है, 'शान्त प्रसन्न तथा वरद अक्रोध और भक्तवत्सल राम ब्रह्म का मन्त्र है इसके समान मन्त्र जगत में कही भी नही है' पद्मपुराण में भगवद् भिन्न देवताऽन्तर मन्त्र के अवलम्बन करने वालों का एवं षडक्षर मन्त्रावलम्बन न करने वाले का मूर्खत्ना शिवजी ने कहा है–'हे महा बाहो. ? विभो ? यह षडक्षर महामन्त्र मन्त्रों में चिन्तामणि है. इसे छोडकर विमूढात्मा जन इधर उधर घूमता है' वैसे ही श्रीरामतापनीय श्रुति

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भक्तवत्सलः । अनेन सदृशोमन्त्रो जगत्स्वपि न विद्यते' ॥ इति । स्कन्दपुराणे शिवेन षडक्षरं विहाय भगवद्भिन्नदेवतान्तरमन्त्रावलम्बिनाम् मूर्खत्वमुक्तम्—'अचिन्त्योऽयं महात्राहो ! मन्त्रचिन्तामणिर्विभो । विहायैनं विमूढात्मा इतश्चेतश्च धावति ॥ इति । तथैव रामतापनीयाश्रुतिरपि 'गर्भजन्मजरामरण संसारमहद्भयाद् यस्मात्तारयति तस्मादुच्यते तारकमित्येषा तारकस्य गर्भजन्मादिभ्यस्तारकत्वेनतारकमित्यन्वर्था संज्ञां प्रकाश्य सर्वेषां भगवन्मन्त्राणां संसार निवृत्तिपूर्वकमोक्षप्रदानसामर्थ्यसमत्वेऽप्यस्य मन्त्रस्य झटिति संसारतारणशक्तिस्तेभ्योऽधिकेति सूचितम् । श्रुतिस्मृतिषु च यथा षडक्षरस्य तारकब्रह्मेति संज्ञा श्रूयते, तथाऽन्यमन्त्राणां न श्रूयते । केषांचित् तारेति तारकेतिमात्रसंज्ञाश्रवणात्, यतः षडक्षरतारकादन्ये मन्त्रानैवंविधा अतोऽन्यमन्त्रनिचयं विहाय

भी कहती है—'जो षडक्षर श्रीराममन्त्र गर्भ जन्म जरामरण और संसार के बडे भय से तारता है यानी पार करता है, उससे तारक कहलाता है. यह श्रुति है । तारक की गर्भ जन्म आदि के भय से तारकपना से 'तारक' यह अन्वर्थ संज्ञा प्रकाशित कर सब भगवान् के मन्त्रों के संसार निवृत्तिपूर्वक मोक्ष प्रदान में सामर्थ्य के समानत्व रहने पर भी इस षडक्षर श्रीराम मन्त्र की शीघ्र संसार तारण शक्ति उन मन्त्रों से अधिक है, यह सूचित हुआ । श्रुति और स्मृतियों में भी जिस प्रकार से षडक्षर श्रीराम मन्त्र की 'तारक ब्रह्म' यह संज्ञा सुनी जाती है, उसप्रकार से दूसरे मन्त्रों की नहीं सुनी जाती है, केवल तार और तारक इस संज्ञा के श्रवण होने से । क्योंकि षडक्षर तारक से भिन्न

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

श्रीरामप्राप्तिकामैः तदेव तारकमुपास्यम् ज्ञेयं चेत्याह द्वितीया रामतापनीया श्रुतिः-'एतदेवोपास्यमिति ज्ञेयं चेत्येषा' अत्रैवकारेण तारकादन्यस्योपास्यत्वं ज्ञेयत्वं च व्यवछिनत्ति इतिवाक्यद्वयेन तारके उपास्यत्वं ज्ञेयत्वञ्च परिसमापयति श्रुतिः ।

एवं मन्त्रार्थोऽपि कृत्स्नः, उपनिषदन्तरश्रुतिभिः कस्यापि मन्त्रस्य नोक्तः, येन स्मृतयस्तदुक्तार्थं वदन्तु, अतः स्मृतिदृष्टोऽपि मन्त्रस्यार्थः श्रुत्यमूलकत्वेन न प्रमाणत्वमेति, श्रीरामतापनीयश्रुतिभिस्तु कृत्स्नोऽपि श्रीराममन्त्रार्थः उक्तः 'क्रियाकर्मेज्यकर्तृणामर्थं मन्त्रो वदत्यथ । मननात् त्राणना-

मन्त्र इस प्रकार के नहीं हैं इस कारण से दूसरे मन्त्रों का समूह छोडकर श्रीरामजी की प्राप्ति की इच्छा वालों को वही तारक उपासनीय है. और ज्ञातव्य है. यह दूसरी रामतापनीय श्रुति कहती है-'यही उपास्य और ज्ञेय है' इसप्रकार श्रुति हैं, यहाँ एव कार तारक से अन्य मन्त्र का उपास्यत्व और ज्ञेयत्व का व्यवच्छेद करता है यानी निराकरण करता है' इस वाक्यद्वय से तारक षडक्षर श्रीराम मन्त्र में उपास्यत्व और ज्ञेयत्व को श्रीराम तापनाय श्रुति अन्तिम सिद्धान्त के रूप में संस्थापित करती है ।

'एवं मन्त्रार्थोऽपिकृत्स्न' इत्यादि-इस पूर्वोक्त प्रकार से किसी मन्त्र का अर्थ भी पूर्णतया दूसरी उपनिषत् श्रुतियों में किसी मन्त्र का नहीं कहा हुआ है, जिससे स्मृतियां उससे कहे हुए अर्थ प्रतिपादित करें, इसकारण से स्मृति दृष्ट भी मन्त्रका अर्थ श्रुतिमूलक नहीं होने से प्रमाण नहीं हो सकता है, श्रीरामतापनीयोपनिषत् श्रुतियों ने तो पूर्णतया मन्त्रका अर्थ कहा है-"क्रिया

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

न्मन्त्रः सर्ववाच्यस्य वाचकः ॥ स्वभूर्ज्योतिर्मयोऽनन्तरूपी स्वेनैव भासते । जीवत्वेनेदमों यस्य सृष्टिस्थितिलयस्य च । कारणत्वेन चिच्छक्त्या रजः सत्त्वतमोगुणैः ॥ यथैव वट-बीजस्थः प्राकृतश्च महाद्रुमः । तथैव रामबीजस्थं जगदेत-च्चराचरम् ॥ रेफारूढा मूर्त्तयः स्युः शक्तयस्तिस्र एव च । इत्याद्याभिः । तत्र 'सर्वेषामेव मन्त्राणामेष साधारणः क्रमः' इत्येषा श्रुतिः । य एष श्रीराममन्त्रार्थस्य तद्बीजादि-न्यासस्य च क्रमः स सर्वेषां मन्त्राणां साधारणः क्रम इत्य-र्थिका, येन क्रमेण यो राममन्त्रस्यार्थ उक्तस्तेन क्रमेण स एव सर्वेषां मन्त्राणामर्थोऽज्ञेय इत्येतदर्थज्ञापनेन 'यथा सौम्यै-

कर्मेज्यकर्तृणामर्थं मन्त्रो वदत्यथ' इत्यादि से क्रिया कर्म इज्य और कर्ताओं का अर्थ मन्त्र यानी षडक्षर श्रीरामतारक मन्त्र कह-ता है. तो मन्त्र वह कहलता है जो मनन करने से त्राण यानी रक्षण करे जो सर्व वाच्य पदार्थका वाचक होता है. वह मन्त्र है। तथा स्वभूज्योतिर्मय है अनन्त यानी अन्त अर्थात् पार यानी विनाश से रहित ब्रह्म रूपित्वपना से स्वयं भासता है. और जीवत्व रूप से भासता है. जिसका रूप ॐ ऐसा है, और सृष्टि स्थिति और लयके कारण रूप होने से चिच्छक्ति से यानी चिदात्मक श्रीरामजी की श्रीसीतारूप स्वशक्ति से अर्थात् मूल प्रकृति स्वरूप प्रकृति के रज सत्त्व एवं तमो गुणों से जगत् के हेतु के स्वरूप में भासता है, जैसे वट के बीज में रहने वाला प्राकृत पुरोदृश्यमान वड़का वृक्ष रहता है, वैसे ही श्रीरामजी के बीज रां रूप में चराचर जगत् रहता है। रेफ में आरूढ यानी आश्रित तीन

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

केन मृत्पिण्डज्ञानेन सर्वं मृन्मयं विज्ञातं भवति' इति श्रुतिः कारणविज्ञानेन तत्कार्यमात्रस्य विज्ञानं भवतीति बोध्यते । तथैव षडक्षरतारकार्थविज्ञानेन सर्वेषां मन्त्राणामर्थस्य विज्ञानं भवतीत्यर्थबोधनेन षडक्षरस्य सर्वमन्त्रकारणत्वं ज्ञापयति । अत एव 'एतदेवोपास्यमिति' चैषा श्रुतिः मन्त्रान्तराणामुपास्यत्व ज्ञेयत्वं चैवकारेण व्यवच्छिद्यास्मिन्नेव मन्त्रे उपास्यत्वं ज्ञेयत्वं परिष्ठापयति । अत्र मन्त्रे क्रियापदमनन्योपायत्वं वदति कर्मपदमनन्यभोग्यत्वं वदति, इज्य-कर्म कर्तृ–पदमनन्यशेषत्वं वदति. तेनाकारत्रयसम्पन्नत्वं मन्त्रजपकर्तुर्ज्ञापितं भवति ।

किंचात्रेज्यपदेन सर्वजीवस्वामित्वशेषित्वरूपं श्रीरामस्य मूर्तियां ब्रह्मा विष्णु तथा शिवरूपा और उनकी शक्तियां सरस्वती लक्ष्मी तथा गौरी ये तीन हैं इत्यादि श्रुतियों से निरूपित हुआ है प्रकृत प्रसंग में सभी मन्त्रों का यह साधारण क्रम है ऐसी श्रुति है । अतः जो यह श्रीराममन्त्रार्थ का और उनके बीज आदियों के न्यास का क्रम है, वही क्रम सभी मन्त्रों का साधारण यानी सामान्य रूप से है. ऐसा अर्थ वाली श्रुति है तो जिस क्रम से श्रीराममन्त्र का अर्थ कहा गया है. उस क्रम से सभी मन्त्रों का अर्थ समझना चाहिये' इस अर्थ के समझाने से 'यथा सौम्यैकेन मृत्पिण्ड ज्ञानेन सर्वं मृन्मयं ज्ञातं भवति' हे सौम्य ? सरल (शिष्य) जैसे एक मिट्टी के पिण्ड के ज्ञान से सब मृत्पिण्ड विज्ञात होता है' यह श्रुति कारण के विज्ञान से कार्य मात्र का विज्ञान होता है' यह समझाती है, वैसे ही षडक्षर तारक मन्त्र के अर्थ के विज्ञान से सब मन्त्रों के अर्थ का विज्ञान होता है' इस अर्थ के बोधन से षडक्षर मन्त्र को सब मन्त्रों का कारण है ऐसा श्रुति समझाती है ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

स्वरूपं क्रियापदेन श्रीरामप्राप्त्युपायस्वरूपं कर्मपदेन तत्प्राप्तिफलस्वरूपमुक्तं भवति । तेन जीवस्य श्रीरामव्यतिरिक्ते स्वशेषित्वबुद्धिः परत्वरूपविरोधिनी भवति श्रीरामादुपायान्तरे उपायत्वबुद्धिरुपायस्वरूपविरोधिनी भवति, श्रीरामकैङ्कर्यादन्यत्रफलबुद्धिः फलस्वरूपविरोधिनी भवति । स्वनिष्ठा श्रीरामादेवतान्तरादेः शेषत्वबुद्धिः स्वरूपविरोधिनी भवति ।

इसी हेतु से 'एतदेवो पास्यमिति' यही उपासनीय है । ऐसी श्रुति है. यह दूसरे मन्त्रों का उपास्यत्व और ज्ञेयत्व का एवकार से निराकरण कर इसी मन्त्र में उपास्यत्व और ज्ञेयत्व की स्थापना करता है । इसमन्त्र में क्रिया पद अनन्योपायत्व अर्थात् दूसरा उपाय नहीं है किन्तु यही उपाय है ऐसा कहता है, कर्म पद अनन्य भोग्यत्व कहता है, इज्य पद कर्म तथा कर्तृ पद में अनन्यशेषत्व कहता है, इससे आकारत्रय सम्पन्नत्व अर्थात् अनन्य शरणत्व अनन्य शेषत्व एवं अनन्यभोग्यत्व मन्त्रजप कर्ता में ज्ञापित होता है । और इज्यपद से श्रीरामप्राप्त्युपायस्वरूप कर्मपद से उनकी प्राप्तिफल स्वरूप उक्त होता है, इससे जीवकी श्रीरामभिन्न में स्वशेषित्व बुद्धि परत्व रूप विरोधिनी होती हैं, श्रीराम से उपायान्तर में उपायत्व बुद्धि उपायस्वरूप विरोधिनी होती है श्रीरामकैङ्कर्य से दूसरे में फलबुद्धि फलस्वरूप विरोधिनी होती है, स्वनिष्ठा श्रीरामदेवतान्तर प्रभृति के शेषत्व की बुद्धि, स्वरूप विरोधिनी होती है, यह अर्थात् प्रकृत प्रसंग के अनुसन्धान से प्राप्त होता है, वे ये अर्थ मन्त्र के अतिशय जानने वालों को जानने योग्य हैं । ऐसा कहा है कि—'प्राप्यस्य ब्रह्मणो रूपं प्राप्तुश्च प्रत्यगात्मनः । प्राप्त्युपायं फलं प्राप्तेस्तथा प्राप्तिविरोधिनः । ज्ञातव्यमेतदर्थानां पञ्चकं मन्त्र वित्तमैः ।' प्राप्य ब्रह्म का स्वरूप

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

इत्यर्थत उपलभ्यते, त एतेऽर्था मन्त्रवित्तमैर्ज्ञातव्याः । तदुक्तम् 'प्राप्यस्य ब्रह्मणोरूपं प्राप्तुश्च प्रत्यगात्मनः । प्राप्त्युपायं फलं प्राप्तेस्तथा प्राप्तिविरोधिनः ॥ ज्ञातव्यमेतदर्थानां पञ्चकं मन्त्रवित्तमैः" इति । य एते मन्त्रस्य पञ्चविधा एव सर्ववेदेतिहासादिसारार्था भवन्तीत्यप्युक्तमभियुक्तैः 'प्राप्यस्य ब्रह्मणोरूपं प्राप्तुश्च प्रत्यगात्मनः । प्राप्त्युपाय फलं प्राप्तेस्तथा प्राप्तिविरोधिनः ॥ वदन्ति सकलावेदाः सेतिहासपुराणकाः । मुनयश्च महात्मनो वेदवेदान्तवेदिनः ।'

१, प्राप्तिकरने वाले प्रत्यगात्मास्थानीयजीव: २. ब्रह्मप्राप्ति का उपाय ३. फल ४ और ब्रह्म प्राप्ति के बिरोधी ५. जो मन्त्र के जानकारो में उत्तम हैं उनको इन पाचों का ज्ञान करना चाहिये । क्योंकि जो ये पांच प्रकार के मन्त्र के अर्थ हैं वे ही सब वेद इतिहास आदियों के सारभूत अर्थ हैं यह अभियुक्तों ने यानी हेयोपादेय धिषणाऽतिशयवाले विद्वानों ने कहा है जैसे "प्राप्यस्य ब्रह्मणो रूपं प्राप्तुश्च प्रत्यगात्मनः । वदन्ति सकला वेदाः सेतिहास पुराणकाः ॥ मुनयश्च महात्मानो वेदवेदान्तवेदिनः" इति ॥ प्राप्तव्य ब्रह्मका स्वरूप १ प्राप्ति करने वाले प्रत्यगात्मा २ ब्रह्म प्राप्ति का उपाय ३. ब्रह्म प्राप्ति का फल ४. ब्रह्मकी प्राप्ति के विरोधी यानी रोकने वाले ५. ये पांच इतिहास पुराणसहित सब वेद कहा करते हैं, और मुनियों महात्माओं वेद और वेदान्तको जानने वाले विद्वानों इन पांच अर्थों का प्रतिपादन किया करते हैं । इस कारण से जो जन श्रीरामजी के षडक्षर तारक महामन्त्र के अर्थ के ज्ञाता है, वह भी सब वेद इतिहास पुराण के सारभूत अर्थ का जानने वाला होने से शब्दात्मक ब्रह्म का ज्ञाता होता है वही शब्द ब्रह्म ज्ञाता जन जब मन्त्रोक्त स्वशेषी श्रीरामात्मक पर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

इति । अतो यः षडक्षरतारकमन्त्रार्थविद्भवति, सोऽपि सर्वो वेदेतिहासादिसारार्थवित्त्वेन शब्दब्रह्मविद्भवति, स एव यदा मन्त्रोक्तस्य स्वशेषिणो रामाख्यपरब्रह्मणोऽहं रामोऽस्मीत्येवं तत्त्वतस्तादात्म्यं भावयन् ब्रह्मणि नितरां तिष्ठतीति तदा ब्रह्मनिष्ठ इत्युच्यते, इत्येवं मन्त्रार्थविदः शब्दब्रह्मवित्त्वं परब्रह्मनिष्ठत्वं चेत्युभयमुपपद्यते इति तस्यैव मुख्यत्वेनाश्रयणीयत्वम् । 'तद्विज्ञानार्थं गुरुमेवाभिगच्छेत् श्रोत्रियं ब्रह्मनिष्ठमि'– त्याद्याः श्रुतयो वदन्ति । एवमेकया श्रुत्या सामान्येन मन्त्रार्थ उक्तः । एवं संक्षेपेण

ब्रह्म का 'अहं रामोऽस्मि में सर्वेश्वर श्रीरामजी का शेषभूत उन का दास हूं' इस प्रकार से तत्त्व से यानी याथार्थ्य से तादात्म्य की योनी श्रीरामरूपत्व की भावना करता हुआ श्रीराम ब्रह्म में अतिशय स्थित होता है तब वह श्रीराम–ब्रह्मनिष्ठ कहलाता है । इस प्रकार से मन्त्रार्थ ज्ञाता का शब्द ब्रह्म ज्ञातृत्व एवं परब्रह्म ज्ञातृत्व यह उभय सिद्ध होता है । इससे उसी का प्रधान रूप से आश्रयणीयत्व है, यह भी बोधित होता है 'तद्विज्ञानार्थं गुरुमेवाभिगच्छेत् श्रोत्रियं ब्रह्मनिष्ठम्' उस ब्रह्मको जानने के लिये गुरु के पास जाय जो गुरु श्रोत्रिय यानी वेदपाठी और ब्रह्मनिष्ठ योनी ब्रह्म में अतिशय निष्ठापूर्वक रहने वाला हो उस गुरु के अभिमुख जाय । इत्यादि श्रुतियाँ कहती हैं, इस प्रकार एक ही श्रुति ने सामान्यतया मन्त्र का अर्थ प्रतिपादित किया । इस तरह संक्षेप से मन्त्र का सच्चिदानन्द परब्रह्म स्वरूप वाचक पना से उस श्रीरामषडक्षर तारक मन्त्र की प्रधानता प्रकाशित कर अर्थ विशेष से मन्त्रार्थ का प्रतिपादन करती हुई आदि में अग्निबीज और वह्नि बीज का वाच्य श्रीराम

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मन्त्रार्थं मन्त्रस्य च सच्चिदानन्दपरब्रह्मस्वरूपवाचकत्वेन तन्मुख्यकत्वं प्रकाश्यार्थविशेषतो मन्त्रार्थं वदन्ती आदौ वह्निबीज–तद्वाच्यरामयोः स्वप्रकाशज्योतिर्मयस्वरूपं प्रकाशयन्ती तयोः सृष्ट्यादिकारणत्व ज्ञापनद्वारा जगद्रामयोः शेषशेषिभावं ज्ञापयति । 'स्वभूर्ज्योतिर्मयोऽनन्तरूपीत्वेनैव भासते । जीवत्वेनेदमोंयस्य सृष्टिस्थितिलयस्य च ।। कारणत्वेन चिच्छक्त्या रजः सत्त्वतमोगुणैः । इत्येषा श्रुतिः ।

जी का सृष्ट्यादिकारणत्व के ज्ञापन के द्वारा जगत् और श्रीरामजी का शेष–शेषिभाव ज्ञापित करती है, 'स्वभूर्ज्योतिर्मयोऽनन्तरूपित्वेनैव भासते । जीवत्वेनेदमों यस्य सृष्टिस्थितिलयस्य च ।। कारणत्वेन चिच्छक्त्यारजः सत्त्वतमो गुणैः । इत्येषा श्रुतिः–यह श्रुति है । स्व भू योनी अपने से सिद्ध ज्योतिर्मय–यानी स्वप्रकाश चिन्मय अनन्तरूपी अर्थात अपरिच्छिन्न रूपी अर्थात अनन्त रूपधारी अपने से ही भासमान होता है. यानी खुद प्रकाशरूप, सूर्य चन्द्र आदि के समान अपने से भिन्न प्रकाश्य से प्रकाशित नहीं । इस प्रकार से जीव स्वरूप कहकर उसका प्रणवकारणत्व दिखाती हुई सृष्टिस्थिति प्रलय कारणत्व कहती है, ''जीवत्वेनेदमों यस्य' इत्यादि शब्द प्रपञ्च से जिस वह्नि बीजको जीवत्वसे जीव का अर्थ है. जो जिलाता है वह जीव है उसका भाव जीवत्व उस जीवत्व से यानी स्फोटत्व से यह ओंकार रूप जगत् होता है जो चिच्छक्ति से यानी श्रीसीता रूप माया से 'सर्वाभरणया चिता' इससे श्रीजानकीजी के चिद्रूपत्व की श्रुति से रजः सत्त्व तमो गुणों से सृष्टिस्थितिलय के कारण रूपा होनेसे श्रीसीताचिच्छक्ति कहलाती है ऐसा समझना चाहिये । श्रीसीताजी के द्वारा श्रीरामजी का जगत्सृष्टि स्थिति तथा लय कर्तृत्व सुना जाता है श्रीरामताप-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

स्वभूः—स्वतः सिद्धः, ज्योतिर्मयः- स्वप्रकाशचिन्मयः, अनन्त रूपी—अपरिच्छिन्नरूपी-अनन्तरूपधारी सर्वावतारीस्वेनैवभासते स्वयंप्रकाशरूपः । न सूर्यादिवत् स्वान्यप्रकाश्यप्रकाशित इत्यर्थः । एवं बीजस्वरूपमुक्त्वा तस्य प्रणवकारणत्वं दर्शयन् सृष्टयादिकारणत्वमाह- 'जीवत्वेनेदमोंयस्ये' 'त्यादिना । यस्य वह्निबीजस्य जीवत्वेन—जीवयतीति जीवस्तस्य भावोजीवत्वम्, तेन जीवत्वेन- स्फोटकत्वेन इदमोंकाराक्षरं चिच्छक्त्यारजः सत्वतमोगुणैर्जगत्सृष्टयादिकारणत्वेनावतिष्ठत इतिशेषः ।

नीय में 'श्रीरामसान्निध्यवशज्जगदानन्द दायिनी । सृष्टिस्थिति संहारकारिणी सर्व देहिनाम ।। सा सीता भगवती ज्ञेया मूलप्रकृति संज्ञिका । प्रणवत्वात् प्रकृतिरिति वदन्ति ब्रह्मवादिनः । इति । श्रीराम जी के सान्निध्यवश से जगत् को आनन्द देनेवाली, सृष्टि स्थिति और सब प्राणियों के संहार को करने वाली उस श्रीसीताजी को भग वती मूल प्रकृति नामसे जाननी चाहिये, प्रणव रूप होने से ब्रह्मवादी जन उसे प्रकृति कहा करते हैं । इससे वह श्रीसीताजी चित्स्वरूपा है । न कि श्रीसीताजी जड प्रकृति रूपा हैं । "हेमाभया द्विभुजया सर्वालङ्कारया चिता । श्लिष्टः कमलधारिण्या संजुष्ट कोशलात्मजः" सुवर्ण कान्ति यानी गौरवर्णा दोहाथ वाली सब भूषणवाली कमल- धारिणी चित से श्लिष्ट यानी आलिङ्गित और संसेवित कोशलात्मज श्रीरामचन्द्रजी हैं, इस तापनीय श्रुति में उक्त श्रीसीताजी के चिद्रूप त्व के श्रवण से श्रीसीताजी जड प्रकृति रूप नहीं हैं । किन्तु चिदा त्मिका ही हैं । उस हेतु से इस प्रकार जगत्सृष्टि स्थिति तथा संहार कर्तृत्व से वह्निबीज और वन्हिबीज वाच्य श्रीरामजी का जगत्स्वा- मित्व और जगत्का श्रीरामशेषत्व सिद्ध होता है क्षेत्र क्षेत्रिन्याय से । जैसे किसी क्षेत्र वाले को क्षेत्र में बीज के वपन से चयन

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

चाच्यपक्षे यस्य रामस्य जीवत्वेनेदमोङ्कारात्मकं जगद्वर्तते यश्च चिच्छक्त्या–श्रीसीताख्यया 'सर्वाभरणया चिते'ति जानक्याश्चिद्रूपत्वश्रुतेः । रजः सत्वतमोगुणैः सृष्टिस्थितिलययस्य च कारणत्वेन तिष्ठतीत्येवं योज्यम् । श्रीसीता द्वारा श्रीरामस्य जगत्सृष्टयादिकर्तृत्वं श्रूयते, श्रीरामतापनीये 'श्रीरामसान्निध्यवशाज्जगदानन्ददायिनी । सृष्टिस्थिति संहारकारणी सर्वदेहिनाम् ॥ सा सीता भगती ज्ञेया मूलप्रकृतिसंज्ञिका ॥ प्रणवत्वात् प्रकृतिरिति वदन्ति ब्रह्मवादिनः ।' इति सेयं सीता चिदात्मिकाऽस्ति ।

नतु जडप्रकृतिरूपा 'हेमाभया द्विभुजया सर्वालङ्कारया चिता । श्लिष्टः कमलधारिण्या संजुष्टः कोसलात्मजः ।'

और काटना रूप व्यापार करने पर यह इस क्षेत्र का स्वामी है यह दूसरों से निश्चित किया जाता है वैसे जगत् के सृष्टि स्थिति एवं संहार व्यापारों से ये श्रीरामजी इस जगत के स्वामी हैं इस प्रकार के निश्चय से जगत् और श्रीरामजी का शेषशेषिभाव श्रुति से अतिशय रूप से अर्थात् स्पष्ट ज्ञात होता है ।

यहाँ जिज्ञासा होती है कि–वह्निर्बीज का कुम्भकारादि के जैसे जगत्स्रष्टृत्व राजादि के समान जगत्पालकत्व भी सिद्ध होता है किन्तु जगत् का लयस्थानत्व अल्प वह्नि बीज का महत्परिमाण वाले जगत् के आधार पना की अनुपपन्नता है यानी सिद्ध नहीं हो सकता है इस शंका को मन में लेकर उत्तर किया जाता है कि 'यथैव वट बीजस्थः प्राकृतश्च महाद्रुमः । तथैव रामबीजस्थं जगदेतच्चराचरम् । जैसे प्राकृत–पुरोदृश्यमान बडा वट वृक्ष वट

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

इति तापनीये तस्याश्चिदात्मकत्वश्रवणात् । तदेवं जगत्सृष्टया दिकर्तृत्वेन वह्निबीजस्य तद्वाच्यस्य श्रीरामस्य जगत्स्वामित्त्वं जगतस्तच्छेषत्वं च निष्पद्यते क्षेत्रक्षेत्रिन्यायेन यथा कस्मिश्चित् क्षेत्रिणि क्षेत्रे आवपति सिञ्चति कृन्तति चायमस्य क्षेत्रस्य स्वामीत्यपरैर्निश्चीयते, तथा जगत्सृष्टयादिव्यापारैरयं रामोऽस्य जगतः स्वाम्यस्तीति निश्चयात् जगद्रामयोः शेषशेषिभावः श्रुत्याऽवगततरः ।

ननु वह्निबीजस्य च कुलालादिवज्जगत्स्रष्टृत्वं राजादिवत् तत्पालकत्वं चोपपद्यते न तु तल्लयस्थानत्वं तस्याल्पपरिमा-

के बीज में सूक्ष्मरूप से रहता है, वैसे ही श्रीरामजी के 'रां' बीज में यह चराचर जगत् रहता है । इस श्लोक में चकार अश्वत्थ वृक्षादि के संग्रहार्थ है । अब बीज का उद्धार करता हुआ आगे पुनः यहाँ जिज्ञासा होती है कि जगत्सृष्टि स्थिति एवं संहार कर्तृत्व ब्रह्मा विष्णु तथा महेश्वरों का सुना जाता है, इससे क्षेत्र क्षेत्रिन्याय से ब्रह्मादियों का भी जगत्स्वामित्व सिद्ध होता है, इस कारण से जगन्निष्ठशेषत्व—निरूपित तच्छेषित्व के श्रीराम ब्रह्मा विष्णु—महेश्वर साधारणत्व की सिद्धि हो जाने से श्रीरामानन्यशेषत्व रूप जगन्निष्ठत्व सिद्ध नहीं होता है. ऐसी शंका कर ब्रह्मादियों के भी श्रीरामवाचक रेफाश्रितत्व के दर्शन होने से रेफवाच्य श्रीरामानन्यशेषत्व सूचित करता हुआ ब्रह्मादियों के श्री रामशेषत्व विशिष्ट राम परतन्त्रत्व होने से जगत्सृष्ट्यादियों से जगत्स्वामित्व है न कि स्वातन्त्र्य रूप से ऐसा कहता है, 'रेफारूढाः' इत्यादि वचन । रेफ यानी र रूपवर्ण उसके ऊपर आरूढ वृक्षारूढ वानर वृक्षाधारवत् रेफारूढत्व से रेफाधारता से रेफाश्रितत्व होने से रेफशेषभूत अकार द्वय और मकार ये ब्रह्मा विष्णु तथा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

णवतो महत्परिमाणवज्जगदाधारत्वानुपपत्तेरित्याशङ्कयाह "यथैव वटबीजस्थः प्राकृश्च महाद्रुमः । तथैव रामबीजस्थं जगदेतच्चराचरमं' इति यथा प्राकृतो महाद्रुमो बहुशाखा-पल्लववान् वटवृक्षो ह्रस्वपरिमाणवटबीजस्थः चकारोऽश्व-त्थादीनां समुच्चयार्थः । तथैव रामाभिन्नं बीजं तत्र तिष्ठतीति रामबीजस्थम् एतच्चराचरं जगदस्तीत्यर्थः । अथ बीजमुद्धरन्-

ननु जगत्सृष्टयादिकर्तृत्वं ब्रह्मविष्णुमहेश्वराणां श्रूयते अतः क्षेत्रक्षेत्रिन्यायेन तेषामपि जगत्स्वामित्वमुपपद्यते, इत्यतो जगन्निष्ठशेषत्वनिरूपितस्य तच्छेषित्वस्य श्रीरामब्रह्मविष्णु-

महेश्वर वाचक तीनों वर्ण तदुपलक्षित तद्वाच्य ब्रह्मा विष्णु तथा महेश्वर हैं, उनकी तीन शक्तियाँ होगी उनका भी यहाँ मूर्ति पद ग्रहण से सशक्तिक ब्रह्मादियों का ही रेफारूढत्व कथित होता है । न कि ब्रह्मादि भिन्न देवता का रेफारूढ रूप से कथित होता है, किस कारण से ? तो 'शक्तयस्तिस्रः' इस वचन से शक्तियों के त्रित्व की उक्ति होने से तच्छक्तिमान् देवों के भी त्रित्व की सिद्धि हो जाती है क्योंकि ब्रह्मादि भिन्न देवों में त्रित्व के अश्र वण होने से ब्रह्मादियों के ही रेफारूढत्व के कथन रेफशेषत्व ज्ञापित होता है, 'रकाराज्जायते ब्रह्मा रकाराज्जायते हरिः । रकारा-ज्जायते शम्भू रकारात सर्वशक्तयः ॥ यह 'रेफारूढाः' इसे श्रुति का उपबृंहण यानी समर्थक पुलहसंहिता का वचन है. जिससे रकार में स्थित ब्रह्मादियों की रकार से उत्पत्ति कहता हुआ रकार को ब्रह्मादियों का लय स्थानत्व सूचित करता हुआ क्षेत्र क्षेत्रिन्याय से रकारशेषत्व सशक्तिक ब्रह्मादियों का समझाता है, इससे सिद्ध होता है कि 'मूर्तयः' यह पद ब्रह्मा विष्णु तथा महेश्वर परत्व है इस प्रकार से रेफ का ब्रह्मादि सृष्टि आदि कर्तृत्व होने से

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

महेश्वरसाधारणत्वोपपत्तेर्न रामानन्यशेषत्वस्य जगन्निष्ठत्व मुपपद्यते इत्याशङ्क्य ब्रह्मादीनामपि श्रीरामवाचक–रेफाश्रित त्वदर्शनेन रेफवाच्यरामानन्यशेषत्वं ज्ञापयन् ब्रह्मादीनां श्रीरामशेषत्वे सति तत्परतन्त्रत्वेन जगत्सृष्टयादिभिर्जगत्स्वामित्वं न स्वातन्त्रेणेत्याह–'रेफारूढ़ा इति । रेफारूढा मूर्तयः स्युः शक्तग्तिस्र एव च '' इति । रेफोरवर्णस्तमारूढा वृक्षारूढा वानरा वृक्षाधारा इव रेफारूढत्वेन रेफाधारतया रेफाश्रितत्वेन रेफशेषभूता अकारद्वयं मकारश्चेति ब्रह्मविष्णुमहेश्वरवाचकास्त्रयो वर्णास्तदुपलक्षिता

आदि–सृष्टि कर्तृत्व सर्वेश श्रीरामचन्द्रजी में है । ब्रह्मादियों का तो रेफाश्रितत्व से रेफाश्रितता से रेफपारतन्त्र्य होने से रकार के शेषत्व रूपसे अवान्तर सृष्ट्यादि कर्तृत्व का कथन कर तत्कृत सृष्ट्यादि कोटिगत का सब जगत् का रेफ और रेफवाच्य श्रीरामानन्यशेषत्व एवं रेफ तथा तदभिन्न श्रीरामजी का तच्छेषित्व श्री रामशेषिपना समझा कर ब्रह्मादि जगत् और श्रीरामजी का शेषशेषिभाव वह्नि बीज का अर्थ ज्ञापित होता है । इस प्रकार से 'स्वभूर्ज्योतिर्मयः' इस श्रुति से वह्निबीज का स्वप्रकाश ज्योतिर्मय स्वरूपत्व है । 'यथैव वटबीजस्थः' इस श्रुति से श्रीरामाख्य पर ब्रह्मविष्णु महेश्वरादिमय वह्निबीज का चराचर जगत्कारणत्व 'रेफारूढा मूर्तयः' इस श्रुति से रेफ के सर्वजगत्कारणत्व के निर्देश से रेफ का ब्रह्मादि सर्वजगच्छेषित्व और ब्रह्मादियों का रेफशेषत्व बतला कर अब रेफ और श्रीराम के तादात्म्य रूप सम्बन्ध से वाच्य वाचकत्व बतलाता हुआ श्रीसीताराम के रेफवाच्यत्व की सिद्धि के लिए वहां रेफसाधर्म्य जगत्कारणत्व समझाने के लिये श्रीसीताराम का सर्वजगत्कारणत्व कहते हैं–'श्रीसीतारामौ

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

स्तद्वाच्या ब्रह्मविष्णुमहेश्वरास्तेषां शक्तयस्तिस्त्रः स्युः । अत्र मूर्तिपदग्रहणेन च ब्रह्मादीनामेव सशक्तीनां रेफारूढत्वमुक्तं भवति न देवतान्तराणां तदारूडत्वम्, कुतः ? शक्तयस्तिस्त्र इति शक्तीनां त्रित्वोक्त्या तच्छक्तिमतामपि त्रित्वोपपत्त्या ब्रह्मादिव्यतिरिक्तदेवतात्रित्वाश्रुत्या च तेषामेव रेफारूढत्व कथनेन रेफशेषत्वं ज्ञापितं भवति, "रकाराज्जायते ब्रह्मा रकाराज्जायते हरिः । रकाराज्जायते शम्भू रकारात्सर्वशक्तयः" इति । 'रेफारूढा' इति श्रुत्युपवृंहणभूतं पुलह संहिता वचनं यतो रकारे स्थितानां ब्रह्मादीनां रकारादुत्पत्ति वदद् रकारस्य तल्लयस्थानत्वं ज्ञापयत् क्षेत्रक्षेत्रिन्यायेन रकार

तन्मयावत्र पूज्यौ जातान्यभ्रयां भुवनानि द्विसप्त । स्थितानि च प्रहृतान्येव तेषु ततो रामो मानवो माययाऽधात् ।' इस मन्त्र में श्रीसीताराम तन्मय यानी रेफमय अर्थात् तादात्म्य से रेफवाच्य पूजनीय समझना चाहिये, पूजधातु यहाँ ज्ञानार्थक है धातुओं का अनेकार्थत्व होने से । यहाँ तत् शब्द 'रेफारूढाः' इस श्लोक का अव्यवहित रेफ का परामर्शक है न कि व्यवहित का । वैसे ही 'रामवीजस्थम्' इस रेफ का परामर्शक है । इन श्रीसीतारामों में नीचे के सात और सात उपर के ये चौदह भुवन उत्पन्न स्थित और लीन होते हैं, इससे जगत्सृष्ट्यादि व्यापारों से क्षेत्र क्षेत्रिन्याय से श्रीसीतारामों का जगच्छेषित्व और जगत् का उन का शेषत्व ज्ञापित होता है, इसके वाद उन जगतों के उत्पन्न होने पर श्रीरामजी आत्मा को उनमें प्रविष्ट कराये, अर्थात् उन भुवनों में श्रीरामजी अन्तरात्मा के रूपमें प्रविष्ट हुये । 'तत्सृष्ट्वा तदेवानुप्राविशत्' इस दूसरी श्रुति से यह वोधित होता है कैसे श्रीरामजी मानव-मा-प्रभा उससे नव यानी नवीन अर्थात् पुरातन

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

शेषत्वं ब्रह्मादीनां सशक्तिनां बोधयति अत उपपद्यते 'मूर्तय' इति पदस्य ब्रह्मविष्णुमहेशपरत्वं तदेवं रेफस्य ब्रह्मादिसृष्ट्यादि कर्तृत्वेनादि सृष्टिकर्तृत्वम्, ब्रह्मादीनां तु रेफाश्रितत्वेन रेफपरतन्त्रतया तच्छेषत्वेनावान्तरसृष्ट्यादिकर्तृत्व निर्दिश्य ब्रह्मादीनां तत्कृतसृष्ट्यादि कोटिशतस्य कृत्स्नस्य जगतश्च रेफतद्वाच्यरामानन्यशेषत्वं रेफरामयो स्तच्छेषित्वं च निबोध्य ब्रह्मादिजगतः श्रीरामस्य च शेषशेषिभावो वह्निबीजस्यार्थो ज्ञापितो भवतीत्यर्थः । तदेवं 'स्वभूर्ज्योतिर्मय' इत्यनया श्रुत्या वह्निबीजस्य स्वप्रकाशज्योतिर्मयश्च रूपत्वम् । 'यथैव वटबीजस्थ' इत्यनया श्रुत्या श्रीरामाख्य परब्रह्मविष्णुमहेश्वरादिमयस्य वह्निबीजस्य चराचर जगत्कारणत्वं 'रेफारूढा मूर्तय' इत्यनया श्रुत्या रेफस्य सर्व

भी प्रभा से नव अवयव वाले यह मानव शब्द का अर्थ है । 'माया वयुनं ज्ञानम्' इस शास्त्र वचनानुसार ज्ञानस्वरूप से श्री रामचन्द्रजी अपने से सृष्ट जगत् में प्रविष्ट हुये । क्योंकि यहाँ ज्ञानपर्याय माया शब्द है । अथवा 'अमायया' ऐसा बिच्छेद है स्वमाया से यानी मायालेश रहिततपना से मानव यानी मनुष्याकार पर वस्तुतः सच्चिदानन्दस्वरूप श्रीरामजी यह मानव शब्द का अर्थ है ।

चिन्मय उस महाविष्णु श्रीहरि के श्रीदशरथजी के यहाँ रघुकुल में उत्पन्न होने पर जो सब देते हैं और जो पृथ्वी में स्थित हो विराजमान होते हैं वे श्रीरामजी हैं इस शब्द से लोकों में विद्वानों से प्रकाशित किये गये हैं । जिस अनन्त सत्यानन्द

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

जगत्कारणत्वनिर्देशेन रेफस्य ब्रह्मादि सर्वजगच्छेपित्वं ब्रह्मादीनां च तच्छेपत्वं निर्दिश्य अथ रेफरामयोस्तादात्म्यसम्बन्धेन वाच्यवाचकत्वं निर्दिशन् सीतारामयो रेफवाच्यत्वोपपत्तये तत्र रेफसाधर्म्यं जगत्कारणत्वं ज्ञापयितुं सीतारामयोः सर्वजगत्कारणत्वं वदति–'सीतारामौ तन्मयावि' त्येषा श्रुतिः । 'सीतारामौ तन्मयावत्र पूज्यौ । जातान्याभ्यां भुवनानि द्विसप्त । स्थितानि च प्रहृतान्येव तेषु ततो रामो मानवो माययाऽधात् ॥' अत्र मन्त्रे सीतारामौ तन्मयौ–रेफमयौ तादात्म्येन रेफवाच्यौ पूज्यौ ज्ञेयौ, पूजतिरत्र ज्ञानार्थः धातूनामनेकार्थत्वात् । अत्र तच्छब्दो 'रेफारूढा' इत्यत्रत्यस्याव्यवहितरेफस्य परामर्शकः, नतु व्यवहितस्य, 'तथैव रामबीजस्थम्' इत्यस्य रेफस्य, आभ्याम्

चिदात्मा में योगी लोग क्रीडा करते हैं, इससे श्रीरामपद से परब्रह्म कहे जाते हैं । चिन्मय सजातीय द्वितीय रहित निष्कल शरीर रहित ब्रह्म की रूप कल्पना तो उपासकों के कार्य के लिये सरलतया उपासना की जा सके तदर्थं की जाती है । इन उपक्रम श्रुतियों से दक्षिण हाथ ज्ञानमयी मुद्रा से युक्त और वामहाथ में तेजः प्रकाशन दिव्यायुध धारण कर व्याख्यान में तत्पर चिन्मय परमेश्वर अर्धमात्रात्मक ब्रह्मानन्दैकशरीर श्रीरामजी हैं इस प्रकार मध्य में अभ्यास कर वह सत् स्वरूप जो परब्रह्म चिदात्मक श्रीरामचन्द्रजी है, इत्यादि उपसंहार श्रुतियों से तथा श्रीशार्ङ्ग धनुष के धारण करने वाले चिन्मय आनन्दविग्रह श्रीराम हल के धारण करने वाले विष्णु ईशान बलराम कृपानिधि सच्चिदानन्द विग्रह

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सीतारामाख्याम् अधस्तनानि सप्त सप्त चोपरितनान्येवं द्विसप्त (चतुर्दश) भुवनानि जातानि स्थितानि प्रहृतानि च, अनेन जगत्सृष्ट्यादिव्यापारैः क्षेत्रक्षेत्रिन्यायेन श्रीसीतारामयोर्जगच्छेषित्वं जगतश्च तच्छेषत्वं ज्ञापितं भवति· ततोऽनन्तरं तेषु जातेषु राम आत्मानमधात् प्रावेशयत् तेषु रामः प्राविशदित्यर्थः, 'तत्सृष्ट्वातदेवानुप्राविशदि' तिश्रुत्यन्तरात्, कथम्भूतो रामः ? मानवः-मा-प्रभा, तया नवः-नवीनः पुराणोऽपि प्रभया नवावयव इत्यर्थः, मायया-ज्ञानेन 'माया वयुनं ज्ञानम्' इत्युक्तौ ज्ञानपर्यायोऽत्र मायाशब्दः, अथवा अमायेतिच्छेदः, अमायया-मायालेशराहित्येन मानवः-मनुष्याकारः सच्चिदानन्दाकार इत्यर्थः, चिन्मयेऽस्मिन् महाविष्णौ जाते दशरथे हरौ। रघोः कुलेऽखिलं राति राजते

वाले हैं इस प्रकार से स्तुत श्रीरामजी ने उसको दूसरा वर दिया। एवं महातेजस्वी सच्चिदानन्द शरीर भगवान् श्रीरामचन्द्र जी ने विराम किया, इत्यादि स्मृतियों से भी सच्चिदानन्दविग्रहत्व रूपसे प्रतिपादित होने से इस प्रकार से रेफवाच्य श्रीरामाख्य परब्रह्म ब्रह्माद्यशेष जगत के शेषी होते है, रेफाश्रित अकारादि वाच्य ब्रह्मादि सृष्टि स्थिति संहार कर्ता उनका सृष्टि स्थिति प्रलय कोटिशत सब चराचरात्मक जगत् भी श्रीरामजी का शेषभूत है यह वह्नि बीज का अर्थ समझाकर अब मन्त्रशेष का अर्थ समझाती है 'जगत् प्राणायात्मने' यह श्रुति । जगत के प्राण के लिये जैसे जगत् की स्थिति और प्रवृत्तियों का कारण प्राण है प्राण विना शरीर की स्थिति नहीं दिखाती हैं जब, तो प्रवृत्ति किस प्रकार से हो सकती है ! वैसे जगत् के प्राण श्रीरामजी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यो मही स्थितः ॥ स राम इति लोकेषु विद्वद्भिः प्रकटी कृतः । रमन्ते योगिनोऽनन्ते सत्यानन्दे चिदात्मनि । इति रामपदेनासौ परब्रह्माभिधीयते ॥ चिन्मयस्याद्वितीयस्य निष्कलस्याशरीरिणः । उपासकानां कार्यार्थं ब्रह्मणोरूप कल्पना ॥' इत्युपक्रमश्रुतिभ्यः 'मुद्रां ज्ञानमयीं यामे वामेतेजः प्रकाशनम् । धृत्वा व्याख्याननिरतश्चिन्मयः परमेश्वरः ॥ अर्धमात्रात्मको रामो ब्रह्मानन्दैकविग्रहः ॥ इत्यभ्यासात् अहमोम् 'तत्सद्‌यत् परंब्रह्म रामचन्द्रश्चिदात्मकः' इत्येव माद्युपसंहारश्रुतिभ्यश्च 'श्रीशार्ङ्गधारिणं रामं चिन्मयानन्द विग्रहम् । हलधृग्विष्णुमीशानं बलरामं कृपानिधिम् । इत्येव मीडितो रामः प्रदात् तस्मै वरान्तरम् । विरराम महातेजाः

बिना जगत् स्वरूपस्थिति प्रवृत्तियों की असिद्धि होने से जगत् की स्फूर्ति की देने वाले को नमस्कार है और 'जगदात्मने' जग-त्स्वरूप को आत्मा का अर्थ है कि—अतति सातत्येननैरन्तर्येण गच्छति अर्थात् व्याप्नोति सर्वजगद्‌बहिरन्तव्याप्नोति इति आत्मा-जो हमेशा जगत् के बाहर भीतर व्याप्त होकर रहता है उस जगत् के बाहर भीतर सब तरह से जगत् को व्याप्त कर स्थित रहने वाले श्रीराम को 'जगदात्मने' इस से जैसे शरीर का योग-क्षेम तच्छरीरी जीवात्मा करता है वैसे ही सर्वजीव शरीरी आत्मा श्रीरामजी का सर्वयोग क्षेम कारित्व की सिद्धि होने से तथा अनन्य हो जोजन मुझे याद करते हुए मेरी उपासना करते हैं, उन हमेशा अभियुक्तों का योग और क्षेम का वहन मैं करता हूं' इससे स्वानन्य भक्तों के ऐहिक आमुष्मिक योगक्षेमकारित्व की उक्ति से भी, अप्राप्त स्व का प्रापण योग है स्व प्राप्त का

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सच्चिदानन्दविग्रह' इत्येवमादिस्मृतिभ्यश्च सच्चिदानन्दविग्रहत्वेन प्रतिपादितत्वात् तदेवं रेफवाच्यं रामाख्यं परब्रह्म ब्रह्माद्यशेषजगच्छेषी भवति, रेफाश्रिता अकारादिवाच्या ब्रह्मादयः सृष्टिस्थितिसंहारकर्तारःतत्सृष्टिस्थितिप्रलयकोटिशतमशेषचराचरात्मकं जगच्च श्रीरामस्य शेषभूतमिति वह्निबीजस्येममर्थं ज्ञापयित्वाऽथ मन्त्रशेषस्यार्थं बोधयति 'जगत्प्राणात्मने' इत्येषा 'जगत्प्राणायात्मने तस्मै नमः स्यात् नमश्चैक्यं प्रवदेत् प्राग्गुणेनेति जगत्प्राणाय यथा शरीरस्थिति प्रवृत्त्योर्हेतुः प्राणः प्राणं विना शरीरस्य स्थितिरपि न दृश्यते, कुतः प्रवृत्तिः ? तथैव जगत्प्राणं श्रीरामं विना जगत्स्वरूपस्थिति प्रवृत्त्योरनुपपत्तेः जगत्सत्तास्फूर्ति

पुनः संसारागमन से रक्षण क्षेम है, इस प्रकार से आमुष्मिक योगक्षेमकारी को स्वानन्य चिन्तकों की स्वप्राप्ति का उपाय भूत को नमस्कार है 'तस्मै' यहाँ चतुर्थी विभक्ति तदात्मक जीव वाचि है नमः प्रसिद्ध आत्माराम इसका वाचक है, तदात्मिका जो चतुर्थी विभक्ति है उससे आय इसका बोध हो जाता है डे. को य आदेश अदन्त अङ्ग को दीर्घ करने से आय होता है । इससे आगे की श्रुति जीवात्मा और परमात्मा का तादात्म्य समझाती है इससे तदात्मिका चतुर्थी है जैसे जल सागर में और तैलकुण्ड में पडे हुए का जल से और तेल से भीतर बाहर व्याप्त तूलकण का तूलरूप से भान नहीं होता किन्तु जल रूप से वा तैल रूप से भान होता है, वैसे जीव का सर्वव्यापक श्रीरामरूप से ही भान होता है । यही जीव एवं श्रीराम का तादात्म्य कहा जाता है । तादात्म्य का लक्षण है कि कुछ भेद सहिष्णु होते

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्रदायेत्यर्थः, तथा जगदात्मने–अतति–सातत्येन नैरन्तर्येण गच्छति–व्याप्नोति सर्वजगद्बहिरन्तर्व्याप्नोतीत्यात्मा तस्मै बहिरन्तः सर्वजगद्व्याप्य स्थिताय 'जगदात्मने' इत्येनेन यथा स्वशरीरस्य योगक्षेमं च तच्छरीरीजीवात्मा करोति. तथैव सर्वजीवशरीरिणः आत्मनः श्रीरामस्य सर्वयोगक्षेम-कारित्वोपपत्तेः 'अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते। तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहमि' ति स्वानन्यभक्तानामैहिकामुष्मिकयोगक्षेमकारित्वोक्तेश्च ।

अप्राप्तस्य स्वस्य प्रापणं योगः, स्वप्राप्तस्य पुनः संसारागमाद् रक्षणं क्षेमः इत्यामुष्मिकयोगक्षेमकारिणे स्वानन्यचिन्तकानां स्वप्राप्तेरुपायभूतायेत्यर्थः । 'तस्मै' इति चतुर्थी तदात्मिका तादात्मिका जीववाचि नमो नाम चात्मा-

हुये भेद का असहिष्णुत्व हो यहाँ जीव परमात्मा का स्वरूप मात्र से भेद है. सो किञ्चिद् भेद है उससे व्याप्य व्यापक भाव से तो अभेद है, व्याप्यव्यापकों का अभेद कहा गया है गीता में–'सर्वं समाप्नोषि ततोऽसि सर्वः' सबको व्याप्त करते हो इस कारण से सबहों वही भेदासहिष्णुत्व इससे कहा गया, ऐसा जो श्रीरामतादात्म्य उस श्रीरामतादात्म्य को नमः 'जीववाचिनमो नाम' इस श्रुति से 'नमः जीवः स्यात्' यह विधि है, अतः श्रीरामतादात्म्य के लिये यत्न करे, श्रीरामतादात्म्य जैसे सिद्ध हो वैसे हो जाय यह अर्थ है. ऐसे श्रीरामतादात्म्य का अनुसन्धान करता हुआ 'क्रियाकर्मेज्य' अर्थात् श्रीराम कैङ्कर्यरूप कर्म करे अर्थात् मन्त्रजप का प्रकरण होने से जैसे ही षडक्षर तारक महामन्त्र जपे, यह अर्थ है। उस कहे हुए कर्म से और मन्त्र जप के

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

रामेति गीयते । तदात्मिका या चतुर्थी तया चायेति कथ्यते' इत्यग्रेतनश्रुतेः । जीवात्म परमात्मनोस्तादात्म्यं बोधयतीति तदात्मिका, यथा जलसागरे तैलकुण्डे चाऽऽपतितस्य जलेन तैलेन वाऽन्तर्बहिर्व्याप्तस्य तूलकणस्य तूलरूपेण भानं न भवेत् किन्तु (जलरूपेण तैलरूपेण वा भानं भवेत् तथा) सर्व. व्यापक श्रीरामरूपेणैवेतिवत् तदेव जीवरामयोस्तादात्म्यमुच्यते, 'किञ्चिद्भेदसहिष्णुत्वे सति भेदासहिष्णुत्वं तादात्म्यम्' इति तादात्म्यलक्षणम्, तत्र जीवपरमात्मनोः स्वरूपमात्रेण भेदः किञ्चिद्भेदः, ततो व्याप्यव्यापकत्वेन त्वभेदः, व्याप्य-व्यापकयोरभेद उक्तो गीतायाम्—'सर्वं समाप्नोषि ततोऽसि सर्वं

प्रभाव से श्रीरामतादात्म्य यथावत् समझ कर और प्राप्त कर श्री रामजी के साथ आनन्द करे यह भाव है । श्रीरामतादात्म्य के अनुसन्धान पूर्वक उनका कैङ्कर्य करना ही सायुज्य मुक्ति का स्वरूप है यह अपने अनेक पूर्वाचार्यों ने अपने अपने दिव्य प्रबन्धों में निरूपण किया है उसे वहीं देखना चाहिये ।

उपाय ज्ञान चार प्रकार का होता है—सम्बन्ध ज्ञान १ सम्बन्ध यथात्म्य ज्ञान २ सम्बन्ध स्वरूप ज्ञान ३ सम्बन्ध रूपयाथात्म्य ज्ञान ४ इनमें सम्बन्धज्ञान वह है जो कि—श्रीपति श्रीरामजी का निरूपाधिक शेषित्व एवं स्व का निरूपाधिक शेषत्व को अच्छी तरह जान कर रहना १, सम्बन्धयाथात्म्यज्ञान वह है जो कि—श्रीपति का निरूपाधिक शरीरित्व एवं स्व यानी अपने को निरूपाधिकशरीरत्व जानकर रहना २, सम्बन्धस्वरूप ज्ञान वह है कि—श्रीपति का निरूपाधिक धर्मित्व ज्ञान तथा स्व का निरूपाधि धर्मत्व जानकर रहना ३, सम्बन्धस्वरूपयाथात्म्यज्ञान वह है कि—धर्मि एवं धर्मों का ऐक्य जानकर रहना ४।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

इति स एव भेदासहिष्णुत्वमित्यनेनोक्तः इतीदृशं यद् श्रीरामतादात्म्यं तस्मै रामतादात्म्याय 'जीववाचि नमो नाम' त्यग्रेतनश्रुतेः । नमः जीवः स्यादिति विधिः श्रीरामतादात्म्याय यत्नं कुर्यात्, श्रीरामतादात्म्यं यथा निष्पद्यते तथा भवेदित्यर्थः । ईदृशरामतादात्म्यमनुसंदधत् 'क्रियाकर्मेज्ये' त्युक्तं रामकैङ्कर्यलक्षणं कर्म कुर्यात् मन्त्रजपप्रकरणाच्च तथैव षडक्षरं जपेदित्यर्थः । तेनोक्तेन कर्मणा मन्त्रजपप्रभावेन च श्रीरामतादात्म्यं यथावद् बुद्धा प्राप्य च श्रीरामेण समं नन्देदिति भावः । श्रीरामतादात्म्यानुसन्धानपूर्वकं तत्कैङ्कर्यकरणं तूक्तमस्मदीयपूर्वाचार्यैः ।

उपायज्ञानं चतुर्विधम्—सम्बन्ध ज्ञानं १, सम्बन्धयाथात्म्यज्ञानम् २, सम्बन्धस्वरूपज्ञानम् ३. सम्बन्धस्वरूप

ऐक्य वह वस्तु है जो कि विशिष्ट का विशेषण होने पर भी वही तथाकार रूप होकर स्वयं जैसे नही प्रकाशित हो वैसे रहना उपाय याथात्म्यज्ञान वह है कि—तन्निष्ठा हो यानी अपने उपास्य देव में ही अनन्य निष्ठपना से स्थित रहना । तन्निष्ठा वह है कि जो शेषभाव होने पर अपने कर्तृत्व की निवृत्ति यानी नाश । ज्ञातृत्व होने पर कर्तृत्व की निवृत्ति कर्तृत्व होने पर कर्तृत्व की निवृत्ति और भोक्तृत्व में कर्तृत्व की निवृत्ति प्रकृत में शेषत्व में कर्तृत्व वह है कि—राजा की आज्ञा से जन पीडा करते हुए मन्त्रियों के ऐसे भगवान् की दासता से सदाचार को कुछ मन्द कर रहना, यहाँ सदाचार वह है कि—शब्दादि विषयों से भय और भगवान् और भागवतों की किङ्करता में आशक्ति यह जो नहीं करता है वही सदाचार का श्लथन यानी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

याथात्म्यज्ञानम् ४ तत्र सम्बन्धज्ञानं नाम श्रियः पत्युर्निरुपाधिकशेपित्वं स्वस्य निरुपाधिक शेषत्वं च सम्यग् ज्ञात्वा स्थितिः, सम्बन्ध याथात्म्यज्ञानं नाम श्रियः पत्युर्निरुपाधिकशरीरित्वं स्वस्य निरुपाधिक शरीरत्वं ज्ञात्वा स्थितिः सम्बन्धस्वरूपज्ञानं नाम श्रियः पत्युर्निरुपाधिकधर्मित्वं स्वस्य निरुपाधिकधर्मत्वं च ज्ञात्वा स्थितिः, सम्बन्धस्वरूपयाथात्म्यज्ञानं नाम धर्मिधर्मयोरैक्यं ज्ञात्वा स्थितिः।

ऐक्यं नाम विशिष्टविशेषे सति स एव सन् स्वयं यथा न प्रकाशते तथा स्थितिः, उपाययाथात्म्य ज्ञानं नाम तन्निष्ठा नाम शेषत्वे कर्तृत्व निवृत्तिः ज्ञातृत्वे कर्तृत्वनिवृत्तिः कर्तृत्वे

मान्य है। उसकी निवृत्ति वह है कि-प्रामादिक विषयों का स्पर्श और प्रमादिकों के कैंकर्य का विश्लेष नहीं उदित होता है। एवं ज्ञातृत्व में कर्तृत्व वह है कि-हम कर्ता हैं ऐसा जानकर निश्चय ही श्रीपति ने इसका स्वीकार नहीं किया इस स्वज्ञातृत्व के उनके स्वीकार में कारणत्व की कल्पना करना। इसकी निवृत्ति तो देहाभिमानियों में मैं अत्यन्त निकृष्ट हूं इन्द्रियों का वशीभूत असदात्मा जैसे हूं ऐसे लोहा सा मुह सुवर्ण जैसा बनाकर आचार्यजी ने मुझे आत्मज्ञान का उपदेश देकर मेरा उद्धार किया ऐसा सोचकर कृतज्ञ होकर रहना कर्तृत्व में कर्तृत्व वह है जो हमनिषिद्ध कर्म को छोडकर विहित कर्मों को कहते हैं अतः ईश्वर ने हमें स्वीकार किया है इस प्रकार अपने स्वीकृति में कारण मानना। उसकी निवृत्ति तो हमारा व्यापार कोई नहीं है लकडी की पुत्तलिका के नाटकसा निषिद्धों का त्यागकरा कर विहित कराते हैं इस प्रकार की स्थिति का अनुभव करना। भोक्तव्य में कर्तृत्व वह है कि-हम तो सेवा करते हुए रहते हैं यह स्थिति, उसकी निवृत्ति तो अपने

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कर्तृत्वनिवृत्तिः भोक्तृत्वे कर्तृत्व निवृत्तिश्च । तत्र शेपत्वे कर्तृत्वं नाम राजाज्ञया जगत्पीडां कुर्वतो मन्त्रिण इव भगवद्दासतया सदाचारश्लथनं कृत्वा तिष्ठतीतिवत् तत्र सदाचारो नाम शब्दादिविषयेभ्यो भयं भगवद्भागवतकैङ्कर्येष्वासक्तिश्च एतन्न करोतीति यत् तदेव सदाचारश्लथनमस्ति, तन्निवृत्तिर्नाम प्रामादिकविषयस्पर्शः प्रामादिककैङ्कर्यविश्लेषश्च नोदेतीति यत् । ज्ञातृत्वे कर्तृत्वं नाम वयं ज्ञातार इति कृत्वा खलु श्रियः पतिरस्मानङ्गीकृतवानिति स्वज्ञातृत्वस्य तदङ्गीकारे हेतुत्वकल्पनम्, तन्निवृत्तिस्तु देहाभिमानिनां मध्येऽत्यन्तनिकृष्टोऽहमसदात्मकल्प इन्द्रियनिर्जितोऽहमेवं विधमामयः सुवर्णं कृत्वाऽऽचार्या आत्मज्ञानमुपदिश्य एवमङ्गीकृतवन्त इति कृतज्ञतया स्थितिः, कर्तृत्वे कर्तृत्वं नाम वयं

हाथ से अपने केशों का संस्कार करने पर परस्पर उपकार का स्मरण जैसे नहीं होता है वैसे ही अवयवभूत आत्मा से अवयवी श्रीपतिकी के कैङ्कर्य किये जाने पर परस्पर उपकार का स्मरण जैसे नही आसके वैसे भगवान् का कैङ्कर्य करता हुआ रहता है जिससे कि साधक श्रीरामजी के तादात्म्य का अनुसन्धानपुरस्सर षडक्षर महामन्त्र जप करता रहता है सुन्दरी तन्त्र में श्रीजानकीजी ने जनकजी के प्रति भू शुद्धि कर मन्त्राक्षर न्यास करे मन्त्राक्षरन्यास के वाद 'अहं रामो न चान्योऽस्मि ब्रह्मैवाहं न शोकभाक्' मैं सर्वेश्वर श्रीरामजी का दास हूं दूसरा नहीं हूं मैं ब्रह्मात्मक ही हूं अतः शोकभागी नहीं हूं इस तरह आत्मा का श्रीरामतादात्म्य के रूप में याद करता हुआ 'जो परब्रह्म भूलोक भुवर्लोक स्वर्लोक स्वरूप हैं उनको वार २ नमस्कार हो । इस रामतापनीय के उप

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

निषिद्धानि परित्यज्य वहितान्येव कुर्वन्तः स्थिता इत्यतोऽस्मानङ्गीकृतवानिति स्वप्रयत्नस्य स्वाङ्गीकारे हेतुत्व कल्पनम् तन्निवृत्तिस्तु अस्मद्व्यापारः कोऽपि नास्ति दारुपुत्रिकानाटक इव निषिद्धानि त्याजयित्वा विहितानि कारयतीति स्थितिः, भोक्तृत्वे कर्तृत्वं नाम वयं तु सेवां कुर्वन्तः स्थिता इति स्थितिः, तन्निवृत्तिस्तु स्वहस्तेन स्वकेशसंस्कारे कृतेऽन्योन्यमुपकारस्मृतिर्यथा न भवति, तथैवावयवभूतेनात्मना वयविनः श्रियः पत्युः कैङ्कर्ये क्रियमाणे सत्यन्योन्यमुपकार स्मृतिर्यथा नस्यात् तथा भगवत्कैङ्कर्यं कुर्वंस्तिष्ठतीति यत एवात्मनः श्रीरामतादात्म्यानुसन्धानपूर्वकं षडक्षरजपोऽप्युक्तः सुन्दरीतन्त्रे श्रीजानक्या जनकं प्रति भूशुद्धि

संहार मन्त्रों के अन्त में सभी मन्त्रों के अन्त में दो दो नम शब्दों के श्रवण से यहां भी दो नम शब्द के अत्यन्त सारूप्य होने से तन्त्र से उपादान ग्रहण होगा। वहां एक नमः पद जीव का वाचक दूसरा उपाय वाचक है उपाय शरणागति है, 'गच्छध्वमेनं शरणं शरण्यं पुरुषोत्तमम' शरण्य पुरुषोत्तम श्रीरामजी के शरण में जाइये। इस मार्कण्डेय से उपदिष्ट शरण पद के स्थान में 'द्रापद्या सहिताः सर्वे नमश्चक्रुर्जनार्दनम्' द्रौपदी के सहित सबों ने जनार्दन को नमस्कार किया। इस नमः पद के उपादान के यानी कथन से 'साधनान्तर संत्यागं नमः शब्दो हि शंसति' दूसरे साधन का त्याग नमः शब्द निश्चय पूर्वक कहता है' 'अनेन शरणाऽऽपत्तिः परमैकान्तिनां मता' इससे शरण में आना परमैकान्तियों का अर्थात् अत्यन्त अनन्य भक्तों का कहा गया है। इस पञ्चरात्र बचन से भी उसके उपाय वाचक नमः पद आत्मा और परमात्माओं का ऐक्या कहेगा। ऐक्या वह है कि विशिष्ट के

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कृत्वा मात्राक्षरन्यासस्य मन्त्राक्षरन्यासानन्तरम् "अहं रामो न चान्योऽस्मि ब्रह्मैवाहं न शोकभाक् । सच्चिदानन्दरूपोऽहं नित्यमुक्तस्वभाववान् ॥ इत्येवमात्मनः श्रीरामतादात्म्यं ध्यायन् मन्त्रं जपेदिति तदेव श्रुतिः स्फुटं वदति 'नमस्त्वैक्यं प्रवदेदि'ति 'ॐ यो वै श्रीरामचन्द्रः स भगवान् यत् परं ब्रह्म भूर्भुवः स्वस्तस्मै वै नमो नमः' इति रामतापनीयोपसंहारमन्त्राणामन्ते सर्वेषां द्वयोर्नमसोः श्रवणात् अत्रापि द्वयोर्नमसोरत्यन्तसारूप्यात् तन्त्रेणोपादानं स्यात् तत्रैकं नमः पदं जीववाचि द्वितीयमुपायवाचि उपायः शरणागतिः "गच्छध्वमेनं शरणं शरण्यं पुरुषर्षभम्' इति मार्कण्डेयोपदिष्टशरणपदस्थाने 'द्रौपद्या सहिताः सर्वे नमश्चक्रुर्जनार्दनम्' इति

विशेष रूप से रहने पर भी वही होकर खुद नहीं प्रकाशमान हो वैसे रहना । यह पूर्वोक्त लक्षण ही समझना चाहिये । अथवा 'प्रवदति' ऐसा पाठ नहीं है, किन्तु 'प्रवदेत' ऐसा ही बिधिलिङ्. का प्रयोग है, विधि चोदना यानी प्रेरणा रूप धर्म है, इस तरह कहने से चोदना विधि लक्षण यानी प्रमाण जहां है वह चोदनां लक्षण है. ऐसा उसकी निरुक्ति है, चोदना वेदकी आज्ञा जीव और परमात्मा इन दोनों का शेष शेषी भाव से ऐक्य को प्रवदन प्रेरण लक्षण दोनों जीव परमात्मा में ऐक्य है ऐसा नमः शब्द कहता है ऐसा अर्थ है । तु पुनः नमः शब्द से जीव आत्मा परमात्माओं का ऐक्य प्रकथन करे यहां ऐक्य वह है कि जल या समुद्र में पडे हुए तूल का जल से वाहर भीतर व्याप्त हुऐ तूलकण का तूल रूप से भान नहीं होता है, किन्तु जल रूप से ही भान होता है, वैसे ही श्रीराम परमात्मा से

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

नमः पदोपादानात् 'साधनान्तर संत्यागो (गं) नमः शब्दो हि शंसति' 'अनेन शरणापत्तिः परमैकान्तिनां मता' इति पञ्च रात्रवचनाच्च तदुपायवाचिनमः पदमात्मपरमात्मनोरैक्यं प्रवदेत् । ऐक्यं नाम विशिष्टविशेषे सति स एव सन् स्वयं यथा न प्रकाशते तथा स्थितिः इति पूर्वोक्तमेव । अथवाऽत्र 'प्रवदतीतीदृशः पाठो नास्ति, किन्तु 'प्रवदेदित्येवम्' प्रवदेदिति विधिः प्रयोगः, विधिश्चोदनालक्षणो धर्म' इत्युक्तेः । चोदना विधिर्लक्षणं प्रमाणं यत्र स चोदनालक्षणः' इति तन्निरुक्तिः । चोदना वेदाज्ञा जीवपरमात्मैक्य प्रवदनप्रेरणलक्षणात् तस्मान्नमस्त्वैक्य प्रवदेदित्यस्येदृशोऽर्थः । तु-पुनः नमः जीवः

वाहर भीतर व्याप्त जीव का यथा स्व रूप से भान नहीं होगा, किन्तु श्रीरामरूप ही से भान होता है । उसी प्रकार से 'रामोऽहं ब्रह्मैवास्मि सर्वह्येतद् ब्रह्म अयमात्मा ब्रह्म तत्त्वमसि' मैं रामरूप हूं ब्रह्मरूप ही हूं सब यह ब्रह्ममय है, यह आत्मा ब्रह्ममय है तू ब्रह्म से ही है' इस प्रकार खुद वोलो । दूसरे को भी कहे यानी पढावे अर्थात् उपदेश करे । उपनिषत में 'स्वाध्याय प्रवचने' स्वाध्याय खुद पढना प्रवचन उपदेश देना इसमें प्रवचन शब्द का पाठनार्थ के ज्ञान से प्रवदन प्रवचन पदों का समानार्थक होने से उसका 'रामोऽहम्' इस वचन का तथा तद्याथात्म्य वोध का फल उद्धर रामतापनीत्या श्रुति कहती है हमेशा मैं रामरूप हूं इस प्रकार जो याथार्थ्य से कहा करते हैं, वे संसारी नहीं होते श्रीराम स्वरूप ही हो जाते हैं, यह एकता में कारण है । यह पहले कहे हुए प्राग् गुणेन वचन से ज्ञात होता है न कि जगत्प्रवेशित्व जगत्प्राणत्व जगदात्मत्व गुण से ऐसा अर्थ है ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

आत्म परमात्मनोरैक्यं प्रवदेत्, ऐक्यं नाम यथा जलसागरे पतितस्य जलेन वहिरन्तर्व्याप्तस्य तूलकणस्य तूणरूपेण भानं न भवति, किन्तु जलरूपेणैव, तथैव श्रीरामेण परमात्मना वहिरन्तर्व्याप्तस्य जीवस्य यथास्वेन रूपेण भानं न भवेत् किन्तु श्रीरामरूपेणैव तथा तिष्ठेत् तथैव 'रामोऽहम् ब्रह्मैवाहमस्मि सर्वं ह्येतद्ब्रह्म अयमात्मा ब्रह्म तत्त्वमसि' इत्येवं स्वयं (प्र) वदेत् । अन्यानपि प्रवदेत् पाठयेत् उपदिशेदित्यर्थः । उपनिषदि स्वाध्यायप्रवचने इति प्रवचनशब्दस्य पाठनार्थकत्वा वगमात् प्रवदनप्रवचनपदयोरेकार्थकत्वाच्च तस्य 'रामोऽहमिति वचनस्य तद्याथात्म्य बोधस्य च फलं वदिष्यत्युत्तर तापनीया श्रुतिः—"सदा रामोऽहमित्येतत् तत्त्वतः प्रवदन्ति

इससे प्राणवत् सत्ता स्फूर्तियों के प्रदान से जो जीवन के हेतु भूत है उस जगदात्म श्रीराम से वाहर भीतर व्याप्त जीव के श्रीराम से अभिन्न की सिद्धि होने से श्रीरामरूप स्व की उपपत्ति हो जाने से आत्मा और श्रीराम का ऐक्य वहुत श्रुतियों से प्रतिपादित हुआ है जैसे कि 'ब्रह्मैवास्मि, अयमात्मा ब्रह्म, सर्वं ह्येतद् ब्रह्म, तत्त्वमसि. इत्यादि श्रुतियों से 'ज्ञापित है । अतः अहं रामो न चान्योऽस्मि ब्रह्मैवाहं न शोकभाक् । सच्चिदानन्द रूपोऽहं नित्यमुक्त स्वरूपवान्' इस प्रकार प्रवदन करे मन से जाने वचन से वाले कि—मैं श्रीरामरूप हूं दूसरा नहीं हूं मैं ब्रह्म स्वरूप हूं शोगभागी नहीं हूं मैं सच्चिदानन्द रूपनित्य मुक्त स्वरूपा हूं इस प्रकार आत्मा को उपदेश दे । उपासक ब्रह्मज्ञाता अपने उपास्य स्वात्मा रूप श्रीरामजी की उपासना करे, दूसरे प्रकार से उपासना नहीं करे । ऐसा व्यासकृत

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ये । न ते संसारिणो नूनं राम एव न संशयः ॥' इत्येषा । ऐक्य प्रवदने हेतुः प्राग्गुणेनेति पूर्वोक्तेन, न जगत्प्रवेशित्व जगत्प्राणत्वजगदात्मत्वगुणेनेत्यर्थः, तेन प्राणवत् सत्तास्फूर्ति प्रदानेन जीवनहेतुभूतेन जगदात्मना श्रीरामेणान्तर्बहिर्व्याप्तस्य जीवस्य रामादपृथक्त्वसिद्ध्या श्रीरामरूपत्वोपपत्तेरात्मराम-योरैक्यं बहुश्रुत्युक्तम् 'ब्रह्मैवाहमस्मि, अयमात्मा ब्रह्म, सर्वं ह्येतद् ब्रह्म, तत्त्वमसि' इत्येवमादिश्रुतिभिर्बोधितम् 'अहं रामो न चान्योऽस्मि ब्रह्मैवाहं न शोकभाक् । सच्चिदानन्दरू-पोऽहं नित्यमुक्तस्वभाववान् ।" इत्येवं प्रवदेत् मनसाज्ञानी-यात् वचसा वदेत् अन्यानप्युपदिशेदित्यर्थः । उपासको ब्रह्म

ब्रह्मसूत्र से मालूम होता है 'आत्मेति तू पगच्छन्ति ग्राह-यन्ति च' अपने उपास्य श्रीरामरूप आत्मा आराध्यदेव हैं इस बुद्धि से उसके नजदीक जाते हैं और आत्मा को ग्रहण कराते हैं । इस प्रकार से मन्त्रशेषार्थ को कहकर अत्र मन्त्रशेषके पदार्थ को कहता है—जीववाची नमः इस अव्यय पद से प्रसिद्ध आत्मा कहा जाता है तदात्मक चतुर्थी विभक्ति से तो आय कहा जाता है । ऐसी श्रुति है । 'नाम यह प्रसिद्धार्थक पद मन्त्रस्थ नमपद जीववाचक है ऐसा बोध कराता है । 'राम' इस प्रातिपदिक से आत्मा परमात्मा हैं ऐसा कहा जाता है । नमः पद के जीव वाचकत्व होने से श्रीरामपद से परमात्मवाचकत्वकी सिद्धि होती है राम प्रातिपदिक से पर जो चतुर्थी उच्चारित की जाती है, वह तदात्मिका है यानी आत्मा और परमात्मा के तादात्म्य की बोधिका है, उन दोनों के तादात्म्य सम्बन्ध को समझाती है, यह अर्थ है । पर उन दोनों के स्वरूपमात्र से नियन्तृ—नियम्यत्व सम्बन्ध होने से तो भेद समझाती है, व्यापक

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वित् स्वोपास्यं स्वात्मतयैवोपासीत नान्यथेति व्यासप्रणीत ब्रह्मसूत्रादप्यवगम्यते 'आत्मेति तूपगच्छन्ति ग्राहयन्ति चे त्यस्मात्, एवं मन्त्रशेषार्थमुक्त्वाऽथ मन्त्रशेषस्य पदार्थमाह 'जीववाचिनमोनाम आत्मारामेति गीयते। तदात्मिका या चतुर्थीतया चायेति कथ्यते' इत्येषा। नामेति प्रसिद्धं मन्त्रगतं नमः पदं जीववाच्यस्ति, रामेति प्रातिपदिकेन आत्मा परमात्मा गीयते, नमः पदस्य जीवात्मवाचितया रामपदस्य परमात्मवाचकत्वोपपत्तेः तथा च नमोरामपदयो रात्मपरमात्मपरत्वे सति या चतुर्थी (तया) आयेति कथ्यते, रामप्रातिपादिकात् परमुच्चार्यते, सा तदात्मिका आत्म परमा-

व्यापकत्व रूप से तो व्याप्य व्यापक के सम्बन्ध के पृथक्त्व की सिद्धि से तो व्याप्य स्वरूप की स्थिति और प्रवृत्तियों की सब प्रकार से व्यापक की अधीनता से व्याप्य व्यापकों का अभेद कहती है। व्याप्य का व्यापक स्वरूप गीता वचन से मालूम होता है, सर्व पद के वाच्य शरीर में शरीरी रूप से और आत्म रूप से व्याप्त होने से सर्व स्वरूप भगवान् हैं अतः व्याप्य की व्यापक स्वरूप से श्रीरामजी का निर्वचन होता है। जो जन इस तारक षडक्षर महामन्त्र का नित्य जप करता है यानी उसके अर्थ के अनुसन्धान पुरस्सर हमेशा जप करता है उसके वर्तमान देह के अवसान में ही श्रीरामजी की प्राप्ति होती है, यह श्रीरामजी की उत्तर तापनीय उपनिषत् के विचार से मालूम होता है, 'य एतत् तारकं ब्राह्मणो नित्यमधीते इत्यादि—जो ब्राह्मण इस तारक षडक्षर महामन्त्र का नित्य जप करता है' वह पाप को पार कर जाता है यानी निष्पाप हो जाता है, फिर वह

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

त्मनोस्तादात्म्यबोधिका–तयोस्तादात्म्य सम्बन्धं बोधयतीत्यर्थः । तयोः स्वरूपमात्रेण नियन्तृ नियम्यत्वेन च भेदं व्याप्यव्यापकत्वेन तु व्याप्यस्य व्यापकापृथक्त्वसिद्धेः, व्याप्यस्वरूपस्थिति प्रवृत्त्योः सर्वथा व्यापकाधीनतया व्याप्य व्यापकाभेदं च, वदति. व्याप्यस्य व्यापकस्वरूपत्वं गीता वचनादवगम्यते 'सर्वं समाप्नोषि ततोऽसि सर्वः' इत्यस्मात्, य एतत् तारकं षडक्षरं नित्यं जपति तदर्थानुसन्धानपूर्वकं तस्य वर्तमानस्यैव देहस्यान्ते श्रीरामप्राप्तिर्भवतीत्युत्तरतापनीयायाः 'य एतत् तारकं ब्राह्मणो नित्यमधीते स पाप्मानं तरति । स मृत्युं तरति । स भ्रूणहत्यां तरति । स वीरहत्यां

मृत्यु को जीत लेता है यानी अमर हो जाता है. वह भ्रूण की यानी गर्भस्थ जीव की हत्या को अतिक्रान्त करता है यानी भ्रूण हत्या से मुक्त हो जाता है, वह वीर हत्या को तैर जाता है, वह सर्व को तैर जाता है. वह जन्म मरण रूप संसार को तैर जाता है, यानी पुनर्जन्म तथा मरण रहित हो जाता है, वह सब पाप को तैर जाता है वह अविमुक्त यानी काशीक्षेत्र का आश्रित हो जाता है, वह महान् होता है और वह अमृतत्व यानी सायुज्य मोक्ष प्राप्त करता है, इस श्रुति के विचार से ज्ञात होता है । वह इस प्रकार से है–षडक्षर तारक महामन्त्र के नित्य जप में तत्पर रहता है वह नरक में नहीं जायगा क्योंकि उसके नरक प्राप्ति कारण सर्व पापों के विनाश होने से ऐसा 'स पाप्मानं तरति' इस वाक्य से शुरू कर 'सर्वहत्यांतरति' इस वाक्य पर्यन्त से । जिज्ञासा होती है कि–वह ब्रह्मलोक पर्यन्त किस स्वर्गादि लोक में जायगा इस संदेह में कहते है–कि–'स सर्वं तरति' वह सभी लोकों को पार कर श्रीराम धाम में जाता है । वह साधक विरजा को पार कर श्रीसाकेत से इधर ही बीच में रहता है ऐसी शंका समाधान के लिये कहते हैं वह सर्व को पार कर श्रीराम

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तरति । स सर्वं हत्यां तरति । स संसारं तरति । स सर्वं तरति । सोऽविमुक्ताश्रितो भवति । स महान् भवति । सोऽमृतत्वं च गच्छती' त्यस्याः श्रुतेरर्थ विचारादवगम्यते । तथाहि षडक्षर तारकस्य नित्यजपपरो न तावन्नरकं गमिष्यति, कुतः ? तस्य नरक प्राप्तिहेतु सर्वपापविनाशादित्याह–'स पाप्मानं तरतीत्यारभ्य स सर्वहत्यां तरती–त्यन्तेन । न च स ब्रह्मलोकपर्यन्तेषु पुण्यलोकेषु मध्ये कस्मिंश्चिल्लोके स्वर्गादौ गमिष्यतीत्याह–'स सर्वं तरतीति किन्तु परिशेषात् स्वस्वरूपमनुभूय जगत्पूज्यो भूत्वाऽमृतपदवाच्यं श्रीराम परधाम गमिष्यतीत्याह–सोऽविमुक्तात्मेत्यारभ्यामृतत्वं च गच्छतीत्यन्तेन । अत्र तरति गच्छतीति वर्तमान प्रयोगै

धाम में जाता है इतना ही नहीं किन्तु परिशेष से स्वस्वरूप का अनुभव कर जगत्पूज्य हो कर अमृत पदवाच्य श्रीरामजी के परधाम को प्राप्त करेगा ऐसा कहती है–'सोऽविमुक्तमाश्रितः' यहाँ से लेकर 'अमृतत्वं च गच्छति' इस पर्यन्त शब्द प्रपञ्च से । यहाँ 'तरति' गच्छति, इन वर्तमान कालिकप्रयोगों से वर्तमान देह के अन्त में ही सब पापों से रहित हो कर श्रीरामपद की प्राप्ति सूचित की गई है, यदि वर्तमान देह के अन्त में श्री रामपद प्राप्ति नहीं होती तो 'तरिष्यति' गमिष्यति' इस प्रकार भविष्यत्कालिक प्रयोग करते ।

यहाँ ब्राह्मण शब्द 'ब्रह्मबुभूषे' इस अर्थ का वाचक है न कि ब्राह्मण जाति परक है, इस में प्रमाण है कि–'शुचिव्रतपराः शूद्रा धार्मिका द्विजसेवकाः । स्त्रियः पतिव्रताश्चान्ये प्रतिलोमानुलोमजाः ।। लोकाश्चाण्डाल पर्यन्ताः सर्वेऽप्यत्राधिकारिणः । स्वजातिकर्म निरता भक्ताः सर्वेश्वरस्य ये । इस अगस्त्य संहिता में चाण्डाल पर्यन्त के षडक्षर मन्त्र के अधिकारिता के वचन से । 'शुचिव्रत' इत्यादि–शुचिव्रत में तत्पर धर्माचरण करने वाले द्विजों

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

र्वर्तमानस्यैव देहस्यान्ते सर्वपापराहित्य पूर्वकं श्रीरामपदप्राप्तिर्ज्ञापिता भवति । अन्यथा तरिष्यति गमिष्यतीत्येवं वक्तव्यात् (अवक्ष्यत्) अत्र ब्राह्मणशब्दो ब्रह्ममुमुक्षुस्वर्थकः, न तु ब्राह्मणजातिपरः 'शुचिव्रततमाः शूद्रा धार्मिका द्विजसेवकाः । स्त्रियः पतिव्रताश्चान्ये प्रतिलोमानुलोमजाः ॥ लोकाश्चाण्डाल पर्यन्ताः सर्वेऽप्यत्राधिकारिणः ॥ स्वजातिकर्मनिरता भक्ताः सर्वेश्वरस्य ये ।" इत्यगस्त्यसंहितायां चाण्डालपर्यन्तस्य षडक्षराधिकारितोक्तेः । हारीतेऽप्युक्तं तथैव 'ब्राह्मणाः क्षत्रिया वैश्याः स्त्रियः शूद्रास्तथेतरे । सर्वेऽप्यधिकारिणोऽस्यह्यनन्यशरणा यदि । इति "गर्भजन्म जरामृत्युतारकं सर्व देहिनाम् । स्वभक्तवत्सलं राममन्त्रं सम्यगुपास्महे" ॥ इति

की सेवा करने वाले शूद्र, पतिव्रतास्त्रियाँ प्रतिलोमज यानी शूद्रादि से वैश्यादि में उत्पन्न अनुलमज ब्राह्मणादि से क्षत्रियादि में उत्पन्न चाण्डाल पर्यन्त सब लोग इस षडक्षर तारक मन्त्र के अधिकारी हैं । सर्वेश्वर यानी सभी के स्वामी परमात्मा के जो स्वजाति कथित कर्म में लगे हुए हैं वे षडक्षर मन्त्र के अधिकारी हैं । यह वचन है । 'गर्भजन्म जरा मृत्यु–तारकं सर्वदेहिनाम । स्वभक्तवत्सलं राममन्त्रं सम्यगुपास्महे ॥ सभी प्राणियों के गर्भजन्म जरा और मृत्यु के तारक अपने भक्तों के वत्सल श्रीराम मन्त्र की हम उपासना किया करते हैं । इस षडक्षर महा मन्त्र का नित्य जापी जन अर्चिरादि मार्गों में रहने वाले उन लोकों के स्वामी अग्नि आदियों से पूजित हो कर अर्चिरादि मार्गों से परधाम में जायगा । यह कहती है–श्रीरामोपनिषत् श्रुति 'परमं मन्त्रराजं श्रीरामचन्द्रस्य नित्यमधीते सोऽग्निना पूजितो भवति, स ब्रह्मणा पूजितो भवति स विष्णुना पूजितो भवति, स रुद्रेण पूजितो भवति, स सर्वैर्देवैर्ज्ञातो भवति' इत्यादि–जो श्रीरामचन्द्र

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सोऽयं षडक्षरस्य नित्यजापी आर्चिरादिमार्गस्थैस्तत्तल्लोक स्वामिभिरग्न्यादिभिः पूजितोऽर्चिरादिमार्गेण परधाम गमिष्यतीत्याह-श्रीरामोपनिषच्छ्रुतिः—य एनं मन्त्रराजं श्रीरामचन्द्रस्य नित्यमधीते सोऽग्निना पूजितो भवति. स ब्रह्मणा पूजितो भवति स विष्णुना पूजितो भवति. स रुद्रेण पूजितो भवति स सर्वैर्देवैर्ज्ञातो भवतीत्याद्या ।

ये सन्ति ब्राह्मणा लोके वैष्णवाः श्रोत्रियाश्च ये ।
ब्रह्मज्ञानाय तेषां हि मन्त्रार्थोऽयं प्रकाशितः ॥१॥
श्रुत्युक्तोहि मन्त्रार्थोयं न स्मार्तो नापि कल्पितः ।
अतोऽत्र प्रीतिरधिका ब्राह्मणानां भविष्यति ॥२॥

ॐ इति रामतापनीयोपनिषद्भाष्यान्तर्गत—श्रीरामषडक्षरतारक मन्त्रस्य वेदोक्तार्थनिरूपणम् ॐ

जी का अत्यन्त उत्कृष्ट मन्त्रराज को नित्य जपता है, वह अग्नि से पूजित होता है, वह ब्रह्माजी से पूजित होता है. वह विष्णु से पूजित होता है, वह रुद्र से पूजित होता है. वह सभी देवों से ज्ञात होता है।

'ये सन्ति' इत्यादि—लोक में जो ब्राह्मण वैष्णव वेदाध्यायी है, उनके ब्रह्मज्ञान के लिये यह श्रीराम महा मन्त्रार्थ प्रकाशित किया यह श्रुति से कथित मन्त्रार्थ है न कि स्मार्त वा स्वकपोल से कल्पित यह मन्त्रार्थ है। इस हेतु से इसमें ब्राह्मणों की अधिक प्रीति इस मन्त्रार्थ में होगी ॥१—२॥

इति श्रीरामतापनीयोपनिषद्भाष्यान्तर्गत श्रीरामषडक्षर तारक मन्त्रस्य वेदोक्तार्थनिरूपण परक आनन्दभाष्यसिंहासनासीन-जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्य श्रीरामेश्वरानन्दाचार्य प्रणीतातिसंक्षिप्तदीपिका

चलतः स्खलनं क्वापि भवत्येव प्रमादतः ।
हसन्ति दुर्जनास्तत्र समादधति सज्जनाः ॥१॥

ॐ श्रीरामः शरणं मम ॐ

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

卐 श्रीसीतारामाभ्यां नमः 卐

आनन्दभाष्यसिंहासनासीन

जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्य श्रीरामेश्वरानन्दाचार्य प्रणीतम्

संकटमोचनश्रीहनुमदष्टकम्

सङ्ग्रामे खलदुष्टहं कपिवरं श्रीरामदूतं वरं
सद्विद्यागुणमन्दिरं भयहरं भक्तिप्रदं सन्मतिम् ।
मायामारजितं च शोकशमनं लङ्काजितं चार्चितं
वन्देऽहं कपिनायकं पवनजं श्रीरामदूतं सदा ॥१॥
श्रीमद्रामपदारविन्दमधुपं रामे रतं सर्वदा
सीताशोकहरं प्रपन्नसुखदं विद्यावतां वै वरम् ।
यन्नामस्मरणं सुमङ्गलमयं पीडाहरं दुस्तरं
वन्देऽहं कपिनायकं पवनजं श्रीरामदूतं सदा ॥२॥
रामाराधनतत्परं सुखकरं बालार्कवर्णं वरम्
श्रीमद्रामचरित्रसागररसिकं रामे सुसक्तं सदा ।
धर्माधर्मविदं प्रभञ्जनसुतं विश्रामदायिद्रुमं
वन्देऽहं कपिनायकं पवनजं श्रीरामदूतं सदा ॥३॥
सीतायै सुखदं सदाशरणदं सन्तापहं तापहं
मृत्योर्भीतिहरं प्रसन्नवदनं ध्यानेस्थितं तं कपिम् ।
श्रीमद्रामपरायणं च सततं भक्तिप्रियं पावनं
वन्देऽहं कपिनायकं पवनजं श्रीरामदूतं सदा ॥४॥
श्रीमद्रामसुनामचिन्तनरतं वेदान्तविद्यानिधिं
श्रीमद्रामकथापवित्रमनसा श्रोतुं सदासोत्सुकम् ।
श्रीमन्तं मरुतात्मजं शरणदं शैलायुधं सर्वगं
वन्देऽहं कपिनायकं पवनजं श्रीरामदूतं सदा ॥५॥
हेलोत्पाटितद्रोणभूधरवरं सिन्दूरसिक्तं तनुं
रामाज्ञापरिपालकं परतरं देवादिवन्द्यं विभुम् ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

श्रीसीतारघुनाथपादयुगलासक्तं परं वैष्णवं
वन्देऽहं कपिनायकं पवनजं श्रीरामदूतं सदा ॥६॥
रक्षोकण्ठविदारिणी च भयदागुर्वीगदाधारिणं
भक्तिज्ञानविरागसंयुतकपिं बुद्धिप्रद पावनम् ।
स्वर्णाभं मुनिवन्दितं सुरवरं वीरं जनैर्वन्दितं
वन्देऽहं कपिनायकं पवनजं श्रीरामदूतं सदा ॥७॥
युद्धेकालसमानभीमविकटं भक्त्या च मुक्तिप्रदं
यस्याघातवशाच्च भूधरचरा भूमिं व्रजन्ति ध्रुवम् ।
यन्नामस्मरणं च नाशयति वै वेतालभूताद्भयं
वन्दे तं कपिनायकं पवनजं श्रीरामदूतं सदा ॥८॥

रामेश्वरार्यवर्येण प्रणीतं शुभमष्टकम् ।
मुक्तिमुक्तिप्रदं भूयात्पाठाद्विघ्नोपशान्तये ॥

श्रीसीतारामाभ्यां नमः
आनन्दभाष्यसिंहासनासीन
जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्य श्रीरामेश्वरानन्दाचार्य प्रणीतं

मङ्गलाष्टकम्

मङ्गलं श्रीधरं जानकी जीवनं
व्यापिनं शाश्वतं सर्वभूतेश्वरम् ।
सर्वदा योगिभिर्भावितं भास्वरं
प्राणरूपं जगत् पालकं चाक्षरम् ॥१॥
सर्वलोकाश्रितं शिष्टसंसेवितं
शङ्कराराधितं शोकसंवर्जितम् ।
ब्रह्मरुद्रादिदेवैः सदा पूजितं
सिद्धिदं बुद्धिदं श्रीपतिं सुन्दरम् ॥२॥
सुप्रभं शाश्वतस्थानसंवासिनं
दुर्जयं धर्मकामार्थमोक्षप्रदम् ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

निर्गुणं निर्विकल्पं सुरेसेश्वरं
शोकसन्तापहं रामचन्द्रं भजे ॥३॥
श्रीकरं शोभनं शोकसंहारिणं
भुक्तिमुक्तिप्रदं सुन्दरं स्रग्विणम् ।
वत्सलं मोहमुक्तं शिवाराधितं
सर्वरूपं सुरूपं सुराराधितम् ॥४॥
केवलानन्दरूपं रमाराधितं
सर्वदा भूषणैर्भूषितं भावितम् ।
धर्मरूपं धरापुत्रीसंसेवितं
सर्वभूताश्रयं रामचन्द्रं भजे ॥५॥
भूपतिं गोपतिश्च धनुर्धारिणं
सन्मतेर्दायिनं सर्वभूतस्थितम् ।
प्रकृतेः पारगं वारिजाक्षं परं
पावनं पावनानां भजेऽहं सदा ॥६॥
बन्धुभिःर्वानरैः सर्वदा सेवितं
संयुगे कालरूपं नमामीश्वरम् ।
भेदभिन्नं विषंभीतिसंहारिणं
मानसे राघवं सर्वदा संदधे ॥७॥
चर्चितं चन्दनैर्भालदेशे शुभं
मानुषाकारमोङ्कारमूलं हरिम् ।
मञ्जुलं मञ्जुलानां च गात्रं परं
मन्द मन्दस्मितं रामचन्द्रं भजे ॥८॥
देशिकेन्द्रार्यवर्येण रामेश्वरेण निर्मितम् ।
मङ्गलं पाठकृद्गच्छेच्छ्रद्धया रामसन्निधिम् ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

श्रीसीतारामाभ्यां नमः

आचार्यसार्वभौम श्रीपूर्णानन्दाचार्य प्रणीतम

श्रीरामपञ्चकम्

पूर्णो दिव्यतनुः परो रघुपतिर्लोकेऽजडेऽप्राकृते
पूर्णोदाशरथिर्विकाररहितो लीलाविभूतावपि ।
यो वेदैकनिरूपितश्च सदसद्रूपः परं ब्रह्म सः
श्रीरामो जगदाश्रयो भवतु मे त्राता जगद्व्यापकः ॥१॥

सद्बीजं जगतो जगत् त्रयगुरुः कर्त्ता तथा रक्षकः
संहर्त्ता जगतीतनुर्हि जगतश्चात्मा विभुः सर्वविद् ।
निर्दोषो जगदीश्वरो गुणनिधिर्नित्योऽजडः सौख्यदः
श्रीरामो जगदाश्रयो भवतु मे त्राता जगद्व्यापकः ॥२॥

सृष्टिः सज्जगतश्चराचरपतेर्यस्येक्षणाद् विश्रुता
भेदाभेदपरस्तथा श्रुतिगणो यत्रान्वितश्चास्ति सः ।
आनन्दैकनिधिः सुखद्धजलधिर्भिन्नश्चितश्चाचितः
श्रीरामो जगदाश्रयो भवतु मे त्राता जगद्व्यापकः ॥३॥

कारुण्याम्बुनिधिश्च यस्तनुभृतां प्राप्यस्तथा प्रापकः
सायुज्यं च ददाति योहि निजया भक्त्या प्रपत्त्याऽथवा ।
सर्वेशः स परात्परश्च रहितो वैषम्यनैर्घृण्यतः
श्रीरामो जगदाश्रयो भवतु मे त्राता जगद्व्यापकः ॥४॥

जायन्ते मृतिमाप्नुवन्ति च पुनर्लब्ध्वा न यं प्राणिनो
यञ्चोपेत्य भवेन्न वै तनुमतां लोके पुनर्जन्म सः ।
ब्रह्मेशानसुरेन्द्रवन्दितपदो भक्त्येकलभ्यः प्रभुः
श्रीरामो जगदाश्रयो भवतु मे त्राता जगद्व्यापकः ॥५॥

चिदानन्दार्यशिष्येण पूर्णानन्देन निर्मितम् ।
श्रीरामपञ्चकं भूयात् सर्वश्रेयः प्रदायकम् ॥६॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

॥ स्पष्टीकरण ॥

(१) समीक्षासम्राट् दर्शनकेसरी श्रीवैदेहीकान्त शरण तुर्की मुजफ्फरपुर, (बिहार) ने दि. के पत्रद्वारा जनकपुरधाम (नेपाल) के पं. रामसागरदासजी की जिज्ञासा अवगत हुई । प्रकृत प्रसंग में प्रतिलिपि करते असावधानी हुई जिससे १३६ के स्थान में मात्र ३६ अंकित हुआ जिसकी प्रतिलिपि पुनः मैने अपनी स्मारिकामें की । उसमें भी मात्र ३६ ही अंकित हुआ जिसका अनुकरण आचार्यपीठ से प्रकाशित सभी निबन्ध प्रबन्धों में हुआ तथैव अन्य संस्थाओं से प्रकाशित साहित्य में भी इसी का अनुकरण हुआ काल गणना की ओर ध्यान नहीं गया । विश्राम द्वारका श्रीशेषमठ शींगडा पोरबन्दर सौराष्ट्र में जगद्विजयी महामहोपाध्याय जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्य श्रीरघुवराचार्यजी वेदान्तकेसरीने सम्वत् १९८८ में जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्यपीठ की स्थापना की । उस प्रसंग में जिस पुस्तिका में आचार्य परम्परा का उल्लेख हुआ है उसमें जगद्गुरु श्रीसदानन्दाचार्यजीका आविर्भाव माघशुक्ल पञ्चमी विक्रम सम्वत् ३३७ पूर्व एवं तिरोभाव वसन्त पञ्चमी विक्रमसम्वत् पूर्व ८० एवं जगद्गुरु श्रीरामेश्वरानन्दाचार्यजी का आविर्भाव वैसाख शुक्ल तृतीया विक्रम सम्वत् पूर्व १३६ तथा तिरोभाव ज्येष्ठ शुक्ल एकादशी विक्रम संवत २३६ अंकित है । यही तिथि जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्य श्रीरामप्रपन्नाचार्यजी योगीन्द्र के पट्टाभिषेक प्रसङ्ग सम्वत् २००९ में अंकित है । तथैव मेरे सार्वभौमाभिषेक प्रसंग सम्वत् २०४६ में आनुपूर्वी रूप से अंकित है । अतः जगद्गुरु श्रीरामेश्वरानन्दाचार्यजी का आविर्भाव विक्रम सम्वत् पूर्व ३६ के स्थानपर सुधार कर १३६ पढ लिया करें । एवं असावधानतया जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्य पीठों से प्रकाशित समस्त निबन्ध प्रबन्धों में अंकित ३६ के स्थान में सुधारकर १३६ पढ लिया करें ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्यपीठ स्मारक स्मृति ग्रन्थ के पृष्ठ ६३४ श्लोक २३ के प्रथम चरण को "रसाग्निब्रह्मपूर्वाब्दे" एवं उक्त स्मृति ग्रन्थ के पृष्ठ ३५ में ३६ के स्थान में १३६ तथा 'षट्त्रिंशदुत्तरशततमपूर्वम्' पढा जाय तथा 'जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्य जन्मोत्सव कथा' पृष्ठ १९ श्लोक २३ के प्रथम चरणको "षड्रामब्रह्मपूर्वाब्दे" पढा जाय, एवं "देशिकपरिचर्या" पृ० १९ के पंक्ति २ को "विक्रमतः षट्त्रिंशदुत्तरशततम" पढा जाय। तथा "महामहोपाध्याय स्मृति ग्रन्थ" पृष्ट ६६२ में अंकित ३६ को सुधार कर १३६ पढा जाय और 'जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्य' के पृष्ट ३५ में ३६ के स्थान में १३६ एवं 'षट्त्रिंशद् पूर्वम्' के स्थान में "षट्त्रिंशदुत्तरशततमपूर्वम्" पढा जाय तथा आचार्यपीठों से "श्रीसम्प्रदाय कल्पलता" हिन्दी संस्करण एवं गुजराती संस्करण "आचार्य कीर्तिलता" "श्रीसम्प्रदाय दिग्दर्शन" 'श्रीरामानन्द सम्प्रदाय का संक्षिप्त परिचय' (हिन्दी एवं गुजराती संस्करण) प्रभृति जितने भी निबन्ध प्रबन्ध प्रकाशित हुये हैं उन सभी में जगद्गुरु श्रीरामेश्वरानन्दाचार्यजी के आविर्भाव काल में जहां तहाँ भी विक्रम सं.पूर्व ३६ अंकित हो उन सभी स्थानों में विक्रम संवतपूर्व १३६ पढा जाय।

२ अनेक जिज्ञासुओं के एकाधिक पत्र आये हैं कि आनन्द भाष्यकार जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्यजी का पूर्वाश्रम का नाम 'रामदत्त' था। क्या विशिष्टाद्वैत सिद्धान्त में 'माया' को मिथ्या माना गया है? आनन्दभाष्यकारजी श्रीसम्प्रदाय के 'प्रवर्तक' हैं संस्कृत भाषा की आचार्य श्री ने उपेक्षा की है? 'सारण' नामक अपनी परम्परा में कोई आचार्य हुये हैं? श्रीरामानन्दीयों का अद्वैत एवं विशिष्टाद्वैत के बीच का सिद्धान्त है? एवं श्रीसम्प्रदाय (श्रीरामानन्द सम्प्रदाय) की अविकल परम्परा क्या है? तथा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

श्रीरामानन्द सम्प्रदाय में वर्णाश्रम सम्बन्धी कोई व्यवस्था नहीं है प्रभृति प्रश्न समूह हैं। जिज्ञासु महानुभावों का प्रश्नों के आधारभूत ग्रन्थ कु॰ श्री अमिताशाह लिखित "काशी मार्तण्ड" नामक जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्यजी का जीवनामृत सूचक पुस्तक है जिसके लेखन सहायकों में प्राक्कथन पृ.सं.१० में 'अहमदाबाद कोसलेन्द्रमठ के पीठाधीश्वर श्रीरामेश्वरानन्दाचार्यजी' का उल्लेख होने से स्वाभाविकतया उक्त विषय हमारा अनुमत है ऐसा पाठकों को अनुभव होना स्वाभाविक है, अतः एतत् विषय में स्पष्टीकरण करना आवश्यक समझकर स्पष्टीकरण किया जा रहा है।

प्रकृत ग्रन्थ लेखिका कु. अमिताशाह उनके सम्मान्य गुरु देव महामण्डलेश्वर श्रीमहन्त स्वामी अभिरामदास त्यागीजी का अपने राम एवं आचार्यपीठ के परिचयात्मक पत्र लेकर मार्गदर्शन उद्देश्य से १९९०–९१ में एकाधिक बार आचार्यपीठ में आई। चर्चा प्रसंग में उनसे प्रस्तुत सभी प्रश्नों का श्रीसम्प्रदाय (श्री रामानन्द सम्प्रदायीय) मर्यादानुकूल समाधान ग्रन्थों के उद्धरणों के साथ कर दिया गया एवं आचार्यपीठ से प्रकाशित जगदाचार्य सम्बन्धी या श्रीसम्प्रदाय रहस्य तत्त्व सम्बन्धी पुस्तकें उन्हें प्रदान की गयी। अनन्तर के कार्यकलापों से आचार्यपीठ यानी मैं अनभिज्ञ रहा। दि. २८।४।९४ को लेखिका द्वारा किसी वाहक के हाथों भेजी प्रकृत पुस्तक प्राप्त किया। अन्य कार्यों में अति व्यस्त रहने के कारण समयाभाव होनेपर श्री आनन्दभाष्यकारजी से सम्बन्धित कृति होने से यत्र तत्र दृष्टिपात किया। जिन जिन अंशों के विषय में पाठकों ने विप्रतिपत्ति सी उद्भावित की उन उन अंशों में हमें भी विप्रतिपत्ति का अनुभव हुआ। अतः लेखिका श्रीशाहजी को पत्र लिखा ७।८/९४ को आई। प्रायः तीनेक घंटातक चर्चा विचारणा हुई। कई एक अंशों के

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विषय में उन्होंने विप्रतिपत्तियों में सहमति व्यक्त की एवं गुजराती संस्करण में संशोधन तथा प्रकृत काशी मार्तण्ड के पुनरावृत्ति में भी संशोधन हो जाने की बात कही तथापि सहायक मार्गदर्शक के रूप में मुझे प्रदर्शित किया गया। अतः धूली प्रक्षालनार्थं जिज्ञासु महानुभावों की जिज्ञासा की प्राथमिक शान्ति हेतु कुछ लिखा जा रहा है।

ऊपर प्रदर्शित विप्रतिपत्तियों से मैं यानी जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्यपीठ अहमदाबाद एवं श्रीसम्प्रदाय (श्रीरामानन्द सम्प्रदायीय) सत्साहित्य सहमत नहीं है। क्योंकि जगदाचार्य श्री के अवतार सूचक वैश्वानर संहिता का

'सोऽवातरज्जगन्मध्ये जतूनां भय संकटात्।
पारं कर्तुं हि धर्मात्मा रामानन्दः स्वयं स्वभूः।'
'रामानन्दः स्वयंरामः प्रादुर्भूतो महीतले'

में 'रामानन्द' इसी नाम से अवतार की सूचना है एवं श्रीरामानन्द सम्प्रदाय का सर्वस्वभूत सिद्धान्ताधार ग्रन्थ श्रीमद्वाल्मिकी संहिता में 'रामानन्देति भविता' इस प्रकार रामानन्द इसी नाम से अवतरित होने की सूचना है। भविष्यपुराण में भी 'रामानन्दस्ततोऽभवत्' 'रामानन्दस्तु बलवान्' इसप्रकार रामानन्द शब्द से ही आचार्य श्री की अवतार सूचना है। आचार्य श्री के सम्पूर्ण कार्य कलापों का सूचक परम प्रमाणभूत अगस्त्य संहिता के १३२ अ. श्लो. १३ 'रामानन्द इति ख्यातो लोकोद्धरण कारणः' इसप्रकार आचार्य श्री के विषय में एक से एक आगम ग्रन्थ 'रामानन्द' इसी नाम का उल्लेख कर रहे हैं तो कैसे एवं किस प्रामाणिक आगम ग्रन्थ के आधार पर जगदाचार्य श्री का पूर्वाश्रम का नाम 'रामदत्त' था माना जाय? जो यह विरक्त दीक्षा काल में नाम बदलने की परिपाटी के अभ्यास से लोगों ने आचार्य श्री के भी पूर्वाश्रम नाम की कल्पना की यह निराधार

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

है । विरक्त दीक्षा काल में नाम बदलने सम्बन्धी चर्चा है वह भगवन्नामातिरिक्त अन्य नाम परक व्यक्तियों के विषय में है न कि भगवन्नाम परक नाम वालों के विषय में एवं भगवदवतारभूत आचार्य या भगवदंश अथवा भगवदायुधावतार भूत आचार्यों के अवतार सम्बन्धी सूचना जिन जिन ग्रन्थों में जिस जिस नाम से उपलब्ध हैं वे उसी उसी नामों से प्रसिद्ध हुये । उनके पूर्वापर नाम सम्बन्धी पृथक् चर्चा कहीं उपलब्ध नहीं है तो आनन्द भाष्यकारजी के पूर्वाश्रम के नाम की निराधार कल्पना क्यों ? प्रकृत विषय का 'श्रीरामानन्दाचार्य जन्मोत्सव कथा' अगस्त्य संहिता के प्रकाश टीका से विशेष अनुसन्धान करें ।

जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्यजी का श्रौत विशिष्टाद्वैत सिद्धान्त है जिसको आचार्य श्री ने 'एवञ्चाखिल श्रुतिस्मृतीतिहास पुराण सामञ्जस्यादुपपत्तिबलाच्च विशिष्टाद्वैतमेवास्य ब्रह्ममीमांसाशास्त्रस्यविषयो नतु केवलाद्वैतम्' (आनन्दभाष्य–१–१–१) प्रस्थान त्रयानन्दभाष्यों का सारभूत श्रीवैष्णवमताब्जभास्कर के प्रथम परिच्छेद श्लो० ६, ७, ८, ९, में प्रकृति जीव एवं ईश्वर का पृथक् पृथक् निरूपण कर तीनों को पृथक्–पृथक् नित्यत्त्व के रूपमें दर्शाया है जिसकी प्रभा–किरण टीकाओं में मैंने सर्व श्रुतिस्मृति आगमादि के द्वारा उन तत्त्वों को श्रीभाष्यकार मतानुरूपस्थिर किया है जो वहीं द्रष्टव्य है । तथैव गीतानन्दभाष्य अध्याय २, श्लो. १२ में बडे ऊहापोह के साथ इतरमत निरसन पूर्वक प्रकृति, जीव एवं ईश्वर तत्त्व को स्थिर किया गया है । अतः माया तत्व मिथ्या नहीं है । वह सर्वेश्वर श्रीरामजी का अपृथक् सिद्ध विशेषण होने से नित्य तत्त्व है । 'प्रकृतिं पुरुषं चैव विध्यनादि उभावपि' यह गीता वचन प्रकृति को अनादि बतलाता है । अनादि पदार्थ मिथ्या कैसे ?

जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्यजी श्रीसम्प्रदाय के प्रवर्तक नहीं प्रवर्धक हैं । इस सम्प्रदाय के प्रवर्तिका जगज्जननी श्रीसीताजी हैं ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

आचार्य श्री तो 'सुशीलः समदृक् शान्तो दान्तः श्रीमान् जगद्गुरुः । पुनः सत्सम्प्रदायस्य वर्तयिता मुनीश्वरः ॥ (अगस्त्य संहिता अ० १३२ श्लो० २४) यह श्लोक स्पष्ट रूप से बतला रहा है कि देश काल आदि के प्रभाव से संकुचित होते हुए श्रीसम्प्रदाय के स्वरूप को पुनः प्रवर्धन करने वाले जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्यजी होंगे अतः जिन महानुभावों को यह भ्रम हो कि आचार्य श्री ही इस सम्प्रदाय के प्रवर्तक हैं उन्हें प्रवर्धक के रूप में अनुसन्धान करना चाहिए । आचार्य श्री के प्रवर्धन से ही आप के ही नाम से श्रीरामानन्दसम्प्रदाय ऐसा नामाभिधान हुआ है, पर सम्प्रदाय का नाम 'श्रीसम्प्रदाय' अनादि काल से था अभी भी है । इस विषय में आचार्यपीठ अहमदाबाद से प्रकाशित विपुल साहित्य का स्वाध्याय करना चाहिए ।

जगदाचार्य श्री संस्कृत भाषा के उपेक्षक नहीं थे । प्रवर्धक एवं विपुल प्रचारक थे । उनके जितने भी प्रबन्ध उपलब्ध हैं वे प्रस्थानत्रयों—ब्रह्मसूत्र गीता एवं एकादशोपनिषदों के आनन्द भाष्य एवं श्रीवैष्णवमताब्जभास्कर श्रीरामार्चन पद्धति परिशिष्ट के साथ ये सब संस्कृत भाषा में ही लिखे गये हैं । कितने ही व्यक्तियों ने या आधुनिक शोधकर्ता डाक्टरोपाधि धारियों ने आचार्य श्री को हिन्दी कविता लेखक के रूप में परिगणित करने का असफल प्रयास किया है पर यह सब निराधार एवं अयुक्त है । उन्हें 'रामानन्द' इतना नाम देखकर उन उन कविताओं के लेखक आचार्य श्री के होने का नाम साम्यतया भ्रम हुआ है । तथ्य एवं सिद्धान्त के ऊपर ध्यान नहीं दिये हैं । उन कविताओं में आचार्य श्री से प्रतिपादित संस्कृत ग्रन्थों के सिद्धान्तों के साथ स्नान सूतक का सम्बन्ध नहीं है । अतः वे आचार्य श्री की कृति नहीं हैं, अन्य किसी 'रामानन्द' नामधारी व्यक्ति के हैं । अभी सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी से स्कन्द पुराण काशी खण्ड का दो टीकाओं के साथ प्रकाशन हुआ है

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

उसके 'प्ररोचना' में 'श्रीरामानन्दाचार्य की संस्कृत टीका' ऐसा लिखा है। ग्रन्थारम्भ में 'रामानन्दी टीका' लिखा है। मंगल श्लोक ४ 'अद्वैताब्जविकासकैकतरणिम्' श्लोक से अपने गुरुदेव 'श्रीरामेन्द्रवनाभिधम्' को यानी श्रीरामेन्द्रवन को नमन किया गया है। तो क्या यह जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्य जी की कृति है? वे अद्वैतवादी थे! कोई या श्रीरामानन्दीय समाज मानने को तैयार हैं? नहीं तो जैसे नाम साम्य होने पर भी गुरु के नाम भिन्न तथा सिद्धान्त भिन्न होने से काशी खण्ड के टीकाकार अन्य हैं आनन्दभाष्यकार अन्य। तथैव हिन्दी कविताओं के रचयिता अन्य हैं आनन्दभाष्यकारजी नहीं। ब्रह्मसूत्र वृत्ति ब्रह्मामृतवर्षिणि में 'रामानन्दकृत' उल्लिखित है तो क्या ये आनन्दभाष्यकार जी हैं? जबकि सिद्धान्त वैषम्य होने से सुतरां अन्य सिद्ध होते हैं अतः नामसाम्य रूप हेतु से हिन्दी कविताकार आनन्दभाष्यकारजी थे, यह कहना हेत्वाभास है। हाँ आचार्य श्री ने प्रसंगोपात्त समयानुरूप तत्काल प्रचलित भारतीय लोक भाषा में सनातन धर्मियों को विधर्मियों के चंगूल से सुरक्षित रखने जो कि 'न वदेत् यावनीं भाषां प्राणं कण्ठ गतैरपि' के प्रवाह से मोढकर सनातन धर्माभिमुखी करने के उद्देश्य से समय-समय पर प्रवचन सदुपदेशादि किये एवं अपने प्रकृष्ट शिष्यों को भी आदेश दिये कि लोक संग्रह सनातन धर्म की सुरक्षा के लिए आवश्यक है अतः तदनुरूप प्रचार-प्रसार एवं उपदेश करो। इसी आचार्य श्री की आज्ञा का परिणाम है कि उत्तर वर्ती आचार्यों द्वारा चार्यों की कृतियाँ संस्कृत हिन्दी एवं नेपाली गुजराती आदि तत्तत् प्रान्तीय भाषाओं में उपलब्ध हैं जिसका विशिष्ट परिपाक एवं उभय भाषा का अमृतास्वादमय परिपाक आनन्दभाष्यकारजी के प्रशिष्य विश्वकवि कविकुल चूडामणि गोस्वामी श्रीतुलसीदासजी की कृतियों में देखने में आता है।

'साण' का उल्लेख श्रीसम्प्रदाय (श्रीरामानन्द सम्प्रदाय) की किसी भी परम्परा में उल्लेख नहीं मिलता है। 'काशी मार्तण्ड' की लेखिका ने प्राक्कथन पृ. ९-१० में मानस तत्त्वान्वेषी डा०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

श्रीरामकुमारदासजी डी. लिट्. का उल्लेख किया है प्रकृत प्रबन्ध के आधार भूत ग्रन्थ के सत्यापन हेतु पर वे ही 'श्रीजानकी चरण चामर स्तोत्रम्' के टीका कार हैं। उस पुस्तक के पृ०सं. १४० में 'टीकाकार की श्री गुरु परम्परा' लिखकर आगे गुरु परम्परा का उल्लेख करते हैं–१–सर्वेश्वर श्रीरामजी महाराज २ जगज्जननी श्रीसीताजी महारानी ३ श्रीहनुमानजी ४ श्रीब्रह्माजी ५ श्रीवशिष्ठजी ६ श्रीपराशरजी ७ श्रीवेदव्यासजी (द्वैपायन कृष्ण) ८ श्रीशुकदेवजी ९–श्रीपुरुषोत्तमाचार्य जी (बोधायन) १०–श्रीगङ्गाधराचार्यजी ११– श्रीसदानन्दाचार्यजी––––प्रभृति। प्रस्तुत काशी मार्तण्ड' के पृ०सं, १३८ में दर्शाये अनुसार 'बोधायन शिष्य सारण ने' 'भाष्यकार सारण ने मन्त्र रहस्य अपने शिष्य पुरुषोत्तमाचार्य को प्रदान किया' का उल्लेख है वो इसका क्रम यों बना बोधायन के शिष्य सारण सारण के शिष्य पुरुषोत्तमाचार्य जब कि श्रीसम्प्रदाय (श्रीरामानन्दसम्प्रदाय) के अनेक सद् ग्रन्थों में निरूपित बोधायन एवं श्रीपुरुषोत्तमाचार्यजी एक हैं भिन्न व्यक्ति नहीं स्वतः जगदाचार्यजी गीतानन्दभाष्य मंगलाचरण श्लोक २ में 'व्यासंजिताक्षं शुकं श्रीमन्तं पुरुषोत्तमं गुणनिधिं गंगाधराधान्' लिखकर अपनी परंपरा स्पष्टकर रहे हैं तो सारण कहां से टपकपड़े। श्रीडाक्टर साहबजीने भी अपनी परम्परा में श्रीपुरुषोत्तमाचार्यजी (बोधायन) लिखकर दोनों को अभिन्न सिद्ध किया है काशी मार्तण्ड प्रबन्ध के मूलाधार प्रबन्ध के सत्यापकजी ही उस मूलाधार के प्रतिकूल अपनी परम्परा लिख रहे हैं तो इन सारणजी की क्या प्रामाणिकता? दार्शनिक सार्वभौम श्रीवासुदेवाचार्यजी ने 'बोधायनाख्यान' प्रबन्ध में दोनों को अभिन्न सिद्ध किया है। अतः श्रीरामानन्द सम्प्रदायानुयायी वर्ग श्रीपुरुषोत्तमाचार्यजी एवं बोधायनजी को एक अभिन्न व्यक्ति मानता है। आचार्यपीठ की यही प्रणाली है जो यहाँ से प्रकाशित अनेक ग्रन्थों के स्वाध्याय से स्पष्ट है। रही बात सिद्धान्त एवं परम्परा की यह भी उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट हो गया कि अद्वैत एवं विशिष्टाद्वैत के बीच का कोई त्रिशंकु सिद्धान्त श्रौत सिद्धान्त आज तक व्यक्त नहीं हुआ है। ऐसे मध्यवर्ती सिद्धान्त के विषय में

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

आचार्यपीठ से कई एक प्रबन्ध 'सिद्धान्त चन्द्रिका समीक्षा' दर्शन समीक्षा परीक्षा प्रभृति अनेक प्रबन्धों के स्वाध्याय से सिद्धान्त विषयक भ्रम को दूर करें। यदि विशिष्टाद्वैत नाम साम्यतया श्रीरामानन्ददर्शन एवं श्रीरामानुजदर्शन में भिन्नता क्या रही? ऐसी विचिकित्सा हो तो श्रीरामानुजाचार्य जी का विशिष्टाद्वैत श्रीकण्ठाचार्यजी का विशिष्टाद्वैत श्रीरामानन्दाचार्यजी का विशिष्टाद्वैत श्री पति आचार्यजी का विशिष्टाद्वैत तो क्या ये सब एक ही हैं? ध्यान दें उपास्य निरूपण के भेद से वाद-सिद्धान्त भेद होता है श्रीरामानुजाचार्यजी श्रीलक्ष्मीनारायण परक विशिष्टाद्वैत का प्रतिपादन करते हैं। श्रीकण्ठाचार्यजी शक्ति शिवपरक विशिष्टाद्वैत का प्रतिपादन करते हैं। श्रीरामानन्दाचार्यजी श्रीसीताराम परक विशिष्टाद्वैत का प्रतिपादन करते हैं। श्रीपति आचार्यजी वीरशैव परक विशिष्टाद्वैत का प्रतिपादन करते हैं। अतः चारों आचार्यों का 'विशिष्टाद्वैत' वाद शब्द साम्य होने पर भी प्रतिपाद्य के भेद होने से दर्शन में पृथकता सुतरां सिद्ध है। इसी तत्व को बोध कराने के लिए जगद्गुरु श्रीकेवलरामाचार्यजी ने प्रबोध रत्नमाला में निर्देश किया है 'रामानुजमताद भिन्नं श्रीरामानन्द सन्मतम्। मन्त्रोपास्येष्ट देवस्य भेदादेवेति निश्चितम्' अतः मन्त्रों एवं उपास्य देवों के भेद होने से सभी आचार्यों के सिद्धान्त भेद सुतरां सिद्ध है तथापि श्रीरामानुज दर्शन से श्रीपुरुषोत्तमाचार्य बोधायनानुमत श्रीरामानन्द दर्शन को 'श्रौत' युक्तियुतं मतं खलु विशिष्टाद्वैतकं यस्य सः' (ज.गु. श्रीसदानन्दाचार्य प्रणीत बोधायन पञ्चकम् ४)। 'विशिष्टाद्वैत सिद्धान्तो बोधायनानुमोदितः। वैदिको वैदिके मान्यः साधितः श्रुतियुक्तिभिः (श्रौतप्रमेयचन्द्रिका ज.गु. श्री श्रियानन्दाचार्यकृत ६।४५) एवं स्वतः आचार्य श्री आनन्दभाष्य कारजी के 'एवञ्चाखिल श्रुतिस्मृती---'आ. भा. १.१.१.' से विदित है कि श्रीरामानन्दीय विशिष्टाद्वैत दर्शन श्रौत विशिष्टाद्वैत दर्शन है। अतः यह वाद अन्य वादों से सुतरां पृथक् सिद्ध है।

परम्परा—श्रीरामानन्द सम्प्रदाय वैदिक सम्प्रदाय है। उसकी परम्परा सर्वेश्वर श्रीरामचन्द्रजी के जगत् जननी श्रीसीताजी को

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्रथमोपदेश से एवं जगत् जननी श्रीसीताजी के द्वारा आगे प्रवर्तन होने से श्रीसम्प्रदाय के नाम से विख्यात है जिसका उल्लेख "इममेवमनुं पूर्वं साकेत पतिर्मामवोचत । अहं हनुमते मम प्रियाय प्रियतराय । स वेद वेदिने ब्रह्मणे । स वशिष्ठाय । स पराशराय । स व्यासाय । स शुकाय" (मैथिली महोपनिषत्) । श्रीराम तापनीयोपनिषत के उत्तरभाग में 'त्वत्तो वा ब्रह्मणो वाऽपि ये लभन्ते षडक्षरम । जीवन्तो मन्त्र सिद्धास्युरन्ते माम्प्राप्नुवन्ति ते" । श्रीरामजी के इस उक्ति से श्रीराममन्त्र के के आगे प्रवर्धक श्रीब्रह्माजी एवं श्रीशङ्करजी हुए । अपनी यह धारा जिसमें जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्यजी का अवतार हुआ । ब्रह्माजी सम्बन्धी है । जिसका उल्लेख आचार्य श्री ने "श्रीरामं जनकात्मजामनिलजं वेधो वशिष्ठावृषी योगीशञ्च पराशरं श्रुतिविदं व्यासं जिताक्षं शुकम् । श्रीमन्तं पुरुषोत्तमं गुणनिधिं गङ्गाधराद्यान् यतिन् श्रीमद्राघवदेशिकञ्च वादं स्वाचार्य वर्यं श्रये ।।" (गीतानन्दभाष्य मं. श्लो०२) इस प्रकार किया है इससे यह अवगत होता है कि इस सम्प्रदाय के आदि पुरुष आराध्य देव सर्वेश्वर श्रीरामजी हैं । उनसे अभिन्नरूपा पुरुषाकार स्वरूपिणा श्रीसीताजी श्रीहनुमानजी, श्रीब्रह्माजी, श्रीवशिष्ठजी, श्रीपराशरजी, श्रीव्यासजी, श्रीशुकदेवजी, श्रीपुरुषोत्तमाचार्यजी (बोधायन) श्रीगङ्गाधराचार्यजी, श्लोकस्थ आदि शब्द से श्रीसदानन्दाचार्यजी श्रीरामेश्वरानन्दाचार्यजी, श्रीद्वारानन्दाचार्यजी, श्रीदेवानन्दाचार्यजी श्रीश्यामानन्दाचार्यजी, श्रीश्रुतानन्दाचार्यजी, श्रीचिदानन्दाचार्यजी, श्रीपूर्णानन्दाचार्यजी, श्रीश्रियानन्दाचार्यजी, श्रीहर्यानन्दाचार्यजी, का ग्रहण है । अपने गुरुदेव श्रीराघवानन्दाचार्यजी का तो श्लोक में उल्लेख है ही । अतः कुल संख्या २१ हुई । स्वतः श्रीभाष्यकार श्री२२ वों आचार्य हैं । अनन्तर द्वाराचार्यों उपाचार्यों प्रभृतिके भिन्न भिन्न परम्परायें चली जो आजतक भारत वर्ष में ही नहीं विश्व के कई भागों में व्याप्त हैं । जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्य पीठ अहमदाबाद एवं विश्रामद्वारका की परम्परा ज.गु. श्रीभावानन्दाचार्यजी से प्रवाहित है । इनके बाद ज.गु. श्रीअनुभवानन्दाचार्यजी, ज.गु. श्रीविरजा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

नन्दाचार्यजी, ज.गु. श्रीआशारामाचार्यजी, ज.गु. श्रीरामभद्राचार्य जी, ज.गु. श्रीरघुनाथाचार्यजी, ज.गु. श्रीविश्वम्भराचार्यजी, ज.गु. श्रीराघवेन्द्राचार्यजी, ज.गु. श्रीवैदेहीवल्लभाचार्यजी, ज.गु. श्रीकोसलेन्द्राचार्यजी, ज.गु. श्रीरामकिशोराचार्यजी, ज.गु. श्री जानकीनिवासाचार्यजी, ज.गु. श्रीसाकेतनिवासाचार्यजी, ज.गु. श्रीजानकीजीवनाचार्यजी, ज.गु. श्रीभरताग्रजाचार्यजी, ज.गु.श्री हनुमदाचार्यजी, महामहोपाध्याय जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्यजी श्री रघुवराचार्यजी, जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्य श्रीरामप्रपन्नाचार्यजी, आनन्दभाष्यसिंहासनासीन जगद्गुरुश्रीरामानन्दाचार्य श्रीरामेश्वरानन्दाचार्यजी इन सब आचार्यों के चरित्र का पूर्ण ज्ञान 'जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्य पीठ स्मारक स्मृति ग्रन्थ' से करें।

वर्णाश्रमव्यवस्था–वर्णाश्रम व्यवस्था का श्रीरामानन्द सम्प्रदाय पूर्ण पक्षपाती है। क्योंकि सम्प्रदाय वैदिक है। भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति वेदाधारित हैं। वर्णाश्रम मूलक ही वेदतत्व है। इसीलिए श्रीआनन्दभाष्यकारजी ने अपने भाष्यों में बहुत से स्थानों पर वर्णाश्रम व्यवस्था का उल्लेख कर उसे अवश्य पालनीय बताया है। उसके विना तत्वज्ञान की प्राप्ती नहीं होगी। ज्ञान कर्म समुचित भक्ति के विना सायुज्य मुक्ति नहीं। जो मानव मात्रका चरम लक्ष्य है। 'एवं वर्णाश्रमोचित नित्यनैमित्तिक कर्माङ्गकम' (ई.आ.भा.१५), 'वर्णाश्रमोचित नित्य नैमित्तिक कर्म रूपांसह (११) "वर्णाश्रमाचार सेवन जनित पुण्यक्षालित कषायस्य (ब्र.सू.आ.भा. १.१,१) "वर्णाश्रम धर्मलोपे कल्मषमानसस्य विद्योत्पत्तिरेव न स्यात् अतोविद्यार्थत्वेन तदनुष्ठानमावश्यकम" (ब्र.सू.आ. भा.४,१,१६) 'यज्ञोदानंतपश्चैव वर्णाश्रमोचितानियज्ञादीनिकर्माणि' (गी.आ.भा. १८,५) "ब्रह्मविद्योपचायकस्य वर्णाश्रमनियतस्य नित्य-कर्मणः" (गी.आ.भा. १८,७) नियतं वर्णाश्रमाचारतया विहितय सङ्गरहितम् (गी.आ.भा.१८,२३) 'वर्णाश्रम धर्मतयावश्यानुष्ठेयम्' (गी.आ.भा.१८,६३) प्रभृति वाक्यांशों से विदित है कि जगदाचार्यश्री वर्णाश्रम धर्मों के प्रवल समर्थक थे, न कि मर्दक। आप श्री से ही ज.गु. श्रीसुरसुरानन्दाचार्यजी को निमित्त बनाकर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मानव कल्याण हेतु उपदिष्ट श्रीरामपूजापद्धति के साथ का श्री वैष्णवाचारपरक श्रीवैष्णवमताब्जभास्कर दुनियां में किम से छुपा है ? ऐसे जगदाचार्य श्री को वर्णाश्रमाचार विरुद्ध के रूप में उल्लेख करना अपनी ही आचारविहीनता का द्योतक है । थालीपुलाक न्याय से दिग्दर्शन कराया गया है । इसी से श्रीरामानन्द सम्प्रदाय या जगदाचार्य सम्बन्धी स्वरूप को समझ लेना चाहिये एवं अन्य विरुद्धांशतया प्रतीयमानों को भी पूर्वोक्त परिप्रेक्ष्यों से समहित कर लेना चाहिये । विशेष जिज्ञासुओं को आचार्यपीठसे प्रकाशित विपुल सत्साहित्य एवं आचार्यपीठ पत्रिका का स्वाध्याय करना चाहिये ।

☫ पञ्चम पुण्य स्मृति ☫

जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्य पीठ अहमदाबाद में जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्य श्रीरामप्रपन्नाचार्यजी योगीन्द्र की पुण्य स्मृति के उपलक्ष्य में भागवत कथा का भव्य आयोजन था इसी शुभ अवसर पर विगत वर्षों की भांति ता :–२–९–९४ शुक्रवार को वैष्णवाराधन का भी आयोजन हुआ ।

जिसमें जगप्रसिद्ध जगदीश मन्दिर के वर्तमान महामण्डलेश्वर श्री महन्त स्वामी रामेश्वरदासजी महाराज, श्रीरामानन्द विरक्त वैष्णव मण्डल के प्रधान अध्यक्ष श्री महन्त महामण्डलेश्वर स्वामी शिवरामदासजी महाराज, महामन्त्री श्री मं. म. रामावतारदासजी (रत्न) श्री महन्त सियारामदासजी महाराज, दिगम्बर तख्ताधीश श्री महन्त जयरामदासजी महाराज श्रीरघुनाथदासजी महाराज श्रीभगवतदासजी महाराज झाडिया, श्रीपरमेश्वरदासजी महाराज प्रभृति सैकडों सन्त महन्त मण्डलेश्वरों के अतिरिक्त आचार्यपीठ के हजारों सेवकों ने भाग लिया । श्रीसुन्दररामाचार्य जी की व्यवस्था सराहनीय थी ।

ले० मं· रामसेवकदास आर· (रत्न)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

꣡ श्रीरामानन्दसम्प्रदाय के उत्कर्ष की दिशा में ꣡

ज्ञातव्य है कि अहमदाबाद स्थित श्रीजगदीश मन्दिर गौ सन्त, मानव सेवा के कारण गुजरात ही नहीं परन्तु सारे भारत में अपना योग्य स्थान बनाए हुए हैं।

श्री महन्त महामण्डलेश्वर स्वामी श्रीरामहर्षदासजी महाराज की स्मृति में हुए भव्य विशाल वैष्णवाराधन के पूर्व पत्रकार परिषद् में यहाँ के कुशल व्यवस्थापकों ने घोषणा की थी कि गौ सन्त मानव, सेवा के साथ-साथ विश्व की श्रेष्ठतम मानवतावादी इस स्थान से सम्बन्धित श्रीरामानन्द संप्रदाय के प्रचार प्रसार में भी विशेष ध्यान दिया जायगा।

अब इस दिशा में प्रयत्न प्रारंभ हो गया है। इसके प्रथम प्रयास में स्थानीय श्री महन्त महामण्डलेश्वर स्वामी श्रीरामेश्वर दासजी महाराज ने श्रीरामानन्द वेदान्त साहित्य के प्रचार में सहायक रूप श्रीरामानन्द वेदान्त के स्थाई कोष में पाँच हजार एक (५००१) रुपया देकर पहल की है।

श्रीरामानन्द विरक्त वैष्णव मण्डल तो पहले ही इस कार्य को विशाल रूप प्रदान करने के लिये कृत संकल्प है। अभी जगदीश मन्दिर के नवीन श्री महन्तजी, विवेक सम्पन्न साक्षर ट्रष्टी श्रीमहेन्द्र झा, व्यवस्थापक श्रीपरमेश्वरदासजी, आदि का श्रीरामानन्द विरक्त वैष्णव मण्डल के प्रधान अध्यक्ष श्री महन्त महामण्डलेश्वर स्वामी शिवरामदासजी महाराज महामन्त्री श्रीमहामण्डलेश्वर स्वामी श्रीरामावतारदासजी (रत्न) के साथ एक बृहद् विचार गोष्ठी का आयोजन हुआ।

जिसमें प्रान्तीय अथवा राष्ट्रीय स्तर पर आनन्दभाष्यकार जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्य जयन्ती मनाना श्रीरामानन्द वेदान्त के विद्यार्थियों, जिज्ञासुओं, शोध प्रबन्धलेखकों आदि को किस प्रकार अधिक से अधिक सहायता प्रदान की जा सके आदि विषयों पर विषद् चर्चाएं हुई।

श्रीरामानन्दसम्प्रदाय का उत्कर्ष चाहने वालों सन्त महन्तों से यह अनुरोध किया गया कि इस दिशा में अपने शुभ सुझाव जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्य पीठ पालडी अहमदाबाद-३८०००७

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

दूरभास ४११००१ सरयु तीर्थ मन्दिर प्रेम दरवाजा अहमदाबाद १ दूरभाम ३८५६८६ वेदान्तपीठ सारंगपुर पुल के नीचे अहमदाबाद २ दूरभास ३८६६८६, ३४०६६५ के पते पर भेज सकते हैं। अपनी प्रतिष्ठानुरूप सहायता भी इन्ही स्थानों पर भेज कर रसीद प्राप्त कर सकते हैं। अस्तु

ले. मं. मं. रामावतारदासजी (रत्न) वेदान्तपीठ सारंगपुर पुलनीचे अहमदाबाद–गुजरात ३८०००२

श्रीरामानन्द विरक्त वैष्णव मण्डल का वैष्णवाराधन

अहमदाबाद सैजपुर अन्तर्गत धनुर्धारी सोसायटी में पीपा जी गुरु श्रीरामानन्द आश्रम के साकेत वासी महन्त श्रीगोकुल दासजी महाराज की पुण्य स्मृति में आपके सुयोग्य शिष्यों तथा सेवकों के सद् प्रयत्न से ता:-३-९-९४ रविवार को श्रीरामानन्द विरक्त वैष्णव मण्डल के भव्यतम श्रीवैष्णवाराधन का आयोजन रखा गया,

इसमें सर्व श्री जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्य श्री स्वामी रामेश्वरानन्दाचार्यजी महाराज के प्रतिनिधि एवं विश्व विख्यात श्री जगदीश मन्दिर के श्रीमहन्त महामण्डलेश्वर स्वामी श्रीरामेश्वरदास जी महाराज श्रीरामानन्द विरक्त वैष्णव मण्डल के प्रधान अध्यक्ष श्री महन्त महामण्डलेश्वर स्वामी श्रीशिवरामदासजी महाराज, महामन्त्री श्रीमहामण्डलेश्वर स्वामी श्रीरामावतारदासजी (रत्न) श्री मं. म. मं. सियारामदासजी महाराज तथा मण्डल के करीब सभी महन्त महानुभाव तथा सेकडों सन्तों और हजारों सेवकों ने भाग लिया।

ज्ञातव्य है, श्रीगोकुलदासजी महाराज जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्यजी महाराज के शिष्य श्रीपीपाजी के द्वारे के सन्निष्ठ सन्त तथा खाखी अखाडे के सम्माननीय नागा अतीत थे, अभी कुछ समय पूर्व ही आपने श्रीरामानन्द विरक्त वैष्णव मण्डल के भव्यतम समाराधन का आयोजन किया था। उस प्रसंग में आनन्दभाष्यसिंहासनासीन, जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्यजी महाराज का पदार्पण हुआ था उनके साकेत वास के समय भी श्रीरामानन्द विरक्त वैष्णव मण्डल के अध्यक्ष महामन्त्री तथा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सन्त महन्त ही आपकी अन्तिम यात्रा तथा श्रद्धाञ्जली सभा के समय उपस्थित थे, साकेतवास के ठीक ८ दिन पूर्व ही आपने अध्यक्ष एवं मन्त्रीजी को बुलवा कर मण्डल के प्रति अपनी हार्दिक निष्ठा व्यक्त की थी।

इन्हीं सब कारणों को देखते हुए आपके शिष्यों एवं खास कर सेवकों ने बार-बार आग्रह कर श्रीरामानन्द विरक्त वैष्णव मण्डल को बुलवा कर मण्डल के नियमानुसार वस्त्र भेट, लाणी से सभी का स्वागत सत्कार किया, तत् पश्चात ही विशाल सेवक वर्ग ने अपने पूज्य गुरुदेव के साकेतवासोत्सव निमित्तक प्रसाद ग्रहण किया,

भगवत निष्ठा एवं गुरु निष्ठा का इतना अनुपम उदाहरण देकर आपके शिष्यों एवं सेवकों ने सन्त समाज को भी यह बताया कि निष्ठा तिलक, अखाडा द्वारा या परिवार की मौहताज नहीं है, तथा श्रेष्ठ समाज या संगठन वही है, जो स्वार्थ समय में ही नहीं आपत्ती के समय भी साथ खडा रहे अस्तु

ले० श्रीकमलेशदासजी शास्त्री

कर्णावती नगर में श्रद्धा सम्पन्न श्राद्ध

श्री रामानन्द सम्प्रदाय के गढ समान गुजरात के प्रमुख ओद्योगिक नगर कर्णावती नगर में प्रतिवर्ष की भाँती इस वर्ष भी श्रद्धा के साथ पूर्वाचार्यों-पूर्वजों हेतु श्रद्धाञ्जली सम्पन्न हुई

श्रीरामानन्द विरक्त वैष्णव मंडल के सन्त महन्तों के स्व स्थान या जहाँ मण्डल के सदस्यों को आमंत्रिअ किया गया उनमें सर्व श्री २३।९।९४ को दिगम्बर तडाधीश श्री मं. जयराम दासजी महाराज ने पूर्व श्री मं. नारायणदासजी महाराज के निमित्त वैष्णवाराधन का विशाल आयोजन किया इसका कुशल संचालन मं. श्री मोहनदासजी के द्वारा सम्पन्न हुआ २६।९।९४ को वीरमगाम स्थित श्री राममहल में श्री जगदीशदासजी महाराज की पुण्यतिथि पर आपके सुयोग्य शिष्य श्री मं. रामकुमारदासजी महाराज ने विशाल वैष्णवाराधन किया- २७-९-९४ को धनसुरा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

श्रीरामजी मंदिर के महन्त रामायणी श्रीअवधविहारीदासजी महाराज ने श्री मं. भगवानदासजी महाराज की तिथि मनाई । २८।९।९४ को विश्व विख्यात गौ सन्त सेवी संस्थान जगदीश मन्दिर में श्रीमहंत सेवादासजी महाराज की पुण्य तिथि पर श्रीमहन्त रामेश्वरदासजी महाराजने भव्य वैष्णवाराधन का आयोजन किया ।

२९–९–९४ को तीन देवडा मंदिर वेदान्त पीठ में पंडित सम्राट् स्वामी श्री वैष्णवाचार्यजी महाराज की तिथि पर भव्य वैष्णवाराधन का आयोजन श्रद्धा के साथ महामण्डलेश्वर स्वामी श्रीरामवतारदासजी (रत्न) द्वारा सम्पन्न हुआ ।

३०–९–९४ को नर्सिंह मंदिर–भंडारी पोळ में मं. श्री पुरषोत्तमदासजी महाराज की पुण्य तिथि स्थानीय कर्मनिष्ठ मं० श्री अवधविहारीदासजी महाराज द्वारा मनाई गई ।

तारीख २–१० ९४ को विख्यात सन्त सेवी संस्थान श्री सरयुतीर्थ रामजी मंदिर में साकेतवासी श्री मं. रामशरणदासजी महाराज की पुण्य तिथि पर सुभव्य वैष्णवाराधन का आयोजन श्री मं. महामण्डलेश्वर स्वामी श्रीशिवरामदासजी महाराज द्वारा सम्पन्न हुआ ।

तारीख ५–१०–९४ को वाडीगाम स्थित श्रीनीलकंठ महादेव में श्री मं नारायणदासजी महाराज का श्राद्ध श्री मं. प्रेमदासजी महाराज द्वारा परिपूर्ण हुआ ।

इन सभी आयोजनों में अधिकांश या संपूर्ण श्रीरामानन्द विरक्त वैष्णवमंडल के सन्त महन्त महामण्डलेश्वर आमंत्रित किए गये ।

जैसा कि ज्ञात ही है कि श्राद्ध पूर्वाचार्य संत महंत या व्यक्ति से ही सम्बन्धित होता है । इसी कारण इस वर्ष श्री रामानन्द विरक्त वैष्णव मंडल ने इस वैष्णवाराधन के साथ कई स्थानों पर उन विषयों पर गंभीरतासे विचार किया साथ जिनसे हमारे पूर्वाचार्यो द्वारा दी गई विपुल साहित्य संपदा हमारी अक्षुण्ण परम्परा पर कोई आँच न आने पाये, इन सभी तत्थ्यों को आने वाले अंकों में प्रकाशित किया जाएगा ।

ले. रामबालकदास गुरु श्रीरामावतारदास (रत्न)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu